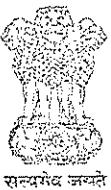
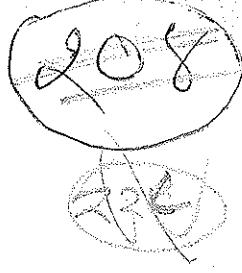


२०६



राष्ट्रपद जयते
महाराष्ट्र शासन
विधि व न्याय विभाग



सन १९९७ चा महाराष्ट्र अधिनियम, क्रमांक १५.

महाराष्ट्र शासनी मंडळ अधिनियम, १९९६ ✓
(दिनांक १० जुलै २००६ पर्यंत सुधारलेला)

Maharashtra Act No. XV of 1997

The Maharashtra Maritime Board Act, 1996

(As modified upto the 10th July 2006).

व्यवस्थापक, शासकीय मुद्रणालय, औरंगाबाद यांनी मुद्रित केले व संचालक, शासकीय मुद्रण व लेखनसामग्री, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई ४०० ००४ यांनी प्रकाशित केले.

२००६

[किंमत : १२.००]

महाराष्ट्र सागरी मंडळ अधिनियम, १९९६

अनुक्रमणिका

उद्देशिका

कलमे

प्रकरण एक
प्रारंभिकपृष्ठे
(i) ते (vi)

| | | |
|----|--|---|
| १. | संक्षिप्त नाव, व्याप्ती, प्रारंभ व प्रयुक्ती | २ |
| २. | व्याख्या | २ |

प्रकरण दोन

महाराष्ट्र सागरी मंडळाची स्थापना

| | | |
|-----|--|---|
| ३. | महाराष्ट्र सागरी मंडळाची स्थापना | ४ |
| ४. | सदस्यांची अपात्रता | ५ |
| ५. | सदस्यांचा पदावधी | ५ |
| ६. | मंडळाच्या सदस्यांना पदावरुन दूर करणे | ६ |
| ७. | नियुक्तीसाठी पात्रता | ६ |
| ८. | रिक्त पदे भरणे | ६ |
| ९. | अध्यक्षाची अनुपस्थिती | ६ |
| १०. | मंडळाच्या बैठकी | ६ |
| ११. | मंडळाच्या समित्या | ७ |
| १२. | सदस्याना देय असलेली फी व भत्ते | ७ |
| १३. | मंडळाच्या किंवा समितीच्या सदस्याने विशिष्ट प्रकरणांमध्ये मत न देणे | ७ |
| १४. | नियुक्तीमधील दोषांमुळे कृती इत्यादी विधिअग्राह्य तरणे. | ७ |
| १५. | आधिकारांचे प्रत्यायोजन | ८ |
| १६. | अध्यक्षांची कर्तव्ये इत्यादी. | ८ |

प्रकरण तीन

मंडळाचा कर्मचारीवर्ग

| | | |
|-----|---|---|
| १७. | मंडळाचा मुख्य कार्यकारी अधिकारी | ८ |
| १८. | मंडळाचा वित्तीय नियंत्रक-नि-मुख्य लेखा अधिकारी, अधिकारी आणि कर्मचारी. | ८ |
| १९. | मंडळाच्या कर्मचाऱ्याना रजा इत्यादी देण्याचे अधिकार. | ८ |

अनुक्रमांकन-चालू

उद्देशिका
कलमे

पृष्ठे

प्रकरण छार

मालमत्ता व संविदा

| | | |
|-----|--|----|
| २०. | राज्य शासनाच्या मत्ता आणि दायित्वे यांचे मंडळाकडे हस्तांतरण | १ |
| २१. | विद्यमान पट्ट्या इत्यादींमध्ये मंडळाकडून बदल करण्यात येईतोपर्यंत त्या चालू राहणे | १० |
| २२. | भांडवल व व्याज यांची परतफेड | १० |
| २३. | कराराद्वारे जमिनीचे संपादन करणे शक्य नसेल त्या बाबतीतील कार्यपद्धती | १० |
| २४. | मंडळाकडून करण्यात यावयाच्या संदिदा | १० |

प्रकरण पाच

मंडळाकडून लहान बंदरांच्या ठिकाणी सुरविण्यात यावयाची बांधकामे व सेवा

| | | |
|-----|---|----|
| २५. | बांधकामे करण्याचा व उपकरणांची तरतुद करण्याचा मंडळाचा अधिकार | ११ |
| २६. | विवक्षित कामे हाती घेण्याचा मंडळाचा अधिकार | १२ |
| २७. | सागरी वाहतुकीच्या जहाजांना गोद्या, मालधक्के इत्यादींचा वापर करण्याचा आदेश देण्याचा मंडळाचा अधिकार. | १२ |
| २८. | जागा पुरेशी असेल तर वाहतुकीच्या सर्व जहाजांनी गोद्या, माल, धक्के इत्यादींचा वापर करणे सक्तीचे असणे. | १३ |
| २९. | जहाजांना गोद्या, माल, धक्के इत्यादींच्या लगत न येण्याचा किंवा त्यांना तेथून हलवण्याचा आदेश देण्याचा अधिकार. | १३ |
| ३०. | माल, धक्के इत्यादींचा वापर करण्याच्या इंधनातून जहाजांना सूट देण्याचा शासनाचा अधिकार. | १३ |
| ३१. | सागरी वाहतुकीच्या जहाजांव्यतिरिदत इतर जहाजांनी गोद्या, धक्के इत्यादींचा वापर करणे केव्हा सक्तीचे असेल ते मंडळाने घोषित करणे. | १३ |
| ३२. | मंडळाने किंवा अन्य व्यक्तीने पार पाऊद्याच्या सेवा | १४ |
| ३३. | माल गहाळ होणे इत्यादी बदलाची मंडळाची जबाबदारी | १५ |
| ३४. | सीमाशुल्क अधिनियम, १९६२ अन्वये न. ८, धक्का इत्यादी ठिकाणी नियुक्त करण्यात आलेल्या सीमाशुल्क अधिकाऱ्यांसाठी जागेची तरतुद करणे. | १५ |
| ३५. | बंदराच्या हड्डीत खाजगी मालधक्का इत्यादी उभारण्यास परवानगी देण्याचे अधिकार शर्तीच्या अधीन असणे. | १६ |
| ३६. | ज्या ठिकाणी खाजगी धक्का इत्यादीचा वापर बेकायदेशीर ठरला आहे अशा विवक्षित प्रकरणी द्यावयाची नुकसान भरपाई. | १६ |

अनुकूलभिका-चालू

उद्देशिका
कलमे

पृष्ठे

प्रकरण संख्या

बंदरांच्या ठिकाणी पडी लावणे व वसूल करणे

| | | |
|-----|--|----|
| ३७. | मंडळाने किंवा इतर व्यक्तीनी पार पाडलेल्या सेवाबद्दलच्या पट्टींचे प्रमाण | १७ |
| ३८. | मंडळाच्या मालकीच्या मालमत्तेच्या वापरसाठी पट्टींचे प्रमाण आणि शर्तीचे विवरणपत्र | १८ |
| ३९. | संयुक्त सेवासाठी एकत्रिकृत पट्टी | १८ |
| ४०. | विवक्षित प्रकरणांमध्ये सवलतीची पट्टी बसवण्याचा अधिकार | १८ |
| ४१. | पट्टी व शर्ती यांना राज्य शासनाची पुरेंजुरी | १९ |
| ४२. | पट्टीमध्ये फेरबदल करण्यास किंवा री रद्द करण्यास फर्माविण्याचा राज्य शासनाचा अधिकार. | १९ |
| ४३. | पट्टी किंवा आकार यांची सूट | १९ |
| ४४. | जादा आकाराचा परतावा | १९ |
| ४५. | कमी बसवलेल्या किंवा चुकीने परतावा दिलेल्या आकाराच्या ग्रदानाबाबत नोटीस | १९ |
| ४६. | मालावरील पट्टी भरण्याची मुदत | २० |
| ४७. | पट्टीसाठी मंडळाचा धारणाधिकार | २० |
| ४८. | वाहणावळ व इतर आकार यांसाठी जहाज मालकाचा धारणाधिकार | २० |
| ४९. | पट्टी किंवा भाडे भरण्यात आले नाही किंवा धारणाधिकाराची रक्कम चुकती करण्यात आली नाही तर दोन महिन्यांतर मालाची विक्री करणे. | २१ |
| ५०. | बंदराच्या जागेमधून ठराविक भर्यादेच्या आस हलवण्यात न आलेल्या मालाची विलेवाट. | २१ |
| ५१. | विक्रीच्या उत्पत्राचे उपयोजन | २२ |
| ५२. | जहाज अटकावून ठेवून पट्टी व खर्च वसूल करणे | २३ |
| ५३. | पट्टी चुकती करण्यात आल्यावर, नुकसानी वसूल करण्यात आल्यावर, बंदर निकास पत्र देणे. | २३ |

प्रकरण सात

मंडळाचा कर्ज घेण्याचा अधिकार

| | | |
|-----|--|----|
| ५४. | कर्ज उभारण्याचा अधिकार | २३ |
| ५५. | मंडळाचे कर्जरोखे | २३ |
| ५६. | संयुक्तपणे किंवा पृथकपणे कर्जरोखांचा अदाता होण्याचा हक्क | २४ |
| ५७. | दोन किंवा अधिक संयुक्त धारकांचा नापती देण्याचा अधिकार | २४ |

अनुक्रमणिका-चालू

| उद्देशिका | | पृष्ठे |
|-----------|---|--------|
| कलमे | | |
| ५८. | खुद कर्जरोख्यावरच पृष्ठांकन करणे | २४ |
| ५९. | कर्जरोख्यावरील पृष्ठांकनामुळे त्याच्या रकमेबाबत दायित्व न येणे | २४ |
| ६०. | कर्जरोख्यावर स्वाक्षरीचा ठसा | २४ |
| ६१. | कर्जरोख्याची दुसरी प्रत देणे | २५ |
| ६२. | कर्जरोख्याचे रूपांतरण | २५ |
| ६३. | विशिष्ट प्रकरणामध्ये मुक्त होण्याबाबत | २५ |
| ६४. | मंडळाने घेतलेल्या कर्जाच्या बाबतीतील प्रतिभूती | २६ |
| ६५. | मंडळाला दिलेल्या कर्जाच्या संबंधातील शासनाच्या उपाययोजना | २६ |
| ६६. | नियत दिनांकापूर्वी कर्जाची परतफेड करण्याचे अधिकार | २६ |
| ६७. | कर्जनिवारण निधी स्थापन करणे | २६ |
| ६८. | कर्जनिवारण निधीची गुंतवणूक व वापर | २७ |
| ६९. | कर्जनिवारण निधीची वार्षिक तपासणी | २७ |
| ७०. | अल्पमुदती देयकांवर कर्जे उभारण्याचे मंडळाचे अधिकार | २७ |
| ७१. | तात्पुरती कर्जे किंवा अधिकर्ष काढण्यासंबंधीचे मंडळाचे अधिकार | २७ |
| ७२. | इन्टरनॅशनल बँक फॉर रिकन्स्ट्रक्शन अँण्ड डेव्हलपमेंट यांच्याकडून किंवा इतर विदेशी परिसंस्थाकडून पैसे कर्जाऊ घेण्याचा मंडळाचा अधिकार. | २८ |

प्रकरण आठ

महसूल व खर्च

| | | |
|-----|--|----|
| ७३. | मंडळाचा सर्वसाधारण निधी | २८ |
| ७४. | सर्वसाधारण निधीमधील पैशाचा वापर | २८ |
| ७५. | सर्वसाधारण निधीमधील पैसा विनिर्दिष्ट लेख्यामध्ये हस्तांतरित करणे आणि त्या उलट करण्याचा अधिकार. | २९ |
| ७६. | महसूल निधी रस्थापन करणे | २९ |
| ७७. | सागरी मंडळाचे रोखे मंडळाच्या स्वतःच्या गुंतवणुकीसाठी रोखून ठेवण्याचा अधिकार. | ३० |
| ७८. | भाऊवलातून खर्च भागविण्यासाठी शासनाची पूर्वमंजुरी घेणे | ३० |
| ७९. | मंडळाची किंवा शासनाची मंजुरी ज्यासाठी आवश्यक आहे असी कामे | ३० |
| ८०. | कामाच्या अंमलबजावणी संबंधातील मुख्य कार्यकारी अधिकाऱ्याचा अधिकार | ३० |
| ८१. | दावे आपसात मिटविण्याचा किंवा त्यात तडजोड घडविण्याचा मंडळाचा अधिकार. | ३१ |

अनुक्रमणिका-चालू

| | | |
|-----------|---|--------|
| उद्देशिका | | |
| कलमे | | पृष्ठे |
| ८२. | हानीची रक्कम निर्लेखित करणे | ३१ |
| ८३. | संरक्षक म्हणून मंडळाचे अधिकार | ३१ |
| ८४. | अर्थसंकल्पीय अंदाज | ३१ |
| ८५. | पुरवणी अंदाजपत्रक तयार करणे | ३२ |
| ८६. | अंदाजपत्रकातील रकमांचे पुनर्विनियोजन | ३२ |
| ८७. | आणीबाणीच्या परिस्थितीचा अपवाद वगळता अंदाजपत्रकाबरहुकूम खर्च करणे. | ३२ |
| ८८. | लेखे व लेखापरीक्षा | ३२ |
| ८९. | लेखापरीक्षा अहवाल प्रसिद्ध करणे | ३२ |
| ९०. | लेखापरीक्षा अहवालात दाखवून दिलेले दोष व नियमबाबू बाबी मंडळाने दुरुस्त करणे. | ३३ |
| ९१. | मंडळ व लेखापरीक्षक यांच्यातील मतभेदांबाबत शासनाने निर्णय देणे. | ३३ |

**प्रकरण नंज
राज्य शासनाचे पर्यवेक्षण व नियंत्रण**

| | | |
|-----|--|----|
| ९२. | प्रशासनिक अहवाल | ३३ |
| ९३. | उत्पन्न व खर्चाची विवरणपत्रे राज्य शासनाला सादर करणे | ३३ |
| ९४. | मंडळ निष्प्रभावित करण्याचा राज्य शासनाचा अधिकार | ३३ |
| ९५. | मंडळाला निदेश देण्याचा राज्य शासनाचा अधिकार | ३४ |

**प्रकरण दहा
शास्ती**

| | | |
|------|---|----|
| ९६. | या अधिनियमाखाली नियुक्त करण्यात आलेल्या व्यक्ती विशिष्ट प्रयोजनार्थ लोकसेवक असणे. | ३४ |
| ९७. | कलम २७, २८, २९ आणि ३० यांच्या उल्लंघनाबद्दल शास्ती | ३५ |
| ९८. | परवानगी न घेता मालधकका, बंदरधकका इत्यादी उभारण्याबद्दल शास्ती | ३५ |
| ९९. | पट्टी इत्यादी चुकवल्याबद्दल शास्ती | ३५ |
| १००. | मंडळाच्या मालमतेच्या नुकसानी मूल्याची वसुली | ३५ |
| १०१. | इतर अपराध | ३५ |
| १०२. | अपराधाची दखल | ३५ |
| १०३. | कंपन्यांनी केलेला अपराध. | ३६ |

अनुक्रमणिका-चालू

| उद्देशिका कलमे | प्रकरण अकरा संकीर्ण | पृष्ठे |
|-------------------|---|--------|
| १०४. | स्थानिक सल्लागार समिती | ३६ |
| १०५. | या अधिनियमाखाली करण्यात आलेल्या गोष्टीच्या संबंधातील कार्यवाहीची मुदत मर्यादा. | ३६ |
| १०६. | सद्भावनेने केलेल्या कृतींना संरक्षण | ३७ |
| १०७. | नियम करण्याचा राज्य शासनाचा अधिकार | ३७ |
| १०८. | विनियम करण्याचा अधिकार | ३७ |
| १०९. | विनियमांच्या संबंधातील तरतुदी | ३९ |
| ११०. | विनियम करण्याचा, निवेश देण्याचा किंवा विनियम करण्याचा राज्य शासनाचा अधिकार. | ३९ |
| १११. | पहिले विनियम करण्याचा शासनाचा अधिकार | ४० |
| ११२. | विवक्षित विनियम इत्यादी चिकटविणे | ४० |
| ११३. | शुल्क गोळा करण्यासाठी माल धवके इत्यादींचा वापर करण्याच्या शासनाच्या व नगरपालिकांच्या अधिकारांवी व्यावृत्ती व सीमाशुल्क अधिकाऱ्यांचा अधिकार. | ४० |
| ११४. | या अधिनियमाच्या तरतुदी विमानांना लागू होणे | ४० |
| ११५. | अडचणी दूर करण्याचा अधिकार | ४० |
| ११६. | सन १९०८ चा अधिनियम क्रमांक १५ याचे कलम ५ अ वगळणे | ४१ |
| ११७. | निरसन व व्यावृत्ती | ४१ |
| ११८. | सन १९९६ चा महाराष्ट्र अध्यादेश क्रमांक १६ याचे निरसन व व्यावृत्ती. | ४१ |

महाराष्ट्र सागरी मंडळ अधिनियम, १९९७

[महाराष्ट्र सागरी मंडळ अधिनियम, १९९६]*

सन १९९७ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक १५^१

[राष्ट्रपतींची संमती मिळाल्यानंतर “महाराष्ट्र शासन राजपत्र” दिनांक १७ जानेवारी १९९७ रोजी प्रथम प्रसिद्ध केलेला अधिनियम.]

महाराष्ट्र राज्यातील लहान बंदरांकरिता सागरी मंडळ स्थापन करण्याची व अशा बंदरांचे प्रशासन, नियंत्रण व व्यवस्थापन त्या मंडळाकडे निहित करण्याची आणि त्यांच्याशी संबंधित आणि आनुषंगिक बाबींची तरतूद करण्यासाठी अधिनियम.

ज्याअर्थी, महाराष्ट्र राज्यातील लहान बंदरांकरिता सागरी मंडळ स्थापन करण्याची व अशा बंदरांचे प्रशासन, नियंत्रण व व्यवस्थापन त्या मंडळाकडे निहित करण्याची आणि त्यांच्याशी संबंधीत आणि अनुषंगिक बाबींचा तरतूद करणे इष्ट होते;

आणि ज्याअर्थी, राज्य विधीमंडळाच्या दोन्ही सभागृहांचे अधिवेशन चालू नक्ते;

आणि ज्याअर्थी, राज्य उपरोक्त प्रयोजनासाठी, कायदा करण्याकरीता तात्काळ कार्यवाही करणे जीमुळे आवश्यक व्हावे अशी परिस्थिती अस्तित्वात असल्याबद्दल महाराष्ट्राच्या राज्यपालांची खात्री पटली होती; आणि म्हणून त्यांनी दिनांक ४ ऑक्टोबर १९९६ रोजी महाराष्ट्र सागरी मंडळ अध्यादेश, १९९६ १९९६ चा महा. प्रख्यापित केला होता ;

अध्या. १६

आणि ज्याअर्थी, उक्त अध्यादेशाचे राज्य विधानमंडळाच्या अधिनियमात रुपांतर करणे इष्ट आहे; त्याअर्थी, भारतीय गणराज्याच्या सत्तेचाळिसाव्या वर्षी, याद्वारे, पुढील अधिनियम करण्यात येत आहे :-

१ उद्देश व कारणे यांचे निवेदन याकरीता पहा महाराष्ट्र शासन राजपत्र, १९९६, भाग पाच, आद, पृ. ११६.

* सन १९९७ चा महाराष्ट्र अधिनियम, क्रमांक १५, कलम ११८ द्वारे सन १९९६ चा महाराष्ट्र अध्यादेश क्रमांक १६ निरसित करण्यात आला.

प्रकरण एक

प्रारंभिक

संक्षिप्त नाव,
व्याप्ती, प्रारंभ
व प्रयुक्ती

१. (१) या अधिनियमास, महाराष्ट्र सागरी मंडळ अधिनियम, १९९६ असे म्हणावे.

(२) तो संपूर्ण महाराष्ट्र राज्यास लागू असेल.

(३) तो दिनांक ४ ऑक्टोबर १९९६ रोजी अंमलात आला असल्याचे मानण्यात येईल.

(४) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकास भारतीय बंदरे अधिनियम, १९०८ लागू असलेल्या, राज्यातील सर्व लहान बंदरांना तो लागू होईल आणि राज्य शासनाला राजपत्रातील अधिसूचनेद्वारे आणि १९०८
चा १५ अधिसूचनेत विनिर्दिष्ट करण्यात येईल अशा दिनांकापासून या अधिनियमाच्या तरतुदी, भारतीय बंदरे
अधिनियम, १९०८ याच्या कलम ४ अन्वये राज्य शासनाने तो अधिनियम राज्यातील ज्या कोणत्याही इतर १९०८
चा १५ लहान बंदराला लागू केलेला असेल त्या बंदरास लागू करता येतील.

२. या अधिनियमांत संदर्भानुसार दुसरा अर्थ अपेक्षित नसेल तर,—

(क) कोणत्याही लहान बंदराच्या संबंधात “नियत दिवस” म्हणजे, हा अधिनियम त्या बंदराला ज्या दिवशी लागू होतो तो दिवस;

(ख) “मंडळ” म्हणजे, कलम ३ अन्वये रचना केलेले महाराष्ट्र सागरी मंडळ;

(ग) “मंडळाचा रोखा” म्हणजे, मंडळाने या अधिनियमाच्या तरतुदीअन्वये संविदा केलेल्या कोणत्याही कर्जाच्या संबंधात काढलेली ऋणपत्रे, बंधपत्रे किंवा गोदी प्रमाणपत्रे;

(घ) “अध्यक्ष” म्हणजे, कलम ३ अन्वये नियुक्त केलेला मंडळाचा अध्यक्ष आणि त्यात, कलम ९ अन्वये अध्यक्ष म्हणून काम करण्यासाठी नियुक्त केलेल्या व्यक्तीचा समावेश होतो;

(ङ) “गोदी” (Dock) या मध्ये, नदीच्या काठच्या सर्व गोद्या (Basins), सर्व झडपा (Locks), खोबणी (Cuts), प्रवेशद्वारे (Entrance), सफाई गोद्या (Graving Docks), सफाई ठोकळे (Graving Blocks), उतरत्या पृष्ठपातळ्या (Inclined Planes), जहाज बांधणी अगर दुरुस्तीची ठिकाणे (Slipways), ग्रिडीरॉन्स (Gridirons) (तपासून दुरुस्ती करण्याकरिता जाहाजे पाण्याबाहेर ओढून ठेवण्याची उघडी जाळी), खुंटवाडे (Moorings), संक्रमण छपन्या (Transit Sheds), वर्खारी, गोदामे, खुले भूखंड आणि कोणत्याही गोदीशी अंगभूत अशी सर्व बांधकामे आणि गोल्डी व त्याचप्रमाणे, बंदराचे फाटे किंवा भिंती (Groynes) यांच्याद्वारे बंदिस्त केलेला समुद्राचा भाग यांचा समावेश होतो;

(च) बंदराच्या संबंधात “किनान्यालगतचा प्रदेश” म्हणजे, त्या बंदराच्या संबंधातील भरतीच्या व ओहोटीच्या मर्यादित्या खुणांमधील क्षेत्र;

(छ) “माल” यामध्ये पशुधन आणि प्रत्येक प्रकारची जंगम मालमत्ता यांचा समावेश होतो;

(ज) “शासन” किंवा “राज्य शासन” म्हणजे महाराष्ट्र शासन;

(ज्ञ) बंदराच्या संबंधात “भरतीच्या मर्यादेची खूण” म्हणजे, त्या बंदराच्या ठिकाणी वर्षातील कोणत्याही ऋतुमध्ये नेहमीच्या उधानाने (Spring tide) पाणी ज्या सर्वोच्च बिंदूपर्यंत पोचते त्या बिंदूमधून काढलेली रेषा;

(ज) “स्थावर मालमत्ता” यामध्ये कोणतीही जमीनमालधक्का, गोदी किंवा पूलधक्का यावर, त्यासाठी किंवा त्याच्या संबंधात वापरता येणारे धक्काभाड्याचे हक्क आणि इतर सर्व हक्क यांचा समावेश होतो;

(ट) “भारतीय बंदर अधिनियम” म्हणजे, भारतीय बंदरे अधिनियम, १९०८;

१९०८ चा १५ (ठ) “जमीन” यामध्ये, भरतीच्या मर्यादेच्या खुणेखाली असलेले समुद्राचे किंवा नदीचे पात्र यांचा आणि भूमीला (Earth), संलग्न असलेल्या किंवा भूमीला संलग्न असलेल्या कशालाही जखडलेल्या गोष्टीचा देखील समावेश होतो;

(ड) बंदराच्या संबंधात “आहोटीच्या मर्यादेची खूण” म्हणजे, त्या बंदराच्या ठिकाणी वर्षातील कोणत्याही ऋतुमध्ये नेहमीच्या उधानाचे पाणी ज्या सर्वात खालच्या बिंदूपर्यंत पोचते त्या बिंदूमधून काढलेली रेषा;

(ढ) कोणत्याही लहान बंदराचा वापर करणाऱ्या कोणत्याही जहाजाच्या किंवा होडीच्या संबंधीत “नौकाधिपती म्हणजे,” बंदवाटाड्या, बंदर नौकाधिपती, गोदी नौकाधिपती किंवा बंदराचा बर्थिंग-मास्टर या व्यतिरिक्त यथास्थिति, अशा जहाजाचा किंवा होडीचा त्या त्या वेळी प्रभार किंवा नियंत्रण असलेली कोणतीही व्यक्ती;

(ण) “सदस्य” म्हणजे, यथास्थिति मंडळाचा किंवा त्याच्या समितीचा सदस्य;

(त) “लहान बंदर” म्हणजे, केंद्र सरकारने कोणत्याही कायद्यान्वये म्हणून घोषित केलेले मोठ्या बंदराव्यतिरिक्त इतर बंदर;

(थ) “मालक” म्हणजे ,--

(एक) मालाच्या संबंधात अशा मालाची विक्री, अभिरक्षा, तो चढवणे किंवा उत्तरवणे, यासाठी असलेला, कोणताही माल पाठवणारा, माल घेणारा, जहाजात माल चढवणारा (Shipper) किंवा एजंट यांचा त्या संज्ञेमध्ये समावेश होतो आणि;

(दोन) कोणत्याही बंदराचा वापर करणाऱ्या कोणत्याही जहाजाच्या किंवा होडीच्या संबंधात, कोणताही बंदर मालक, जहाज/होडी भाड्याने घेणारा, माल घेणारा किंवा जहाजाचा/होडीचा कब्रेगहाणदार यांचा त्या संज्ञेमध्ये समावेश होतो ;

(द) “पूलधक्का” यामध्ये कोणतेही स्टेज, जिने, उत्तरवण्याची जागा, कठीण लहान धक्का, तरता पडाव किंवा पॉन्टून (pontoon) आणि कोणतेही पूल किंवा त्यांच्याशी संबंधित इतर बांधकामे यांचा समावेश होतो ;

(ध) “बंदर” म्हणजे, राज्य शासन भारतीय बंदरे अधिनिमान्वये वेळोवेळी निश्चित करील अशा मर्यादांच्या अधीन राहून हा अधिनियम, ज्याला लागू होतो ते कोणतेही लहान बंदर ;

(न) बंदराच्या संबंधात “बंदराचे पोचमार्ग”(Port Approaches) म्हणजे बंदराकडे जाणाऱ्या, जहाजे जाण्यासारखा नद्यांचे किंवा खाड्यांचे, भारतीय बंदर अधिनियम ज्यामध्ये अंमलात आहे ते भाग ;

(प) “विहित” म्हणजे, या अधिनियमान्वये केलेल्या नियमांद्वारे किंवा विनियमांद्वारे विहित केलेले ;

(फ) “सरकारी रोखे” म्हणजे,—

(एक) केंद्र सरकारची किंवा कोणत्याही राज्य शासनाची वचनपत्रे, ऋणपत्रे, कर्जरोखे (Stock) किंवा इतर रोखे ;

परंतु ज्यांचे मुहल व व्याज या दोन्हीसाठी अशा कोणत्याही शासनाने पूर्ण आणि विनश्त हमी दिलेली असेल ते रोखे या खंडाच्या प्रयोजनार्थ असा शासनाने रोखे असल्याचे मानण्यात येईल; आणि

(दोन) राज्यामध्ये त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या कोणत्याही कायद्याच्या प्राधिकारान्वये कोणताही नगरपालिका निकाय, सुधारणा विश्वस्त किंवा बंदर विश्वस्त यांच्याद्वारे किंवा त्याच्यावतीने पैशासाठी काढण्यात आलेली ऋणपत्रे किंवा इतर रोखे आणि त्यामध्ये मंडळाच्या रोख्यांचा समावेश आहे;

(ब) “ पट्टी ” यामध्ये, या अधिनियमान्वये वसुलीयोग्य असलेला कोणताही पथकर, देणी, भाडे, शुल्क किंवा आकार यांचा समावेश होतो;

(भ) “ विनियम ” म्हणजे, या अधिनियमान्वये केलेले विनियम;

(म) “ नियम ” म्हणजे, या अधिनियमान्वये केलेले नियम;

(य) “ राज्य ” म्हणजे, महाराष्ट्र राज्य ;

(य-क) “ जहाज ” यामध्ये, माणसांची किंवा मालाची मुख्यतः जलमार्ग ने-आण करण्यासाठी तयार केलेल्या कोणत्याही गोष्टीचा समावेश होतो ;

(य-ख) “ मालधक्का ” यामध्ये, माल भरण्यासाठी किंवा उतरवण्यासाठी आणि उतारुना जहाजात घडण्यासाठी किंवा जहाजातून उतरण्यासाठी वापरता येईल अशी कोणतीही भित किंवा स्टेज आणि जमिनीचा किंवा किनान्यालगतच्या प्रदेशाचा कोणताही भाग आणि त्यांना बंदिस्त करणारी किंवा लागून असलेली कोणतीही भित यांचा समावेश होतो.

प्रकरण दोन

महाराष्ट्र सागरी मंडळाची स्थापना

महाराष्ट्र सागरी मंडळाची स्थापना

३. (१) या अधिनियमाच्या प्रारंभानंतर शक्य होईल तितक्या लवकर, शासनाला, राजपत्रातील अधिसूचनेद्वारे, महाराष्ट्र सागरी मंडळ या नावाने संबोधावयाच्या मंडळाची स्थापना करता येईल.

(२) हे मंडळ अखंड परंपरा असलेल उपरोक्त नावाचा एक निगमनिकाय असेल, त्याचा सामाईक शिक्का असेल आणि त्याला जंगम आणि रथावर अशी दोन्ही प्रकरची भालमत्ता संपादन करण्याचा, धारण करण्याचा आणि तिची विलेवाट लावण्याचा आणि संविदा करण्याचा अधिकार असेल व उक्त नावाने त्याला आणि त्याच्याविरुद्ध दावा लावता येईल.

(३) मंडळाचे मुख्य कार्यालय, राज्य शासन राजपत्रातील अधिसूचनेद्वारे निदेश देईल अशा ठिकाणी असेल.

(४) मंडळामध्ये, राज्य शासनाद्वारे नियुक्त करण्यात यावयाचे अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व अकरापेक्षा जारत नसतील इतके इतर सदस्य यांचा समावेश असेल ते असे :-

| | |
|---|---------------------|
| (क) मंत्री, बंदरे | पदसिद्ध अध्यक्ष ; |
| (ख) राज्यमंत्री, बंदरे | पदसिद्ध उपाध्यक्ष ; |
| (ग) शासनाचे सचिव, गृह विभाग (परिवहन) | पदसिद्ध सदस्य ; |
| (घ) शासनाचे सचिव, वित्त विभाग | पदसिद्ध सदस्य ; |
| (ङ) शासनाचे सचिव, उद्योग विभाग | पदसिद्ध सदस्य ; |
| (च) केंद्र शासनाने नामनिर्देशित करावयाचा भारतीय | पदसिद्ध सदस्य ; |

नौसेनेतील एक प्रतिनिधी

(छ) राज्य शासनाच्या मते, पुढीलपैकी एका किंवा अधिक क्षेत्रांचा अशासकीय सदस्य ;

अनुभव असलेल्या व त्यात र्खताची क्षमता सिद्ध केलेल्या व्यक्तीमधून

नियुक्त करण्यात यावयाचे सहापेक्षा जारत नसतील इतके इतर अशासकीय सदस्य ;

ती क्षेत्रे म्हणजे :-

(एक) बंदरे, जहाज वाहतूक, सागरी व्यवहार किंवा वाणिज्य किंवा अशा बाबीचे प्रशासन ;

- (दोन) अभियांत्रिकी आणि बंदरविषयक कामे ;
- (तीन) उद्योग, वाणिज्य, बंदरे किंवा जहाज वाहतूक यांच्या संबंधातील लेखे ;
- (चार) नौकानयन, विशेषतः गाळ उपसणी आणि जलविद्याविषयक सर्वक्षण यांच्या संबंधातील ;
- (पाच) व्यापार वाणिज्य व उद्योग ;
- (सहा) लहान बंदरातील कामगारांच्या हितसंबंधाचे प्रतिनिधित्व ; आणि
- (ज) कलम १७ अन्वये नियुक्त करण्यात आलेला पदसिद्ध सदस्य सचिव, मंडळाचा मुख्य कार्यकारी अधिकारी.
४. पुढील कारणावरून एखादी व्यक्ती मंडळाचा सदस्य म्हणून नियुक्त केली जाण्यास किंवा असा सदस्य म्हणून राहण्यास अपात्र ठरेल :—
- (क) तिला केंद्र सरकारच्या किंवा राज्य शासनाच्या किंवा रथानिक प्राधिकरणाच्या किंवा त्या शासनाच्या मालकीच्या किंवा नियंत्रणाखालील एखाद्या महामंडळाच्या सेवेतून काढून टाकण्यात आले असेल किंवा बडतर्फ करण्यात आले असेल ;
- (ख) नैतिक अधःपतनाचा अंतर्भाव होतो अशा अपराधाबद्दल तिला सिद्धापाराध ठरविण्यात आले असेल ; किंवा
- (ग) ती अमुक्त नादार असेल ; किंवा
- (घ) मंडळाच्या आदेशाद्वारे करण्यात आलेल्या कोणत्याही कामामध्ये किंवा मंडळाबोरवरच्या किंवा मंडळाकडून किंवा मंडळाच्या वतीने करण्यात आलेल्या कोणत्याही संविदेमध्ये किंवा नोकरी मध्ये तिचा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्षरीत्या कोणताही हिस्सा किंवा हितसंबंध असेल परंतु ; —
- (एक) जी मंडळाची संविदा करील किंवा मंडळाकडून किंवा मंडळाच्या वतीने जीला नोकरीवर ठेवण्यात येईल अशा कोणत्याही कंपनीमध्ये किंवा भागीदारी संरथेमध्ये तिचा हिस्सा आहे ; किंवा
- (दोन) मंडळाच्या व्यवहारासंबंधातील कोणत्याही जाहिरातीचा ज्यामध्ये समावेश करण्यात येईल असा कोणत्याही वृत्तपत्रामध्ये तिचा हिस्सा किंवा हितसंबंध आहे ; किंवा
- (तीन) मंडळाला द्यावयाच्या कोणत्याही आर्थिक कर्जामध्ये तिचा हितसंबंध आहे ; किंवा
- (चार) रथावर मालमत्तेचा कोणताही भाडेपट्टा, विक्री, अदलाबदल किंवा खरेदी यामध्ये किंवा त्यासंबंधीच्या कोणत्याही करारनाम्यामध्ये तिचा हिस्सा किंवा हितसंबंध आहे ; किंवा
- (पाच) मंडळाच्या मालकीच्या कोणत्याही जागेच्या किंवा मालमत्तेच्या सर्वस्वी किंवा खास वापरासाठी मंडळाशी केलेल्या कराराद्वारे किंवा अन्यथा, मंडळाने दिलेल्या कोणत्याही लायसन्समध्ये किंवा हक्कामध्ये हिस्सा किंवा हितसंबंध आहे ; किंवा
- (सहा) ज्या वस्तूचा ती व्यापार करते अशा वस्तूच्या, मंडळाला करण्यात आलेल्या, कोणत्याही एका वित्तीय वर्षामध्ये दहा हजार रुपयांपेक्षा अधिक नसेल एवढ्या मूल्याच्या प्रासांगिक विक्रीमध्ये तिचा हिस्सा किंवा हितसंबंध आहे ;
- एवढ्याच कारणावरून कोणत्याही व्यक्तीचा अशा कामामध्ये, कंत्राटामध्ये किंवा नोकरीमध्ये हिस्सा किंवा हितसंबंध असल्याचे मानण्यात येणार नाही.
५. या अधिनियमाच्या तरतुदींस अधीन राहून, मंडळाचे अशासकीय सदस्य शासनाची मर्जी असेपर्यंत सदस्यांचा पदावधी आणि कोणत्याही परिस्थितीत तीन वर्षांपेक्षा अधिक नसेल इतक्या कालावधीकरिता पद धारण करतील.

- मंडळाच्या सदस्यांना पदावरुन दूर करील :**
६. (१) राज्य शासन, पुढील कारणांवरुन सदस्याला पदावरुन दूर करील :—
 (क) कलम ४ मध्ये उल्लेखिलेल्याप्रमाणे कोणत्याही प्रकारे तो अपात्र ठरत असेल किंवा ठरलेला असेल;
 दूर करणे किंवा
- (ख) कृती करण्याचे नाकारील किंवा कृती करण्यास असमर्थ ठरेल; किंवा
- (ग) ज्यासाठी त्यास नियुक्त करण्यात आले होते त्या हितसंबंधाचे प्रतिनिधित्व करण्यास तो असमर्थ ठरला असे शासनाचे मत असेल; किंवा
- (घ) मंडळाची पूर्वपरवानगी न घेता, मंडळाच्या लागोपाठच्या सहा बैठकींना अनुपस्थित राहिला असेल;
 किंवा
- (ङ) लागोपाठ सहा महिन्यांहून अधिक काळ मंडळाच्या बैठकींना अनुपस्थित राहिला असेल;
- (च) कलम १३ च्या तरतुदीचे उल्लंघन होईल अशी कृती करील.
- (२) मंडळाच्या अशासकीय सदस्यास, अध्यक्षाकडे आपला लेखी राजीनामा सादर करुन, आपल्या पदाचा राजीनामा देता येईल. अध्यक्ष, असा राजीनामा शासनाकडे पाठवील, परंतु असा राजीनामा शासनाकडून स्वीकारला जाईपर्यंत तो अंमलांत येणार नाही.
- नियुक्तीसाठी पात्रता नसेल तर, फेरनियुक्ती केली जाण्यास पात्र असेल.**
७. सदस्य असण्याचे बंद झालेली कोणतीही व्यक्ती, कलम ४ अन्यथे तिला अपात्र ठरविण्यात आले रिक्त पदे. परंतु, कलम ५ अन्यथे कोणत्याही अशा अशासकीय सदस्याचे पद रिक्त झाल्यास ते भरण्यात येईल :
- परंतु, कलम ५ अन्यथे कोणत्याही अशा अशासकीय सदस्याचा पदावधी समाप्त होण्याच्या दिनांकापूर्वीच्या तीन महिन्यांमध्ये अशा सदस्याचे कोणतेही पद रिक्त झाल्यास ते भरण्यात येणार नाही.
- (२) पोट-कलम (१) अन्यथे नियुक्त करण्यात आलेला सदस्य, ज्या सदस्याच्या जागी त्याची नियुक्ती झाली असेल त्यां सदस्याने, ते पद रिक्त झाले नसते तर जेवढ्या मुदतीकरिता ते पद धारण केले असते तेवढ्या मुदतीसाठी ते पद धारण करील.
- अध्यक्षाची अनुपस्थिती. ९. अध्यक्ष रजेवर असल्याने किंवा अन्यथा अनुपस्थित असेल त्या बाबतीत उपाध्यक्ष आणि अध्यक्ष व उपाध्यक्ष या दोघांच्याही अनुपस्थितीत, राज्य शासनाकडून नियुक्त करण्यात येईल अशी व्यक्ती, अध्यक्ष म्हणून काम पाहील.**
- मंडळाच्या बैठकी. १०. (१) मंडळ, विनियमामध्ये तरतुद करण्यात येईल अशा वेळी व अशा ठिकाणी आपल्या बैठकी घेईल व आपल्या बैठकीचे कामकाज चालविण्याच्या संबंधात, पोट-कलमे (२), (३) व (४) च्या तरतुदीस अधीन राहून, विनियमान्यथे तरतुद करण्यात आलेली कार्यपद्धती अनुसरील.**
- (२) मंडळाचा अध्यक्ष व त्याच्या अनुपस्थितीत उपाध्यक्ष आणि अध्यक्ष व उपाध्यक्ष या दोघांच्याही अनुपस्थितीत, उपस्थित सदस्यांनी आपल्यामधून निवडून दिलेली कोणतीही व्यक्ती मंडळाच्या बैठकीचे अध्यक्षपद भूषवीलत.
- (३) मंडळाच्या बैठकीमधील सर्व प्रश्नांचा, उपस्थित असलेल्या व मतदान करणाऱ्या सदस्यांच्या बहुमताने निर्णय करण्यात येईल आणि सारखी मते पडतील अशा प्रकरणी, अध्यक्षपद भूषविणाऱ्या व्यक्तीला दुसरे किंवा निर्णयक मत असेल.
- (४) बैठकीची गणपूर्ती होण्यासाठी आवश्यक असणाऱ्या सदस्यांची संख्या ही विनियमामध्ये तरतुद करण्यात येईल एवढी असेल आणि गणपूर्ती होण्यासाठी लागणारे सदस्य अशा बैठकीस संपूर्ण वेळ उपस्थित राहिल्याखेरीज अशा कोणत्याही बैठकीमध्ये कोणतेही कामकाज करण्यात येणार नाही.

११. (१) मंडळाला, वेळोवेळी, आपल्या सदस्यांमधून मंडळास आवश्यक वाटेल इतक्या सदस्यांचा मंडळाच्या समावेश आसलेल्या, एका किंवा अनेक समित्यांची मंडळाने, अशा एका किंवा अनेक समित्यांकडे आपली जी समित्या कर्तव्ये व कामे सोपविलेली आसतील ती पार पाडण्याच्या प्रयोजनार्थ, रचना करता येईल.

(२) पोट-कलम (१) अन्वये रचना करण्यात आलेली समिती, विनियमांमध्ये तरतुद करण्यात येईल अशा वेळी व अशा ठिकाणी आपल्या बैठकी घेईल व (गणपूर्तीसह) आपल्या बैठकींचे कामकाज चालविण्याच्या संबंधात, विनियमांमध्ये तरतुद करण्यात आलेली कार्यपद्धती अनुसरील.

१२. मंडळाच्या किंवा त्यांच्या कोणत्याही समित्यांच्या बैठकींना उपस्थित राहिल्याबद्दल व मंडळाचे कोणतेही सदस्यांना देय काम केल्याबद्दल मंडळ, अशासकीय सदस्यांना, नियमांमध्ये विहित केली असेल अशी फी व भत्ते देईल ; असलेली फी व भत्ते.

परंतु.—

(क) जो संसद सदस्य किंवा राज्य विधानमंडळ सदस्य असेल अशा सदस्याला कोणतीही फी देय असणार नाही ;

११५९
चा १०.
११५६
चा मुंबई
५२.

(ख) संसद सदस्य किंवा राज्य विधानमंडळाचा सदस्य असणाऱ्या सदस्याला देय असणारे कोणतेही भत्ते, यथास्थिती, संसद (अनर्हेस प्रतिबंध) अधिनियम, ११५९ याच्या कलम २, खंड (आ) मध्ये किंवा महाराष्ट्राचा विधानमंडळ सदस्य (निरहता दूर करणे) अधिनियमाच्या अनुसूची एक मधील नोंद क्रमांक ११ च्या स्पष्टीकरणामध्ये व्याख्या करण्यात आलेल्या पूरक भत्त्याहून अधिक असणार नाहीत.

१३. मंडळाच्या किंवा मंडळाच्या समितीच्या सदस्याचा,—

मंडळाच्या
किंवा
समितीच्या
सदस्याने
विशिष्ट
प्रकरणामध्ये
मत न
देणे.

(एक) मंडळाच्या किंवा मंडळाच्या समितीच्या बैठकीपुढे विचारार्थ मांडण्यात येणाऱ्या कोणत्याही बाबीमध्ये कोणताही प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्ष आर्थिक हितसंबंध असेल तर ; किंवा

११२६
चा १६.

(दोन) एखाद्या अर्शीलाच्या वर्तीने किंवा शासनाव्यतिरिक्त अन्य कोणत्याही व्यक्तीचा किंवा शासनाच्या किंवा स्थानिक प्राधिकरणाच्या मालकीच्या किंवा नियंत्रणाखाली असलेल्या एखाद्या उपक्रमाचा किंवा कामगार संघ अधिनियम, ११२६ अन्याये नोंदवणी करण्यात आलेल्या कामगार संघाचा एजंट म्हणून किंवा मंडळाच्या कोणत्याही वर्गाच्या कर्मचाऱ्यांच्या हितसंवर्धनाच्या अथवा कल्याणाच्या प्रयोजनार्थ स्थापन करण्यात आलेल्या एखाद्या संघाचा सदस्य म्हणून व्यावसायिक हितसंबंध असतील तर,

संबंध परिस्थिती त्यास माहित झाल्यावर ताबडतोब अशा बैठकीत तो आपल्या हितसंबंधाचे स्वरूप उघड करून सांगेल आणि अशा प्रकारे उघड करण्यात आलेल्या हितसंबंधाची नोंद मंडळाच्या किंवा यथास्थिती, समितीच्या कार्यवृत्तामध्ये घेण्यात येईल अणि तो सदस्य अशा बाबीच्या संबंधातील मंडळाच्या किंवा समितीच्या कोणत्याही चर्चेत किंवा निर्णयामध्ये भाग घेणार नाही.

१४. मंडळाची किंवा मंडळाच्या कोणत्याही समितीची कृती किंवा कार्यवाही, —

नियुक्तीमधील
दोषांमुळे
कृती इत्यादी
विधिअग्राह्य न
ठरणे.

(क) त्यांमध्ये कोणतेही पद रिक्त आहे किंवा त्याच्या रचनेमध्ये कोणताही दोष आहे ;

(ख) त्यांचा सदस्य म्हणून कार्य करणारी व्यक्ती कोणत्याही प्रकारे अपात्र आहे किंवा तिच्या नियुक्तीमध्ये कोणताही दोष आहे ;

(ग) कलम १३ चे उल्लंघन करून कोणत्याही सदस्याने कोणत्याही कामकाजामध्ये कृती केली आहे किंवा भाग घेतला आहे ; किंवा

(घ) त्याच्या किंवा तिच्या कार्यपद्धतीमध्ये प्रकरणाच्या गुणवत्तेवर परिणाम करणार नाही अशी कोणतीही अनियमितता आहे ;

या केवळ कारणावरून विधिअग्राह्य ठरणार नाही.

अधिकारांचे १५. राज्य शासनाच्या पूर्व संभरीने मंडळ असा निदेश देऊ शकेल की अशा निदेशात विनिर्दिष्ट करण्यात येतील असे या अधिनियमाद्वारे किंवा त्या अन्यदो मंडळाकडे प्रदान करण्यात आलेले अधिकार आणि सोपविण्यात आलेली कर्तव्य अशा निदेशात विनिर्दिष्ट करण्यात येतील अशा अटींच्या व निर्बंधांच्या अधीन राहन, मुख्य कार्यकारी अधिकाऱ्याकडूनही वापरण्यात येतील किंवा पाडण्यात येतील.

अध्यक्षांची १६. (१) आजारपणामुळे किंवा अन्य कोणत्याही वाजवी कारणा मुळे प्रतिबंध होत असल्यास ते खेरीज करत्यांचे करुन मंडळाच्या प्रत्येक बैठकीला उपस्थित राहणे हे अध्यक्षांचे, उपाध्यक्षांचे आणि मुख्य कार्यकारी इत्यादी. अधिकाऱ्यांचे कर्तव्य असेहे :

(२) मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मंडळाच्या प्रत्येक बैठकीच्या कर्तव्यांताची प्रत शक्य तितक्या लवकर शासनाकडे पाठवील आणि शासनास ते वेळोवेळी मागवील असे अहवाल, विवरण, दस्तऐवज किंवा अन्य माहिती सादर करील;

(३) मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मंडळाच्या सर्व कर्मचाऱ्यांच्या कर्तव्यांची प्रशासनाच्या बाबींसंबंधातील व मंडळाचे लेखे व अभिलेखे यांच्या संबंधातील कामाचे पर्यवेक्षण करील व त्यांदर नियंत्रण ठेवील.

प्रकरण तीन

मंडळाचा कर्मचारीवर्ग

मंडळाचा भुक्त कार्यकारी अधिकारी १७. (१) राज्य शासन, मंडळाच्या मुख्य कार्यकारी अधिकारी याची नियुक्ती करील.

(२) मुख्य कार्यकारी अधिकाऱ्यांचे वेतन, भत्ते व सेवेच्या इतर शर्ती नियमांद्वारे विहित करण्यात येतील त्याप्रमाणे असतील.

मंडळाचा वित्तीय नियंत्रक नि-मुख्य लेखा अधिकारी १८. (१) मंडळ राज्य शासनाची पूर्वमंजुरी घेऊन, नियमांद्वारे विहित करण्यात आलेली पात्रता धारण करणाऱ्या व्यक्तीची वित्तीय नियंत्रक-नि-मुख्य लेखा अधिकारी। म्हणून नियुक्ती करील. राज्य शासन त्याला योग्य वाटेल अशा अटींवर अशा नियुक्तीस मंजुरी देऊ शकेल.

(२) मंडळाला त्याची कामे कार्यक्षमतेने पास पाडण्याच्या दृष्टीने आवश्यक वाटतील अशी इतर पदे निर्माण करता येतील आणि अशा इतर अधिकाऱ्यांची व कर्मचाऱ्यांची नियुक्ती करता येईल आणि त्यांच्या नियुक्तीच्या व सेवेच्या शर्ती आणि त्यांना देय असणारे पारिश्रमिक विनियमांद्वारे ठरवता येईल :

परंतु, भारतीय बंदर अधिनियमान्वये राज्य शासनाने कोणत्याही बंदरातील जहाजांचे मार्गदर्शन करण्यासाठी त्यावेळी जिला प्राधिकृत केलेले नसेल अशा कोणत्याही व्यक्तीची त्या बंदरासाठी बंदरवाटाऱ्या म्हणून नियुक्ती करण्यात येणार नाही.

(३) मंडळ या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ तिला ती ठेवणे आवश्यक, पुरेशी व योग्य वाटेल अशी मंडळाच्या कर्मचाऱ्यांची अनुसूची वेळोवेळी तयार करील व मंजूर करील आणि अशा अनुसूचीमध्ये कर्मचाऱ्यांची पदनामे व श्रेणी आणि त्यांना देयण्याचे प्रस्तावित केलेले वेतन, शुल्क आणि भत्ते दर्शविण्यात येतील.

मंडळाच्या कर्मचाऱ्यांना रजा इत्यादी देण्याचे अधिकार १९. (१) कोणत्याही विनियमाच्या अस्तीनतेने मंडळाच्या कर्मचाऱ्यांना सेवेची मुदतवाढ देणे, रजा मंजूर करणे, निलंबित करणे, कामावरून काढून टाकणे, बडतर्फ करणे किंवा त्यांच्या सेवेसंबंधीच्या अन्य कोणताही प्रश्न निकालात काढणे यासंबंधीच्या अधिकारांवा आणि त्या व बरोबर अशा कोणत्याही कर्मचाऱ्याच्या सेवा, त्याच्या गैरवर्तणुकीबद्दलच्या कारणावरून असेल त्यावितरिक्त, अन्य प्रकारे अनावश्यक ठरवण्याच्या अधिकाराचा वापर मंडळाकडून किंवा विनियमांद्वारे निर्धारित करण्या त येईल, अशा प्राधिकाऱ्याकडून केला जाईल.

(२) पदावनती, सेवेतुन काढून टाकणे किंवा बडलफ करणे यांचा समावेश असलेल्या कोणत्याही आदेशामुळे पीडित झालेला मंडळाच्या कोणताही अधिकारी किंवा कर्मचारी याला विनियमांद्वारे तरतुद करण्यात येईल अशा कालावधीत आणि अशा रीतीने राज्य शासनाकडे अपील करता येईल.

प्रकरण घार

मालमत्ता व संविदा

२०. कोणत्याही बंदरारथ्या बाबतीत, नियत दिनांकापासून,—

| | |
|-----------|----------------|
| राज्य | शासनाच्या |
| मत्ता आणि | दायित्वे यांचे |
| मंडळाकडे | हस्तांतरण. |

(क) अशा दिवसाच्या लगतपूर्वी बंदराच्या प्रयोजनांसाठी राज्य शासनाकडे निहित असलेल्या सर्व मालमत्ता, मत्ता व निधी आणि पट्टी आकारण्याचे सर्व हक्क मंडळाकडे निहित होतील ;

(ख) अशा दिवसाच्या लगतपूर्वी बंदराच्या प्रयोजनांसाठी किंवा त्या संबंधात राज्य शासनाकडून, राज्य शासनाबोरोबर किंवा राज्य शासनासाठी पत्करण्यात आलेली सर्व ऋणे, बंधने व दायित्वे, करण्यात आलेल्या सर्व संविदा आणि करण्याची हमी देण्यात आलेल्या सर्व बाबी आणि गोष्टी या मंडळाकडून पत्कारण्यात, करण्यात किंवा करण्याची हमी देण्यात आल्याचे मानण्यात येईल ;

(ग) अशा दिवसापर्यंत बंदराच्या प्रयोजनांसाठी किंवा त्यांच्या संबंधात राज्य शासनाने केलेला सर्व अनावर्ती खर्च आणि राज्य शासनाने केलेला भांडवली खर्च हा शासनाकडून मंडळाला पुरविष्यात आलेले भांडवल असल्याचे समजण्यात येईल ;

(घ) अशा दिवसाच्या लगतपूर्वी बंदराच्या संबंधात राज्य शासनाला देय असलेल्या सर्व पट्टचां, फी, भाडी आणि पैशांच्या स्वरूपातील इतर रकमा या मंडळाला देय असल्याचे मानण्यात येईल ;

(ङ) अशा दिवसाच्या लगतपूर्वी बंदराच्या संबंधात शासनाकडून किंवा शासनाविरुद्ध दाखल करण्यात आलेले सर्व दावे आणि इतर न्यायालयीन कार्यवाह्या मंडळाकडून किंवा मंडळाविरुद्ध पुढे चालू ठेवता येतील ;

(च) अशा दिवसाच्या लगतपूर्वी, पूर्णपणे किंवा मुख्यतः लहान बंदराच्या कामकाजासाठी किंवा त्याच्या संबंधात शासनाकडे सेवेत असलेला प्रत्येक कर्मचारी हा मंडळाचा कर्मचारी होईल आणि जर मंडळ स्थापन करण्यात आले नसते तर त्याने ज्या पदावधीसाठी आणि सेवेच्या ज्या अटी व शर्तीवर ते पद धारण केले असते त्याच कालावधीसाठी आणि त्याच अटी व शर्तीवर त्याचे पद किंवा सेवा धारण करील ; आणि त्याची मंडळाकडील सेवा समाप्त करण्यात येईपर्यंत किंवा मंडळ त्याचा पदावधी, पारिश्रमिक किंवा सेवेच्या अटी व शर्ती यांमध्ये तो योग्य फेरफार करीपर्यंत तो असे पद धारण करण्याचे चालू ठेवील :

परंतु, अशा कोणत्याही कर्मचाऱ्याचा पदावधी, पारिश्रमिक आणि त्याच्या सेवेच्या अटी व शर्ती यांमध्ये त्याला अहितकारक ठरेल असा कोणताही फेरबदल शासनाची पूर्वमंजुरी घेतल्याखेरीज करण्यात येणार नाही.

विद्यमान
पट्ट्या,
इत्यादीमध्ये
मंडळाकडून
बदल
करण्यात
येईतोपर्यंत
त्या चालू
राहणे.

२१. नियत दिनांकापासून, कोणत्याही बंदराच्या संबंधातील कोणत्याही पट्ट्या, फी व इतर आकार यांची, या अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार त्यांमध्ये बदल करण्यात येईतोपर्यंत, अशा नियत दिनांकापूर्वी, राज्य शासनाकडून ज्या दराने त्यांची आकारणी व वसुली करण्यात येत होती, त्याच दराने आकारणी व वसुली चालू राहील.

भांडवल व
व्याज यांची
परतफेड
अधीन राहून, शासनाकडून निश्चित करण्यात येईल अशा दराने व्याजासह परतफेड करील आणि भांडवलाचे असे प्रदान किंवा व्याजाचे प्रदान हा मंडळाच्या खर्चाचा भाग असल्याचे समजण्यात येईल.

कराराद्वारे
जपिनीचे
संपादन
करणे शक्य
नसेल त्या
बाबतीतील
कार्यपद्धती.

२३. कोणतीही जमीन मंडळाच्या प्रयोजनासाठी आवश्यक असेल त्या बाबतीत, मंडळाने विनंती १८९४ केल्यावरून, राज्य शासन, भूमि संपादन अधिनियम, १८९४ याच्या तरतुदीन्वये त्या मालमत्तेचे संपादन या १. करू शकेल आणि त्या अधिनियमान्वये नेमून दिलेली भरपाईची रक्कम आणि त्या कार्यवाहीच्या संबंधात शासनाने केलेल्या खर्चाची रक्कम मंडळाने प्रदान केल्यावर ती जमीन मंडळाकडे निहित होईल.

मंडळाकडून
करण्यात
यावयाच्या
संविदा.

२४. या अधिनियमाच्या प्रयोजनांसाठी मंडळाकडून करण्यात यावयाच्या संबंधात पुढील तरतुदी लागू होतील :-

(क) मुख्य कार्यकारी अधिकारी किंवा मंडळाने प्राधिकृत केलेला अधिकारी, हा मंडळाच्या वतीने प्रत्येक संविदा करील.

(ख) शासनाने, त्यास योग्य वाटतील अशा अटीवर व शर्टीवर पूर्वमान्यता दिलेली असल्याखेरीज, किनाऱ्यावरील इमारत (Water Front), लहान धक्का, जलपथ (Water Way) आणि त्याच्या पायाभूत तत्सम सुविधा पाच वर्षांपेक्षा अधिक मुदतीकरिता भाडेपट्ट्याने देण्यासंबंधात कोणतीही संविदा करण्यात येणार नाही.

(ग) शासनाने, त्यास योग्य वाटतील अशा अटीवर व शर्टीवर पूर्वमान्यता दिलेली असल्याखेरीज, रथावर मालमत्तेच्या संपादनासंबंधात किंवा विक्रीसंबंधात किंवा अशी कोणतीही मालमत्ता तीस वर्षांहून अधिक मुदतीकरिता भाडेपट्ट्याने देण्यासंबंधात कोणतीही संविदा केली जाणार नाही.

(घ) मंडळाच्या वतीने संविदा करण्याचा नमुना व रीत ही, नियमाद्वारे विहित करण्यात येईल त्याप्रमाणे असेल.

(ङ) या अधिनियमाच्या व नियमांच्या तरतुदीनुसार न केलेली कोणतीही संविदा मंडळावर बंधनकारक असणार नाही.

प्रकरण पाच

मंडळाकडून लहान बंदरांच्या ठिकाणी पुरवण्यात यावयाची बांधकामे व सेवा

२५. (१) मंडळास त्या त्या वेळी अंमलात असणाऱ्या अन्य कोणत्याही कायद्यास अधीन राहून, त्यास बांधकामे आवश्यक किंवा इष्ट वाटतील अशी बांधकामे बंदराच्या हदीत किंवा हदीबाहेर करता येतील व अशा करण्याचा उपकरणांची तरतुद करता येईल.

(२) अशा बांधकामांच्ये व उपकरणांमध्ये पुढील गोष्टींचा समावेश असेल :-

(क) राज्यातील बंदरामध्ये किंवा बंदराकडे जाणाऱ्या पोचमार्गावर किंवा बंदराच्या किनाऱ्यालगतच्या प्रदेशावर किंवा बंदराकडे जाणाऱ्या पोचमार्गावरील किनाऱ्यालगतच्या प्रदेशावर मालधक्के, बंदरधक्के, अधिकार, गोद्या, स्टेजेस, लहान धक्के, पूल धक्के, नांगरवाडे व इतर बांधकामे व तसेच त्यासोबत सोयीस्कर अशा कमानी, निःस्वारणे उतरवण्याच्या जागा, जिने, कुपणे, रस्ते, पूल, बोगदे व पोचमार्ग व मंडळास आवश्यक वाटेल त्याप्रमाणे मंडळाच्या कर्मचाऱ्यांच्या निवासासाठी आवश्यक असलेल्या इमारतींचे बांधकाम ;

(ख) ऊतारुंसाठी व मालासाठी, बरेस, गतींयत्रे (Locomotives), रेल्वेची इंजिने/डबे, छपच्या हॉटेले, वखरी व इतर निवास व्यवस्था आणि ऊतारुंची वाहतूक करण्यासाठी व उतरविण्यात आलेला किंवा जहाजातून पाठविण्यात यावयाचा किंवा अन्यथा माल वाहून नेण्यासाठी, स्वीकारण्यासाठी व साठवून ठेवण्यासाठी इतर उपकरणे ;

(ग) खुंटवाडा (Moorings) व याच्या, तराजू आणि जहाजांमध्ये माल भरण्यासाठी आणि माल उतरविण्यासाठी लागणारी इतर सर्व आवश्यक साधने व उपकरणे ;

(घ) या अधिनियमाद्वारे, किंवा अन्यथा, या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ प्राधिकृत केलेली बांधकामे पार पाडण्यासाठी आवश्यक असेल असे, बंदराच्या किनाऱ्यालगतच्या प्रदेशाच्या किंवा बंदराच्या पोचमार्गाच्या कोणत्याही भागाचे पुनःप्राप्त करणे, त्यांचे उत्खनन करणे, तो बंदिस्त करणे आणि उंच करणे ;

(ङ) बंदराच्या संरक्षणासाठी इष्ट असतील असे पाणी थोपवणारे बंधारे (Break water) आणि इतर बांधकाम ;

(च) बंदर किंवा बंदराचे पोचमार्ग यांच्या अथवा बंदराचा किंवा बंदर पोचमार्गाचा किनाऱ्याजवळील प्रदेश याच्या कोणत्याही भागाची साफसफाई करणे, तो रुंद करणे, जास्त खोल करणे आणि त्यात सुधारणा करणे यांसाठी गाळ उपसणी यंत्रे व इतर यंत्रे ;

(छ) बंदर आणि बंदराचे पोचमार्ग येथील सुरक्षित नौकानयन जेथवर राज्याच्या कामांशी संबंधित असेल तेथवर अशा नौकानयनासाठी आवश्यक असेलेली दीपगृह, प्रकाशनौका, दीपस्तंभ, बोया, अडचणीत असलेल्या जहाजांच्या शोधार्थ जाणाऱ्या नौका (Pilot Boats) आणि इतर आवश्यक उपकरणे ;

(ज) बंदरात प्रवेश करत असलेल्या किंवा बंदर सोडत असलेल्या किंवा अन्यत्र जात असलेल्या कोणत्याही जहाजाला खेचून नेण्याच्या किंवा त्याला सहाय्य देण्याच्या प्रयोजनासाठी आणि जीवित किंवा मालमत्ता वाचविण्याच्या प्रयोजनासाठी आणि कलम ३२ अन्वये उतारु किंवा माल किनाऱ्यावर आणण्याच्या, जहाजात भरण्याच्या किंवा एका जहाजातून दुसऱ्या जहाजात भरण्याच्या प्रयोजनासाठी बंदराच्या हदीमध्ये किंवा त्या हदीच्या पलीकडे – मग ते क्षेत्रीय जलधीमध्ये (Territorial waters) असो किंवा अन्यथा असा वापर करण्यासाठी असलेली जहाजे, खेच्होडया (Tugs), होडया, पडाव आणि लॉचेस (Launches) व लाईटर (Lighter) ;

(झ) बंदराच्या ठिकाणी पाणीपुरवठा करण्यासाठी नलिकाकूप खोदणे आणि साधनसामग्री बसवणे, होडया, पडाव आणि उपकरणे यांची निगा व वापर ;

(ज) आग विझवण्यासाठी आवश्यक असलेले आगीचे बंब व इतर उपयंत्रे ;

(ट) खाडयासह, समुद्र किनाऱ्याला लागून असलेली जमीन ;

उपकरणांची
तरतुद
करण्याचा
मंडळाचा

(ठ) तरी (Ferry boats), व बंदरांच्या ठिकाणी आणि बंदरांच्या दरम्यान तर- सेवा (Ferry Service), चालवण्याशी संबंधित असलेली इतर बांधकामे व साधनसामग्री ;

(ड) जलविषयक अभ्यास करण्यासाठी प्रतिमाने (Models) व नकाशे तयार करणे ;

(ढ) जहाजे, खेचबोटी, नौका, यंत्रसामग्री किंवा इतर उपकरणे यांच्या दुरुस्तीचे किंवा संधारणाचे काम करण्यासाठी सुक्या गोद्या, जहाजबांधणी अगर दुरुस्तीच्या जागा (Slipways), बोट-बेसिन्स (Boat basins) आणि कर्मशाळा ;

२६. (१) मंडळ आणि कोणतीही व्यक्ती यांच्यामध्ये परस्पर संमत होतील अशा अटींवर शर्तीवर, मंडळाला संबंधित व्यक्तीच्या वतीने कोणतेही काम किंवा सेवा किंवा कोणत्याही वर्गातील कामे किंवा सेवा पार पाडण्यासाठी हाती घेता येतील.

अधिकार.

(२) मंडळ आणि कोणतीही व्यक्ती यांच्यामध्ये परस्पर संमत होईल अशा जास्तीत जास्त तीन महिन्यांच्या कालावधीसाठी आणि अशा अटींवर व शर्तीवर, मंडळाची कोणतीही जहाजे किंवा उपकरणे किंवा त्यांच्या कोणत्याही कर्मचाऱ्यांच्या सेवा संबंधित व्यक्तीला उसन्या देणे लोकहिताच्या दृष्टीने आवश्यक किंवा इष्ट आहे असे मंडळाला वाटले तर त्याला तसे करता येईल.

२७. (१) या अधिनियमाच्या तरतुदीअन्यथे कोणत्याही बंदराच्या किंवा बंदर पोचमार्गाच्या ठिकाणी वाहतुकीच्या उभारण्यात आलेली कोणतीही गोदी, धक्का, मालधक्का, बंदर धक्का, स्टेज, लहान धक्का किंवा पूल धक्का यांचे काम, सागरी वाहतुकीच्या जहाजांमधील व जहाजांवर, माल किंवा उतारू घेण्यासाठी, उतरवण्यासाठी जहाजांना गोद्या, मालधक्कके इत्यादीचा वापर करण्याचा आदेश देण्याचा मंडळाचा असलेल्या पुरेशा वखारी, छपन्या व उपकरणे यांच्या सकट पूर्ण झालेले असेल तेव्हा किंवा चढवण्यासाठी असलेल्या नांगरवाडा वर्गाची यांच्या सकट पूर्ण झालेले असेल तेव्हा मंडळाला सीमाशुल्क समाहरकांची मान्यता मिळवल्यानंतर आणि राजपत्राच्या लागोपाठाच्या तीन अंकात प्रसिद्ध केलेल्या अधिसूचनेह्यारे, अशी गोदी, धक्का, मालधक्का, बंदर धक्का, स्टेज, लहान धक्का किंवा पूल धक्का किंवा नांगरवाडा हा सागरी वाहतुक करणाऱ्या जहाजांमधील व जहाजांवर माल किंवा उतारू घेण्यासाठी, उतरवण्यासाठी आणि चढवण्यासाठी तयार असल्याचे घोषित करता येईल.

अधिकार.

(२) अशा अधिसूचना तिसन्या वेळी प्रसिद्ध झाल्याच्या दिनांकानंतर मंडळाने, वेळोवेळी, अशी गोदी, धक्का, मालधक्का, बंदर धक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा येथे भोकळी जागा असेल तेव्हा बंदरात किंवा बंदराच्या पोचमार्गात असलेल्या सागरी वाहतुकीच्या ज्या कोणत्याही जहाजातून माल किंवा उतारू खाली उतरवण्याचे काम सुरु झालेले नसेल अथवा माल किंवा उतारू घेण्याच्या वेतात असलेले, परंतु, ज्याने तसे करण्यास प्रारंभ केलेला नसेल, त्या जहाजाला माल किंवा उतारू उतरवण्याच्या आणि चढवण्याच्या प्रयोजनासाठी अशी गोदी, धक्का, माल धक्का, बंदर धक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा याच्या लगत आणण्याचा आदेश देणे विधिसंमत असेल :

परंतु असा आदेश देण्यापूर्वी मंडळ, कोणतीही विशिष्ट गोदी, धक्का, मालधक्का, बंदर धक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा यांच्या संबंधात अशा जहाजाची आणि जहाजात माल भरणाऱ्यांची किंवा जहाजातून माल उतरवण्याच्यांची (Shippers) सोय शक्यतोवर विचारात घेईल :

परंतु आणण्यी असे की, मंडळ हे बंदर-संरक्षक नसेल तर मंडळ स्वतः पूर्योक्तप्रमाणे आदेश देणार नाही, तर ते बंदर संरक्षकाला किंवा बंदर संरक्षकाचे हक्क, अधिकार आणि प्राधिकार वापरणाऱ्या अन्य व्यक्तीला असा आदेश देण्यास फर्मावील.

२८. पूर्वोक्तप्रमाणे कोणत्याही बंदराच्या किंवा बंदर पोचमार्गाच्या ठिकाणी पुरेशा संख्येतील त्यांची, जागा पुरेशी धक्कयांची, माल धक्कयांची, बंदर धक्कयांची, स्टेजेसाठी, लहान धक्कयांची किंवा पूल धक्कयांची तस्रूद असेल तर करण्यात आलेली असेल तेव्हा मंडळ सीमाशुल्क समाहाराकाची संमती मिळवल्यानंतर आणि राजपत्राच्या सागरी लागोपाठव्या तीन अंकामध्ये प्रसिद्ध केलेल्या अधिसूचनेद्वारे असा निदेश देऊ शकेल की, मंडळाच्या वाहतुकीच्या मंजुरीने आणि मंडळ विनिर्दिष्ट करील अशा शर्तीनुसार असेल त्या खेरीज एवी, अशा गोद्या, धक्के, माल गोद्या, धक्के, बंदर धक्के, स्टेजेस, लहान धक्के किंवा पूल धक्के यांच्या व्यतिरिक्त लहान बंदरामधील किंवा बंदर माल धक्के, पोचमार्गामधील कोणत्याही ठिकाणी, सागरी वाहतुकीच्या कोणत्याही जहाजावरून किंवा जहाजावर इत्यादीचा कोणताही माल किंवा उतारु उतरवण्यात किंवा चढवण्यात येणार नाहीत.

वापर करणे
सर्वतीचे असणे.

२९. मंडळाने नियुक्त केलेला कोणताही अधिकारी आकस्मिक निकडीच्या बाबतीत किंवा त्याला पुरेसे जहाजांना वाटेल अशा कोणत्याही कारणासाठी, सागरी वाहतुकीच्या कोणत्याही जहाजाच्या अधिपतीला किंवा गोद्या, माल मालकाला किंवा अभिकर्त्याला एक लेखी नोटीस देऊन त्याद्वारे असे जहाज मंडळाच्या मालकीच्या किंवा धक्के, नियंत्रणाखालील कोणत्याही गोदीच्या, धक्कयाच्या, माल धक्कयाच्या, बंदर धक्कयाच्या, स्टेजच्या, लहान धक्कयाच्या, पूल धक्कयाच्या किंवा नांगरवाडयाच्या लगत न आणण्याच्या किंवा तेथून ते जहाज हलवण्याचा आदेश देऊ शकेल आणि अशा नोटिशीचे अनुपालन करण्यात आले नाही तर मंडळाला असे त्यांना तेथून जहाज जोपर्यंत अशा गोदीमध्ये, धक्कयाला, माल धक्कयाला, बंदर धक्कयाला, स्टेजला, लहान धक्कयाला, हलवण्याचा पूल धक्कयाला किंवा नांगरवाडयात राहील, त्या चौपीस तासांच्या प्रत्येक दिवसासाठी किंवा अशा दिवसाच्या आदेश देण्याचा भागासाठी अशा जहाजाच्या संबंधात त्याला योग्य वाटेल अशी एक हजार रुपयांपेक्षा अधिक नसलेली अधिकार. रक्कम आकारता येईल :

परंतु, हलवण्याच्या आदेश देण्यात आलेल्या जहाजाच्या बाबतीत, पूर्वोक्त अशी नोटीस जहाजाच्या अधिपतीवर किंवा मालकावर किंवा अभिकर्त्यावर बजावण्यात आल्यापासून बारा तास समाप्त होईपर्यंत असा आकार लागू होण्यास सुरुवात होणार नाही.

३०. कलम २७ किंवा २८ मध्ये काहीही अंतर्भूत केलेले असले तरी, विवक्षित विनिर्दिष्ट जहाजांना माल धक्के, इत्यादीचा अधिपतीवर किंवा बंदर पोचमार्गातील वापर वाटेल अशी रक्कम मंडळाकडे करण्याच्या भरल्यानंतर आणि अशा शर्तीवर खाली उतरवण्याची किंवा चढविण्याची परवानगी देणे शासनाच्या मते वंदनातून लोकहिताच्या दृष्टीने आवश्यक असेल तर, शासनाला सर्वसाधारण किंवा विशेष आदेशाद्वारे वेळोवेळी तसे जहाजांना सूट करता येईल.

शासनाचा
आवश्यक
अधिकार.

३१. (१) सागरी वाहतुकीची जहाजे नसणाऱ्या जहाजावरून किंवा जहाजावर माल किंवा उतारु घेण्यासाठी, उतरवण्यासाठी किंवा चढवण्यासाठी कोणतीही गोदी, धक्का, माल धक्का, बंदर धक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा सागरी वाहतुकीची जहाजे नसणाऱ्या जहाजांवरून किंवा त्या जहाजांवर, माल किंवा उतारु घेण्यासाठी, उतरवण्यासाठी किंवा चढवण्यासाठी तयार आहे, आणि

जागारी

वाहतुकीच्या

जहाजां-

व्यतिरिक्त

इतर जहाजांनी

गोद्या, धक्के,

इत्यादीचा

वापर करणे

केव्ही सरकारी

असेल ते

मंडळाने

घोषित करणे.

(एक) असे घोषित करू शकेल की, अशी गोदी, धक्का, माल धक्का, बंदर धक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा सागरी वाहतुकीची जहाजे नसणाऱ्या जहाजांवरून किंवा त्या जहाजांवर, माल किंवा उतारु घेण्यासाठी, उतरवण्यासाठी किंवा चढवण्यासाठी तयार आहे, आणि

(दोन) असा निदेश देऊ शकेल की, अशा आदेशात विनिर्दिष्ट करावयाच्या विशिष्ट मर्यादांच्या आत, अशा आदेशात विनिर्दिष्ट केलेल्या कोणत्याही वर्गाच्या सागरी वाहतुकीचे जहाज नसलेल्या जहाजातून अशी गोदी, धक्का, माल धक्का, बंदर धक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा

नांगरवाडा याव्यतिरिक्त अन्य टिकाणी मंडळाच्या स्पष्ट मंजुरीवाचून कोणताही माल किंवा उतारु उतरविणे किंवा चढविणे विधिसंमत असणार नाही.

(२) पोट-कलम (१) मध्ये नमूद केलेला आदेश प्रसिद्ध करण्यात आल्याच्या दिनांकापासून अशा कोणत्याही वर्गाच्या जहाजाने मंडळाची परवानगी न घेता,-

(एक) कोणताही माल किंवा प्रवासी यांना, गोदी, धक्का, माल धक्का, बंदर धक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा याव्यतिरिक्त अशा प्रकारे विनिर्दिष्ट केलेल्या हृदीच्या आत असलेल्या जागेत उतरवणे;

(दोन) ते अशा हृदीच्या आत असताना नेहमीच्या ओहोटीच्या खुणेपासून पन्नास यार्ड अंतराच्या आत नांगर टाकणे, बांधून राहणे किंवा उभे राहणे, कायदेशीर असणार नाही.

(३) असा आदेश प्रसिद्ध करण्यात आल्यानंतर अशा कोणत्याही जहाजाने अशा प्रकारे विनिर्दिष्ट करण्यात आलेल्या हृदीच्या आत असताना जर अशा प्रकारे नांगर टाकला; बांधून घेतले किंवा ते उभे राहिले तर मंडळाने जहाजाचा कप्तान, मालक किंवा अभिकर्ता यांना त्यांच्या खर्चने उक्त हृदीतून असा नांगर काढून टाकावयास किंवा जहाज हलवावयास लावणे कायदेशीर असेल.

३२. (१) मंडळाला पुढील सेवा हाती घेण्याचे अधिकार असतील :-

(क) बंदरात असलेली जहाजे आणि मंडळाच्या मालकीचा असलेला किंवा त्याच्या ताब्यात असलेला माल धक्का, पूल धक्का, बंदर धक्का किंवा गोदी यांच्या दरम्यान उतारु किंवा माल उतरवणे, चढवणे, किनाऱ्यावर लावणे, जहाजात भरणे, एका जहाजातून दुसऱ्या जहाजात चढवणे.

(ख) मंडळाच्या आवारात आलेला माल स्वीकारणे, हलवणे, त्याची हलवाहलव करणे, पाठवणे, साठवणे किंवा तो पोचवणे.

(ग) राज्य शासन त्यास योग्य वाटेल त्याप्रमाणे जी साधने ठरवून देईल आणि जे निर्बंध व ज्या शर्ती लादील त्या साधनांच्या सहाय्याने व त्या निर्बंधाच्या व शर्तीच्या अधीनतेने बंदराच्या किंवा बंदराच्या प्रवेशमार्गाच्या हृदीमध्ये प्रवाशांची ने-आण करणे.

(घ) जहाजांना मार्गदर्शन करणे, त्यांचा मार्ग बदलणे, ती नांगरणे, ती पुन्हा नांगरणे, गळ टाकणे, त्यांचे मोजमाप करणे किंवा जहाजाच्या संबंधातील अन्य सेवांची अंमलबजावणी करणे.

(२) जहाजाच्या मालकाने विनंती केली तर मंडळ, जहाजाच्या संबंधातील एक किंवा अनेक सेवा बजावण्याच्या प्रयोजनार्थ मालाचा ताबा घेईल आणि मंडळ विनिर्दिष्ट करील अशा नमुन्यात पावती देईल.

(३) या कलमात काहीही अंतर्भूत असले तरी, मंडळास, मान्य करण्यात येतील अशा अटी व शर्तीवर पोट-कलम (१) मध्ये नमूद केलेल्या सेवांपैकी कोणतीही सेवा पार पाडण्यासाठी कोणत्याही व्यक्तीला प्राधिकृत करता येईल.

(४) पोट-कलम (३) अन्वये प्राधिकृत करण्यात आलेली कोणतीही व्यक्ती अशा सेवेसाठी कलम ३७, ३८ किंवा ४० अन्वये तयार करण्यात आलेल्या श्रेणीनुसार आकारावयाच्या रकमेहून अधिक रकम आकारणार नाही किंवा वसूल करणार नाही.

(५) कोणतीही व्यक्ती, मालकाने मालाच्या संबंधात अशा सेवेपैकी कोणतीही सेवा बजावणे आवश्यक केल्यास अशी कोणतीही सेवा बजावील आणि त्यासाठी मालाचा ताबा घेईल आणि मंडळ विनिर्दिष्ट करील अशा नमुन्यात पावती देईल.

(६) अशा कोणत्याही व्यक्तीची तिने ज्या मालाचा ताबा घेतला आहे तो माल गहाळ होणे, नष्ट होणे किंवा त्याचा न्हास होणे याबदलची जबाबदारी, या अधिनियमाच्या इतर तरतुदीस अधीन राहून, संविदा अधिनियम, १८७२ च्या कलम १५१, १५२ आणि १६१ अनुसार असलेल्या निष्क्रेपग्राहीची असेल.

(७) कोणत्याही मालाचा ताबा घेतल्यानंतर आणि या कलमानुसार त्याबद्दलची पावती देण्यात आल्यानंतर अशा माल कोणत्याही प्रकारे गहाळ झाला किंवा त्याचे कोणतेही नुकसान झाले तर त्या बद्दलची कोणतीही जबाबदारी ज्या व्यक्तीला पावती दिली आहे किंवा ज्याच्या जहाजातून माल उतरवला आहे किंवा दुसऱ्या जहाजात चढवला आहे त्या कप्तानावर किंवा मालकावर असणार नाही.

३३. (१) या अधिनियमाच्या तरतुदीच्या अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार आलेल्या मालाच्या बाबतीत भारतीय रेल्वे अधिनियम, १८९० च्या तरतुदीनुसार होण्याबद्दलची अथवा त्याचा झास होण्याबद्दलची मंडळाची जबाबदारी, -

१८९० चा १. (एक) रेल्वेने आलेल्या मालाच्या बाबतीत भारतीय रेल्वे अधिनियम, १८९० च्या तरतुदीनुसार होण्याबद्दलची अथवा त्याचा झास होण्याबद्दलची मंडळाची जबाबदारी, -

१८७२ चा १. (दोन) इतर बाबतीत, भारतीय संविदा अधिनियम, १८७२ च्या कलम १५२ मधील “कोणत्याही विशेष संवितेच्या अभावी” हे शब्द वगळता त्या अधिनियमाच्या कलम १५१, १५२ आणि १६१ अन्वये असलेल्या निक्षेपग्राहीची असेल :

परंतु, या कलमाखालील कोणतीही जबाबदारी,—

(क) कलम ३२ च्या पोट-कलम (२) मध्ये नमूद केलेली पावती मंडळाने दिली असल्याखेरीज; आणि

(ख) विनियमाद्वारे विहित करण्यात येईल अशा मंडळाने अशा मालाचा ताबा घेतल्याच्या दिनांकापासूनचा कालावधी संपत्त्यानंतर, मंडळावर असणार नाही.

(२) मंडळाने ज्या मालाचा ताबा घेतला आहे त्या मालाच्या बाबतीत, मंडळाने कलम ३२ च्या पोट-कलम

(२) अन्वये अशा मालाचा ताबा ज्या दिनांकाला घेतला आहे त्या दिनांकापासून यांसंबंधात करण्यात आलेल्या विनियमाद्वारे विहित करण्यात येईल अशा कालावधीच्या आत तो माल गहाळ होण्याबद्दलची किंवा त्याचे नुकसान झाल्याबद्दलची नोटीस दिली गेली असल्याखेरीज, मंडळ, अशा प्रकारे माल गहाळ अथवा नष्ट होण्याबद्दल किंवा त्याचा झास होण्याबद्दल किंवा त्याचे नुकसान होण्याबद्दल कोणत्याही प्रकारे जबाबदार राहणार नाही.

३४. (१) ज्या बाबतीत सीमाशुल्क समाहृत्याने अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार सीमाशुल्क आकारण्यासाठी कोणतीही गोदी, धक्का, मालधक्का, बंदरधक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का, नांगरवाडा, वर्खार, टपरी किंवा वर्खारीचा कोणताही भाग किंवा या अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार कोणत्याही बंदरावर रोखून ठेवलेली एखादी टपरी सागरी वाहतूक करण्याच्या जहाजांना किनान्याला लागण्यासाठी किंवा माल जहाजात भरण्यासाठी किंवा या अधिनियमात प्रथम नमूद करण्यात आलेल्या अर्थातर्गत सीमाशुल्क न दिले जाता तो प्रथम आयात केला गेला आहे तो शुल्क आकारणीयोर्यामाल साठविण्यासाठी असलेली वर्खार मान्य करण्यात आलेली जागा म्हणून निश्चित केली असेल त्या बाबतीत मंडळ अशी गोदी, धक्का, मालधक्का, बंदरधक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा यांवर किंवा त्याच्या आजूबाजूस किंवा अशा वर्खारीमध्ये टपरीमध्ये किंवा तिच्या कोणत्याही भागात आवश्यक असेल त्याप्रमाणे सीमाशुल्क अधिकांशांच्या वापरासाठी एखादी जागा राखून ठेवील आणि तिचे परिरक्षण करील.

सीमाशुल्क अधिनियम, १९६२ अन्वये माल धक्का इत्यादी ठिकाणी नियुक्त करण्यात आलेल्या सीमाशुल्क अधिकांशांची जागेची तरतुद करणे.

(२) पोट-कलम (१) च्या तरतुदीनुसार कोणत्याही बंदरावर कोणतीही गोदी, धक्का, माल धक्का, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का, नांगरवाडा, वर्खार किंवा टपरी किंवा तिच्या कोणताही भाग सीमाशुल्क अधिकांशांच्या बंदरावरील वापरासाठी राखून ठेवला गेला असला तरी, त्यांच्या संबंधात किंवा त्याठिकाणी साठवण्यात आलेल्या मालाच्या संबंधातील या अधिनियमान्वये देय असलेले सर्व दर व आकार मंडळाला किंवा ते घेण्यासाठी मंडळाने नियुक्त केलेल्या अशा व्यक्तीला किंवा व्यक्तीना देय असतील.

बंदराच्या हळीत खाजगी मालधकका उभारण्यास परवानगी असल्याखेरीज आणि मंडळ विनिर्दिष्ट करील किंवा बंदराच्या प्रवेशमार्गाच्या हदीच्या आत कोणताही मालधकका, गोदी, धक्का, बंदरधकका, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का, नांगरवाडा, बांधकाम, खुटवाडा बनवणार नाही, उभारणार नाही किंवा पक्का बसवणार नाही किंवा किंनान्यालगतचा प्रवेश भराव घालून संपादित करणार नाही.

(२) कोणतीही व्यक्ती पोट-कलम (१) चे उल्लंघन करून कोणताही मालधकका, गोदी, धक्का, बंदरधकका, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का, खुटवाडा उभा करील किंवा पक्का बसवील किंवा किंनान्यालगतचा कोणताही प्रदेश भराव घालून संपादित करील त्या व्यक्तीस मंडळ, नोटिशीद्वारे, नोटिशीत विनिर्दिष्ट करण्यात येईल आशा कालावधीत तो काढून टाकण्यास फर्मावील आणि आशा प्रकारे तो मालधकका इत्यादी काढून टाकण्यात त्या व्यक्तीने कसूप केली तर त्या व्यक्तीच्या खर्चाने तो धक्का, इत्यादी काढून टाकण्याची मंडळ व्यवस्था करील.

३६. (१) कलम २८ किंवा कलम ३१ अन्वये प्रसिद्ध करण्यात आलेल्या आदेशाच्या परिणामी खाजगी धक्का कोणत्याही व्यक्तीने पक्का केलेला, बसवलेला किंवा उभारलेला कोणताही मालधकका, गोदी, धक्का, बंदरधकका, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा यांचा वापर करणे हे बेकायदेशीर ठरले असेल तर मंडळ संबंधित व्यक्तीचे म्हणणे ऐकूण घेतल्यानंतर आदेशाद्वारे असा मालधकका, गोदी, धक्का, बंदरधकका, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा बंद करील, काढून टाकील, भरून काढील किंवा नष्ट करील किंवा राज्य शासनाच्या पूर्वमंजुरीने मंडळ निश्चित करील असे पट्टी आणि आकार देऊन त्याचा वापर करण्यास आशा व्यक्तीला परवानगी दर्दील.

(२) पोट-कलम (३) अन्वये अन्यथा तरतुद करण्यात आली असेल ते खेरीजकरून, कोणत्याही नुकसान भरपाई व्यक्तीला पोट-कलम (१) अन्वये काढलेल्या कोणत्याही आदेशामुळे आलेल्या कोणत्याही कथित क्षतीपोटी, नुकसानीबद्दल किंवा हानीबद्दल नुकसानभरपाई मागण्याचा हक्क असणार नाही.

(३) कोणत्याही व्यक्तीने असा कोणताही मालधकका, गोदी, धक्का, बंदरधकका, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का, किंवा नांगरवाडा परवानगी देण्यास सक्षम असलेल्या प्राधिकरणाच्या पूर्व परवानगीने बनवला होता, पक्का बसवला होता किंवा उभारला होता ही गोष्ट मंडळाची खात्री पटेल अशा प्रकारे सिद्ध करण्यात आली तर मंडळ त्या व्यक्तीला भरपाई दर्दील आणि त्या भरपाईची रक्कम यात यापुढे नमूद केलेल्या रीतीने व तत्वानुसार ठरवण्यात येईल ; ती तत्वे पुढीलप्रमाणे :-

(क) मंडळाने तरतुद केलेल्या कोणत्याही मालधकक्याचा, गोदीचा, धक्क्याचा, बंदरधकक्याचा, स्टेजचा, लहान धक्क्याचा, पूल धक्क्याचा किंवा नांगरवाड्याचा वापर करण्याबद्दल अशी व्यक्ती जी कोणतीही पट्टी किंवा इतर आकार भरण्यास पात्र असेल, ती पट्टी किंवा आकार भरपाईची संगणना करताना विचारात घेतले जाणार नाहीत ;

(ख) भरपाईच्या रकमेची परिणामना असा मालधकका, गोदी, धक्का, बंदरधकका, स्टेज, लहान धक्का, पूल धक्का किंवा नांगरवाडा यांच्या बांधकाम खर्चाच्या संदर्भात करण्यात येईल ;

(ग) भरपाईची रक्कम कराराद्वारे निश्चित करणे शक्य असेल त्याबाबतीत ती भरपाई अशा करारानुसार देण्यात येईल ;

(घ) असा कोणताही करार करणे शक्य नसेल त्या बाबतीत, राज्य शासन लवाद म्हणून, उच्च न्यायालयाचा सध्या न्यायाधीश असलेल्या, पूर्वी न्यायाधीश असलेल्या किंवा असा न्यायाधीश म्हणून नियुक्ती केली जाण्यासाठी अहंताप्राप्त असलेल्या व्यक्तींची नियुक्ती करील ;

(ङ) शासनाला, कोणत्याही विशिष्ट प्रकरणामध्ये लवादाने या कलमान्वये निर्णय देणे आवश्यक असलेल्या कोणत्याही प्रश्नांचा निर्णय करताना, लवादास सहाय करण्यासाठी चौकशी

चालू असलेल्या कोणत्याही प्रकरणाशी संबंधित अशा कोणत्याही बाबीचे विशेष ज्ञान असलेल्या व्यक्तीचे नामनिर्देशन करता येईल आणि असे नामनिर्देशन करण्यात येईल त्या बाबतीत, जिला भरपाई द्यावयाची असेल ती व्यक्तीसुधा त्याच प्रयोजनासाठी न्यायसहायकाचे नामनिर्देशन करू शकेल;

(च) लवादापुढे कार्यवाही सुरु होताना, मंडळ आणि जिला भरपाई द्यावयाची ती व्यक्ती आपापल्या मते भरपाईची रास्त रक्कम कोणती ते नमूद करतील;

(छ) विवादाची सुनावणी केल्यानंतर लवाद त्याला न्याय वाटेल अशी भरपाईची रक्कम ठरविणारा निवाडा देईल आणि अशी भरपाई जिला किंवा ज्याना द्यावयाची ती किंवा त्या व्यक्ती विनिर्दिष्ट करील;

(ज) भरपाई मिळण्यास हक्कदार असलेल्या व्यक्तीबाबत किंवा व्यक्तीबाबत विवाद असेल त्या बाबतीत लवाद, अशा विवादाचा निर्णय करील आणि एकापेक्षा अधिक व्यक्ती भरपाई मिळण्यास हक्कदार असल्याचे लवादास आढळून आले तर, तो भरपाईच्या रकमेचे अशा व्यक्तीमध्ये विल्हेवार वाटप करील;

१९९६
चा २६.

(झ) लवाद व समेट अधिनियम, १९९६ यामधील कोणतीही गोष्ट या कलमाखालील लवादांना लागू होणार नाही;

१९०८
चा ५.

(अ) या कलमान्याये नियुक्त केलेल्या लवादाला, या अधिनियमाखालील लवादाची कार्यवाही चालवताना पुढील बाबीच्या संबंधात, दिवाणी न्यायालयाला दिवाणी प्रक्रिया संहिता, १९०८ या अन्याये दाव्यांची न्यायचौकशी करताना जे अधिकार असतात ते सर्व अधिकार असतील; त्या बाबी पुढीलप्रमाणे :—

(एक) कोणत्याही व्यक्तीला समन्स पाठवणे व हजर राहण्याची सक्ती करणे आणि तिची शपथेवर तपासणी करणे;

(दोन) दस्तऐवज शोधून ते सादर करायला लावणे;

(तीन) शपथपत्रांवर पुरावा स्वीकारणे;

(चार) साक्षीदारांच्या किंवा दस्तऐवजांच्या तपासणीसाठी आयोगपत्रे पाठवणे;

(ट) प्रत्येक निवाड्यामध्ये, या कलमाखालील लवादाच्या कार्यवाहीमध्ये करण्यात आलेल्या वादखर्चाची रक्कम आणि तो कोणत्या व्यक्तीना व किंती प्रमाणात द्यावयाचा आहे हे देखील नमूद करण्यात येईल;

(ठ) या कलमान्याये लवादाने दिलेल्या निर्णयामुळे आपल्यावर अन्याय झाला आहे असे वाटणाऱ्या कोणत्याही व्यक्तीला बंदर ज्याच्या अधिकारितेमध्ये असेल त्या उच्च न्यायालयाकडे निवाड्याच्या दिनांकापासून तीस दिवसांच्या आत अपील दाखल करता येईल :

परंतु, अपीलकाराला अपील वेळेवर दाखल करण्यास पुरेशा कारणामुळे प्रतिबंध झाला होता अशी उच्च न्यायालयाची खात्री पटली तर त्याला तीस दिवसांच्या उक्त कालावधी समाप्त झाल्यानंतरही ते अपील विचारार्थ खीकारता येईल.

प्रकरण सहा

बंदरांच्या ठिकाणी पट्टी लावणे व वसूल करणे

३७. (१) बंदराच्या ठिकाणी किंवा बंदराच्या पोचमार्गाच्या ठिकाणी किंवा त्यांच्या संबंधात मंडळ स्वतः किंवा कलम ३२ अन्याये प्राधिकार देण्यात आलेली व्यक्ती, यात याखाली विनिर्दिष्ट करण्यात आलेल्या सेवापैकी कोणत्याही सेवा ज्या पट्टीसाठी व ज्या शर्तीवर पार पाडील त्या पट्टीचे प्रमाण आणि त्या शर्तीचे विवरणपत्र मंडळ वेळोवेळी विनियमांद्वारे तयार करील; त्या सेवा पुढीलप्रमाणे :—

(क) बंदरातील किंवा बंदर पोचमार्गावरील एका जहाजामधून दुसऱ्या जहाजामध्ये उतारु व माल नेणे;

(ख) मंडळाच्या कब्जातील किंवा ताब्यातील कोणताही माल धक्का, बंदर धक्का, लहान धक्का,

मंडळाने किंवा इतर व्यक्तींनी पार पाडलेल्या सेवांबद्दलच्या पट्टीचे प्रमाण.

पूल धक्का, गोदी धक्का, खुंटवाडा (mooring), स्टेज किंवा बांधकाम, जमीन किंवा इमारत या ठिकाणी किंवा या ठिकाणावरून अथवा बंदरांच्या किंवा बंदर पोचमार्गाच्या हड्डीमधील कोणत्याही जागी अशा जहाजातून किंवा अशा जहाजामध्ये, उतारु अथवा माल उतरवणे किंवा चढवणे, किनान्यावर आणणे आणि जहाजात भरणे ;

- (ग) अशा कोणत्याही ठिकाणी होणारे मालाचे यारीभाडे किंवा हमाली ;
- (घ) अशा कोणत्याही ठिकाणी होणारे मालाचे धक्का भाडे, ठेवणाथळ किंवा विलंब आकार ;
- (ङ) भारतीय बंदरे अधिनियमान्वये ज्यांच्यासाठी की आकारणी योग्य असेल अशा जहाजांच्या संबंधातील सेवा वगळता इतर जहाजे, उतारु किंवा माल यांच्या संबंधातील इतर कोणतीही सेवा.
- (२) मालाच्या आणि जहाजाच्या वेगवेगळ्या वर्गासाठी आणि वेगवेगळ्या बंदरासाठी पट्टीचे वेगवेगळे प्रमाण आणि वेगवेगळ्या शर्ती तयार करता येतील.

३८. (१) मंडळाच्या कब्जातील किंवा ताब्यातील कोणत्याही मालमत्तेचा किंवा बंदराच्या किंवा बंदर पोचमार्गाच्या हड्डीमधील कोणत्याही जागेचा, जी पट्टी भरल्यावर आणि ज्या शर्तीवर, यात याखाली विनिर्दिष्ट केलेल्या प्रयोजनासाठी वापर करता येईल त्या पट्टीचे प्रमाण आणि त्या शर्तीचे विवरणपत्र देखील मंडळ वेळोवेळी तयार करील ;

- (क) कोणत्याही बोया (buoy), खुंटवाडा, माल धक्का, बंदर धक्का, पूल धक्का, गोदी, जमीन किंवा पूर्वोक्त जागा याकडे किंवा तेथे किंवा त्याच्या लगत जहाजातून जाणे किंवा नांगर टाकून राहणे ;
- (ख) कोणताही माल धक्का, बंदर धक्का, पूल धक्का, गोदी, जमीन, इमारत, रस्ता, पूल, पोचमार्ग किंवा पूर्वोक्त जागा यांवर उतारुणी किंवा मालाची ने-आण करणारे प्राणी किंवा वाहने यांच्याद्वारे प्रवेश करणे किंवा भाडे घेऊन ती वालवणे ;
- (ग) आयात केलेल्या किंवा निर्यात करण्याचा उद्देश असलेल्या मालाच्या मालकांनी किंवा आगबोट अभिकर्त्यांनी जमीन किंवा छपन्या पट्ट्याने देणे ;
- (घ) मंडळाच्या मालकीच्या किंवा त्याने तरतूद केलेल्या कोणत्याही जमीनीचा, इमारतीचा, कामांचा, जहाजांचा किंवा उपकरणांचा इतर कोणताही वापर.
- (२) मालाच्या आणि जहाजाच्या वेगवेगळ्या वर्गासाठी आणि वेगवेगळ्या बंदरासाठी पट्टीचे वेगवेगळे प्रमाण आणि वेगवेगळ्या शर्ती तयार करता येतील.

३९. मंडळाला, कलम ३७ मध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या कोणत्याही सेवा संयुक्तपणे पुरविण्यासाठी किंवा कलम ३८ मध्ये विनिर्दिष्ट केल्याप्रमाणे मंडळाच्या मालकीच्या किंवा कब्जातील ताब्यातील कोणत्याही मालमत्तेचा वापर करण्याचा कोणताही अधिकार किंवा परवानगी या बरोबर संयुक्तपणे पुरवण्यात येणाऱ्या पट्टी अशा सेवासाठी किंवा सेवासाठी वेळोवेळी पट्टीचे एकत्रिकृत प्रमाण तयार करता येईल.

- ४०.** या प्रकरणाच्या कोणत्याही पूर्ववर्ती तरतुदीअन्वये पट्टीचे प्रमाण तयार करताना मंडळाला,-
- (क) सीमाशुल्क अधिनियम, १९६२ यामधील व्याख्येप्रमाणे असलेल्या आयात केलेल्या मालाव्यतिरिक्त १९६२ अन्य अशा, एका भारतीय बंदरातून दुसऱ्या भारतीय बंदराकडे जहाजातून ने-आण करण्यात येणाऱ्या या ६२. मालाच्या म्हणजेच, किनारी मालाच्या संबंधात कमी पट्टी विहित करता येईल :
 - परंतु, या कलमान्वये कमी पट्टी विहित करताना मंडळ, एक भारतीय बंदर आणि दुसरे तसेच बंदर यांच्यामध्ये भेदभाव करणार नाही ;
 - (ख) विशेष प्रकरणामध्ये इतर मालाच्या संबंधात कमी पट्टी विहित करता येईल.

४१. या प्रकरणांच्या पूर्ववर्ती तरतुदीअन्वये मंडळाने तयार केलेले पट्टीचे प्रत्येक प्रमाण आणि पट्टी व शार्ती
शर्तीचे प्रत्येक विवरण मंजुरीसाठी शासनाकडे सादर करण्यात येईल आणि अशा रीतीने मंजुरी मिळाल्यानंतर यांना राज्य
व मंडळाने राजपत्रात प्रसिद्ध केल्यानंतर ते अंमलात येईल.

यांना राज्य
शासनाची
पूर्वमंजुरी.

४२. (१) शासनास, एक लेखी आदेश काढून त्याद्वारे अंमलात असलेले कोणतेही प्रमाण शासन त्या
आदेशात विनिर्दिष्ट करील त्या कालावधीत रद्द करण्याचा किंवा त्यामध्ये फेरबदल करण्याचा निदेश मंडळास
देणे सार्वजनिक हिताच्या दृष्टीने आवश्यक वाटेल तेव्हा शासन तसा निदेश देऊ शकेल.

पट्टीमध्ये
फेरबदल
करण्यास
किंवा ती
रद्द करण्यास
कमाविण्याचा
राज्य
शासनाचा
अधिकार.

(२) मंडळाने अशा निदेशाचे विनिर्दिष्ट कालावधीत पालन करण्यात कसूर किंवा हयगय केली तर^१
शासनाला असे कोणतेही प्रमाण रद्द करता येईल किंवा त्याला आवश्यक घाटील असे फेरबदल त्यात करता
येतील :

परंतु, कोणतेही प्रमाण अशा प्रकारे रद्द करण्यापूर्वी शासन, मंडळाकडून विनिर्दिष्ट कालावधीत घेण्यात^२
येतील असे कोणतेही आक्षेप किंवा करण्यात येतील अशा कोणत्याही सूचना विचारात घेईल.

(३) या कलमानुसार कोणतेही प्रमाण रद्द करण्यात आलेले असेल किंवा त्यात फेरबदल करण्यात^३
आले असतील तेव्हा शासन ते असे रद्द केल्याचे किंवा त्यात फेरबदल केल्याचे राजपत्रात प्रसिद्ध करील
आणि त्यानंतर ते त्यानुसार अंमलात येईल.

४३. मंडळ, या अधिनियमान्वये अंमलात असलेल्या कोणत्याही पट्टीप्रमाणानुसार कोणताही माल, वाहने पट्टी किंवा
अथवा जहाजे किंवा मालाचा, वाहनाचा अथवा जहाजाचा वर्ग यांच्या संबंधात बसवण्यायोग्य असलेली आकार यांची
कोणतीही पट्टी किंवा कोणताही आकार भरण्याची पूर्ण किंवा अंशतः सूट देऊ शकेल किंवा अशा प्रकारे
बसवलेल्या अशा संपूर्ण पट्टीची किंवा त्याच्या कोणत्याही भागाची सूट देऊ शकेल.

आकार सूट.

४४. मंडळाने लावलेल्या जादा आकाराच्या परताव्यासाठी कोणत्याही व्यक्तीने किंवा तिच्या वतीने,^४
सर्व संबंधित मूळ कागदपत्रांद्वारे यथोचितरित्या पुष्टी देऊन प्रदानाच्या दिनांकापासून सहा महिन्यांच्या आत^५
मागणी दाखल केलेली असल्याखेरीज ती व्यक्ती तो परतावा मिळण्यास हक्कदार असणार नाही :

जादा
आकाराचा
परतावा.

परंतु, मंडळाला कोणत्याही वेळी, त्याच्या देयकांमध्ये लावण्यात आलेल्या जादा आकाराची स्वतः होऊन
सूट देता येईल.

४५. (१) या प्रकरणान्वये बसवण्यायोग्य असलेला कोणताही आकार कमी बसवण्यात आलेला आहे कमी बसव-
किंवा त्याचा चुकीने परतावा देण्यात आलेला आहे याबद्दल मंडळाची खात्री होईल तेव्हा मंडळ, असा आकार लेल्या किंवा
भरण्यास पात्र असलेल्या किंवा जिला चुकीने परतावा देण्यात आलेला असेल त्या व्यक्तीला एक नोटीस चुकीने परतावा
पाठवून, त्या नोटिशीत विनिर्दिष्ट केलेली रक्कम त्या व्यक्तीने का भरू नये याबद्दलचे कारण दाखवण्यास विलेल्या आकाराच्या
त्या व्यक्तीला फर्माऊ शकेल :

चुकीने
परतावा
दिलेल्या
आकाराच्या
प्रदानादावत
नोटीस.

परंतु, अशी कोणतीही नोटीस,-

- (क) आकार कमी बसवण्यात आला असेल तेव्हा आकार भरण्यात आल्याचा दिनांकापासून,
 - (ख) आकाराचा चुकीने परतावा देण्यात आला असेल त्या बाबतीत परताव्याच्या दिनांकापासून,
- तीन वर्ष समाप्त झाल्यानंतर पाठवण्यात येणार नाही.

(२) पोट-कलम (१) अन्यये जिला नोटीस पाठवली असेल त्या व्यक्तीने कोणतेही प्रतिवेदन केलेले असल्यास ते विचारात घेतल्यानंतर, मंडळाला अशा व्यक्तीकडून येणे असलेली रक्कम निर्धारित करता देईल आणि त्यानंतर अशी व्यक्ती अशा प्रकारे निर्धारित केलेली रक्कम भरील.

मालावरील ४६. किनाऱ्यावर आणावयाच्या मालाच्या संबंधातील पट्टी माल किनाऱ्यावर आणल्यानंतर ताबडतोब पट्टी भरण्याची देय असेल आणि मंडळाच्या जागांमधून हलवावयाच्या किंवा निर्यातीसाठी जहाजात भरावयाच्या किंवा एका मुदत जहाजातून दुसऱ्या जहाजात न्यावयाच्या मालाच्या संबंधातील पट्टी माल हलवण्यात येण्यापूर्वी, जहाजात भरण्यात येण्यापूर्वी किंवा एका जहाजातून दुसऱ्या जहाजात नेण्यापूर्वी देय असेल.

पट्टीसाठी ४७. (१) मंडळाने या अधिनियमान्यये कोणत्याही मालाच्या संबंधात बसवण्यायोग्य असलेल्या सर्व मंडळाच्या पट्टीच्या रकमेसाठी आणि ज्यावर किंवा ज्यामध्ये कोणताही माल ठेवण्यात आलेला असेल अशी कोणतीही धारणाधिकार. इमारत, जोती, साठवण्याच्या जागा किंवा इतर जागा यांकरिता मंडळाला देण्यायोग्य असलेल्या भाड्यासाठी मंडळाला अशा मालावर धारणाधिकार असेल आणि अशी पट्टी आणि भाडे याच्या रकमा पूर्णपणे चुकत्या करण्यात येईपर्यंत त्याला तो माल जप्त करून अडकवून ठेवता येईल.

(२) अशा धारणाधिकाराला, सर्वसाधारण सरासरी (general average) आणि वाहणावळ व इतर आकार यांच्यासाठी उक्त मालावर जहाज मालकाचा धारणाधिकार अस्तित्वात असेल आणि कलम ४८, पोट-कलम (१) मध्ये तरतुद केलेल्या रीतीने तो जतन करण्यात आलेला असेल त्या बाबतीत असा पोट-कलम आणि सीमाशुल्क संबंधीच्या, त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या कोणत्याही कायद्यान्यये केंद्र धारणाधिकार आणि सीमाशुल्क संबंधीच्या, त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या कोणत्याही कायद्यान्यये केंद्र सरकारला शास्ती किंवा दंड म्हणून देय असेल त्याव्यतिरिक्त अन्य प्रकारे देय असलेला आणि त्या वेळी अंमलात असलेल्या कोणत्याही कायद्यान्यये शासनाला देय असलेला कोणताही पैसा यांव्यतिरिक्त इतर सर्व धारणाधिकार आणि मागण्या यांवर अग्रक्रम असेल.

वाहणावळ व इतर आकार यासाठी जहाजाचा अधिपती (Master) (१) कोणत्याही जहाजाचा अधिपती (Master) किंवा मालक किंवा त्याचा अभिकर्ता मंडळाच्या मालकीच्या किंवा त्यांच्या ताब्यात असलेल्या कोणत्याही गोदीमध्ये, मालधक्क्यावर, बंदरधक्क्यावर, स्टेजवर, लहान धक्क्यावर, धक्क्यावर, खुंटवड्यावर किंवा पूल धक्क्यावर अशा जहाजातून माल उतरवण्यापूर्वी जर मंडळाला अशी लेखी नोटीस देईल की, अशा नोटीशीमध्ये नमूद करावयाच्या रकमेसाठी असा माल जहाज मालकाला देय असलेली वाहणावळ आणि आकार यासाठीच्या धारणाधिकाराच्या अधीन राहणार आहे, तर असा माल अशा रकमेसाठी अशा धारणाधिकारास पात्र असण्याचे चालू राहील.

(२) अशा धारणाधिकाराची रक्कम यात यापुढे नमूद केलेल्या रीतीने चुकती करण्यात येईपर्यंत तो माल त्या मालाच्या मालकांच्या जोखमीवर व खर्चाने मंडळाच्या अभिक्षेत ठेवून घेण्यात येईल ; आणि अशा मालास हक्कदार असलेल्या व्यक्तीने, तो माल ज्या मुदतीपर्यंत अशा प्रकारे ठेवून घेण्यात येईल त्या मुदतीसाठी गोदामाचे व साठवण-जागेचे भाडे देय असेल.

(३) अशी नोटीस जिने दिलेली असेल किंवा जिच्या वतीने देण्यात आलेली असेल त्या व्यक्तीने करून दिलेला, अशा धारणाधिकाराच्या रकमेची पावती असल्याचे किंवा त्यातून मुक्तता करणार असल्याचे अभिप्रेत असलेला दस्तऐवज, मंडळाने त्या संबंधात नियुक्त केलेल्या कोणत्याही अधिकाऱ्यासमोर सादर करण्यात आल्यानंतर मंडळ अशा दस्तऐवजाच्या खरेपणाच्या बाबतीत पुरेशी काळजी घेतल्यानंतर असा माल हलवण्याची परवानगी देऊ शकेल.

४९. (१) कोणताही माल मंडळाच्या अभिरक्षेत आल्याच्या वेळेपासून दोन महिने समाप्त झाल्यानंतर, किंवा प्राणी आणि नाशिवंत किंवा जोखमीचा माल यांच्याबाबतीत मंडळास योग्य वाटेल त्याप्रमाणे प्राणी किंवा उतरवण्यात आल्यापासून चोवीस तासांपेक्षा कमी नसेल इतका अल्पावधी समाप्त झाल्यानंतर,—
- (क) अशा मालाच्या संबंधात मंडळाला देय असेलेली कोणतीही पट्टी भरण्यात आलेली नसेल तर, किंवा
- (ख) ज्यावर किंवा ज्यामध्ये असा माल साठवून ठेवण्यात आलेला असेल त्या कोणत्याही जागेच्या संबंधात मंडळाला देय असेलेली कोणतीही पट्टी भरण्यात आलेली नसेल तर, किंवा
- (ग) ज्या संबंधीची नोटीस देण्यात आलेली असेल अशा, वाहणावळ किंवा इतर आकार यासाठीच्या कोणत्याही जहाज मालकाच्या धारणाधिकाराची रक्कम चुकती करण्यात आलेली नसेल आणि वाहणावळ किंवा इतर आकार यांसाठी अशा धारणाधिकाराची मागणी करणाऱ्या व्यक्तीने प्राण्याच्या किंवा मालाच्या विक्रीसाठी मंडळाकडे अर्ज केलेला असेल तर,

मंडळाला प्राणी किंवा माल यांची जाहीर लिलाव करून विक्री करता येईल किंवा लेखी नमूद करून ठेवावयाच्या कारणासाठी अशा मालाची किंवा त्यापैकी मंडळाच्या मते आवश्यक असेल इतक्या भागांची, निविदा मागवून, खाजगी करार करून किंवा इतर कोणत्याही रीतीने विक्री करणे मंडळास आवश्यक वाटेल अशा प्रकरणामध्ये त्याप्रमाणे विक्री करता येईल.

(२) अशी विक्री करण्यापूर्वी मंडळ त्याबाबत दहा दिवसांची नोटीस देईल. अशी नोटीस राजपत्रात आणि प्रमुख रथानिक दैनिक वृत्तपत्रापैकी किमान एका वृत्तपत्रात प्रसिद्ध करून देण्यात येईल.

परंतु प्राणी आणि नाशिवंत किंवा जोखमीचा माल यांच्या बाबतीत मंडळ त्याच्या मते प्रकरणाच्या निकडीनुसार योग्य ठरेल इतक्या आणखी कमी मुदतीची आणि तशा रीतीने नोटीस देऊ शकेल.

(३) मालाच्या मालकाचा पत्ता मालाच्या तपशील सूचीमध्ये किंवा मंडळाच्या कब्जात आलेल्या अशा कोणत्याही दस्तऐवजामध्ये नमूद केलेला असेल किंवा अन्य प्रकारे माहीत असेल तर अशा पत्त्यावर पत्र देऊन किंवा डाकेने पाठवून देखील नोटीस देण्यात येईल, परंतु, अशा मालाच्या खन्याखुन्या खरेदीदाराचा मालकी हक्क अशी नोटीस पाठवण्यात न आल्याच्या कारणावरून अवैध ठरवण्यात येणार नाही किंवा नोटीस पाठवण्यात आली आहे किंवा कसे याची चौकशी करणे अशा कोणत्याही खरेदीदारावर बंधनकारक असणार नाही.

(४) या कलमामध्ये काहीही अंतर्भूत केलेले असले तरी, शासन मान्यता देईल अशा वेळी आणि अशा रीतीने नियंत्रित मालाची विक्री करता येईल.

स्पष्टीकरण.—या कलमामध्ये आणि कलम ५० मध्ये “नियंत्रित माल” याचा अर्थ, ज्या मालाची किंमत किंवा विल्हेवाट त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या कोणत्याही कायद्यान्वये विनियमित करण्यात येते तो माल, असा आहे.

५०. (१) या अधिनियमामध्ये काहीही अंतर्भूत केलेले असले तरी उतरवण्यात आल्यानंतर मंडळाच्या अभिरक्षेत ठेवलेला कोणताही माल मालकाने किंवा त्या मालावर हक्क असलेल्या अन्य व्यक्तीने असा माल अभिरक्षेत ठेवण्यात आल्याच्या तारखेपासून एका महिन्याच्या जागेमधून हलवलेला नसेल त्या बाबतीत, मंडळाला, अशा मालकाचा किंवा व्यक्तीचा पत्ता माहीत असेल तर अशा पत्त्यावर पत्र देऊन किंवा डाकेने पाठवून त्या मालकावर किंवा व्यक्तीवर नोटीस बजावण्याची व्यवस्था करता येईल किंवा त्याच्यावर अशा प्रकारे नोटीस बजावता येत नसेल अथवा त्याचा पत्ता माहीत नसेल तर राजपत्रात आणि प्रमुख रथानिक दैनिक वृत्तपत्रापैकी किमान एका वृत्तपत्रात देखील नोटीस प्रसिद्ध करण्याची व्यवस्था करता येईल आणि त्या नोटिशीट्टारे, त्या मालकाला किंवा व्यक्तीला माल ताबडतोब हलवण्यास भाग पाडता येईल आणि नोटिशीचे अनुपालन न केल्यास तो माल जाहीर लिलाव करून किंवा निविदा मागवून, करार करून किंवा इतर कोणत्याही रीतीने विकण्यास योग्य ठरेल असे नोटिशीत नमूद करता येईल:

पट्टी किंवा
भाडे भरण्यात
आले नाही
किंवा
धारणाधि-
काराची
रक्कम चुकती
करण्यात
आली नाही
तर दोन
महिन्यानंतर
मालाची विक्री
करणे.

परंतु, अशा कोणत्याही मालाच्या संबंधात या अधिनियमान्वये देय असेल ती सर्व पट्टी आणि आकार भरण्यात आलेले असतील त्याबाबतीत, माल मंडळाच्या अभिरक्षेत ठेवण्यात आल्याच्या तारखेपासून दोन महिन्याचा कालावधी समाप्त झालेला असल्याखेरीज माल हलवण्यासंबंधीची कोणतीही नोटीस या पोट-कलमान्वये, अशा प्रकारे बजावण्यात येणार नाही किंवा प्रसिध्द करण्यात येणार नाही.

(२) पोट-कलम (१) मध्ये निर्देशिलेली नोटीस असा माल ज्यामधून किनाऱ्यावर आणला होता त्या जहाजाच्या अभिकर्त्त्यावर देखील बजावता येईल.

(३) अशा मालकाने किंवा व्यक्तीने, पोट-कलम (१) अन्वये त्याच्यावर बजावण्यात आलेल्या किंवा प्रसिध्द करण्यात आलेल्या नोटिशीमधील आवश्यक बाबीचे पालन केले नाही तर मंडळाला असा माल त्याच्या अभिरक्षेत ठेवल्याच्या तारखेपासून दोन महिने समाप्त झाल्यानंतर कोणत्याही वेळी त्या मालाचा जाहीर लिलाव करून विक्री करता येईल किंवा लेखी नमूद करून ठेवावाच्या कारणांसाठी अशा मालाची किंवा त्यापैकी मंडळाच्या मते आवश्यक असेल इतक्या भागाची, निविद मागवून, करार करून किंवा इतर कोणत्याही रीतीने विक्री करणे मंडळास आवश्यक वाटेल अशा प्रकरणांमध्ये कलम ४९ च्या पोट-कलम (२) व (३) यांमध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या रीतीने विक्रीची नोटीस दिल्यानंतर त्याप्रमाणे विक्री करता येईल.

(४) पोट-कलम (१) मध्ये किंवा पोट-कलम (३) मध्ये काहीही अंतर्भूत केलेले असले तरी,—

(क) प्राणी आणि नाशिवंत किंवा जोखमीचा माल यांच्या बाबतीत मंडळ, पोट-कलम (१) मध्ये विनिर्दिष्ट केलेला एक महिन्याचा किंवा प्रकरणपरत्वे दोन महिन्यांचा कालावधी समाप्त झालेला नसला तरी असा माल हलवण्याची नोटीस देऊ शकेल किंवा मंडळाच्या मते प्रकरणाच्या निकडीनुसार आवश्यक असेल अशा रीतीने, अशा कमी कालावधीची विक्रीची नोटीस देऊ शकेल ;

(ख) नियंत्रित माल कलम ४९ च्या पोट-कलम (४) च्या तरतुदीनुसार विकता येईल.

(५) राज्य शासनास कोणत्याही मालास किंवा भालाच्या वर्गास या कलमाच्या प्रवर्तनातून सूट देणे लोकहितार्थ आवश्यक वाटले तर ते राजपत्रातील अधिसूचनेद्वारे तसे करील.

५१. (१) कलम ४९ किंवा कलम ५० खालील प्रत्येक विक्रीच्या उत्पन्नाचे उपयोजन पुढील प्रकारे विक्रीच्या उत्पन्नाचे केले जाईल :—

(क) विक्रीच्या खर्चाचे प्रदान करण्यासाठी ;

(ख) कलम ४७ चे पोट-कलम (२) मध्ये, मंडळाच्या धारणाधिकाराच्या प्राथम्यक्रमातून वगळण्यात आलेले धारणाधिकार व हक्कमागण्या यांचे त्यांच्या प्राथम्यक्रमानुसार प्रदान करण्यासाठी ;

(ग) असा माल उत्तरवणे, हलवणे, साठवणे व वखारीत ठेवणे यासाठी लागणाऱ्या आकाराचे व खर्चाचे प्रदान करण्यासाठी आणि त्या मालासंबंधात मंडळाला देय असेले इतर सर्व आकार तसेच माल उत्तरवल्याच्या तारखेपासून चार महिन्यांच्या कालावधीकरिता अशा मालाच्या संबंधात देय असणारा (शिक्षार्थ विलंब आकाराव्यतिरिक्त अन्य) विलंब आकार यांचे प्रदान करण्यासाठी ;

(घ) सीमाशुल्काबाबत त्यावेळी अंमलात असलेल्या कोणत्याही कायद्यान्वये केंद्र शासनाला देय असलेल्या कोणत्याही शास्त्रीये किंवा दंडाचे प्रदान करण्यासाठी ;

(ङ) मंडळाला देय असलेल्या इतर कोणत्याही रकमेचे प्रदान करण्यासाठी.

(२) अधिक झालेले प्रदान, मालाच्या आयातकाराला, मालकाला किंवा माल पाठवणाऱ्याला किंवा त्याच्या एजंटाला, त्याने मालाच्या विक्रीच्या तारखेपासून सहा महिन्यांच्या आंत यासंदर्भात अर्ज केल्यानंतर, परत करण्यात येईल.

(३) पोट-कलम (२) अन्वये कोणताही अर्ज करण्यात आला नाही तर मंडळ या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ त्या अधिक प्रदानाचे उपयोजन करील.

५२. (१) ज्या जहाजाच्या संबंधात या अधिनियमान्वये किंवा त्यानुसार केलेल्या कोणत्याही विनियमान्वये जहाज किंवा आदेशान्वये कोणतीही पट्टी किंवा शास्ती देय असेल, त्या जहाजांच्या मालकाने ती पट्टी किंवा शास्ती मंडळ असे जहाज आणि त्याचा दोरखंड, कापड-चोपड आणि सामान-सुमान किंवा त्यांचा कोणताही भाग अटकावून ठेवील किंवा ताब्यात घेईल आणि मंडळाला देय असलेली रक्कम व जहाज अटकावणीत किंवा ताब्यात असेपर्यंतच्या कालावधीत आणखी देय होईल अशी रक्कम चुकती करेपर्यंत ती अटकावून ठेवील.

(२) उक्त पट्टी किंवा शास्ती अथवा, अटकावणी किंवा ताब्यात घेणे किंवा अडकवून ठेवणे यासाठी येणारा खर्च, यांचा कोणताही भाग अशा अटकावणीनंतर किंवा ताबा घेतल्यानंतर, पुढील पाच दिवसांच्या कालावधीत चुकता करावयाचा राहिला असेल त्याबाबतीत, मंडळ अशा रीतीने अटकावून किंवा ताब्यात घेऊन ठेवलेल्या जहाजाची किंवा इतर वरत्तूंची विक्री करण्याची व्यवस्था करील आणि अशा विक्रीपासून येणाऱ्या उत्पत्तातून अशी पट्टी किंवा शास्ती व खर्च तसेच चुकता न झालेला विक्रीचा खर्च भागवण्यात घेईल य अतिरिक्त रक्कम (काही असल्यास) अशा जहाजाच्या मालकाला, त्याने मागणी केल्यावर सुपूर्द केली जाईल.

५३. बंदरातील कोणत्याही जहाजाला बंदर निकासपत्र देण्याचे काम करणाऱ्या केंद्र शासनाच्या अधिकाऱ्याला, मंडळाने, जर असे नमूद करणारी नोटीस दिली की,-

(एक) त्यात विनिर्दिष्ट केलेली रक्कम या अधिनियमाखाली किंवा आदेशाखाली आकारणीयोग्य असलेल्या पट्टीच्या, दंडाच्या, शास्तीच्या किंवा खर्चाच्या संबंधात अशा जहाजाकडून किंवा अशा जहाजाच्या मालकाकडून किंवा नोकाधिपतीकडून किंवा त्या जहाजावरील मालाकरिता किंवा मालाच्या संबंधात देय आहे ; किंवा

(दोन) त्यात विनिर्दिष्ट केलेली रक्कम, कलम १०० मध्ये उल्लेखिलेल्या नुकसानीच्या संबंधात देय असून ती, तसेच तिच्या वसूलीसाठी दंडाधिकाऱ्यासमोर त्या कलमानुसार केलेल्या कार्यवाहीचा खर्च, वसूल करण्यात आलेला नाही.

तर अशा रीतीने आकारणीयोग्य असलेली किंवा देय असलेली रक्कम चुकती करण्यात घेईपर्यंत किंवा यथास्थित, नुकसानभरपाई व खर्च वसूल केला जाईपर्यंत असा अधिकारी, बंदर निकासपत्र मंजूर करणार नाही.

प्रकरण सात

मंडळाचा कर्ज घेण्याचा अधिकार

५४. (१) मंडळाला शासनाच्या पूर्वमंजूरीने, या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ नियमांद्वारे, शासन विहित करील अशा अटी व शर्तीवर कर्ज उभारता येतील.

(२) मंडळाला, खुल्या बाजारात त्याने काढलेल्या मंडळाच्या कर्ज रोख्यावर कर्जे उभारता येतील अथवा शासनाकडून किंवा शासनाने मान्यता दिलेल्या बँकेकडून कर्ज घेता येतील.

५५. (१) मंडळाला, शासनाच्या मंजूरीने मंडळाचे कर्जरोखे मंडळाने ज्या नमुन्यात काढावयाचे तो मंडळाचे नमुना व ते ज्या पद्धतीने व ज्या शर्तीच्या अधीनतेने हस्तांतरित करावयाचे ती पद्धत व शर्ती विनियमांद्वारे विहित करता येतील.

(२) मंडळाच्या कोणत्याही नमुन्यातील कोणत्याही कर्जरोख्याच्या धारकाला त्याच्या बदल्यात आणि मंडळ वेळोवेळी ठरवील अशा अटीवर, विनियमांद्वारे विहित केलेले अन्य नमुन्यातील कर्जरोखे घेता येतील.

(३) मंडळाच्या कर्जरोख्यांद्वारे मिळविलेल्या पैशांच्या संदर्भात त्या त्या वेळी त्यांचा धारक असलेल्या व्यक्तीना, खटला दाखल करण्याचा अधिकार असेल परंतु, दिनांकाच्या प्राथम्यक्रमानुसार अधिक्रम दिला जाणार नाही.

जहाज
अटकावून
ठेडून पट्टी व
खर्च वसूल
करणे.

पट्टी चुकती
करण्यात
आल्यावर,
नुकसानी
वसूल
करण्यात
आल्यावर,
बंदर निकास
पत्र देणे.

संयुक्तपणे
किंवा पृथकपणे
कर्जरोख्यांचा
आदाता
होण्याचा हक्क.

५६. (१) संविदा अधिनियम, १८७२ याच्या कलम ४५ मध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरीही.—

(क) जेव्हा मंडळाचा एखादा कर्जरोखा दोन किंवा अधिक व्यक्तींना संयुक्तपणे देय असेल तेव्हा त्यांच्यापैकी एक किंवा कोणीही मृत्यु पावल्यास असा कर्जरोखा त्या व्यक्तींच्या मागे हयात असलेल्या एका किंवा अनेक व्यक्तींना देय होईल, आणि

(ख) जेव्हा असा कोणताही कर्जरोखा दोन किंवा अधिक व्यक्तींना पृथकपणे देय असेल तेव्हा त्यांच्यापैकी एक किंवा कोणीही मृत्यु पावल्यास तो कर्जरोखा त्या व्यक्तींच्या मागे हयात असलेल्या एका किंवा अनेक व्यक्तींना किंवा मृत व्यक्तींच्या प्रतिनिधींना किंवा त्यांच्यापैकी कोणालाही देय होईल.

(२) यातील कोणत्याही गोष्टीमुळे, मृत व्यक्तीच्या कोणत्याही प्रतिनिधीने पोट-कलम (१) ज्याला लागू होते अशा कोणत्याही कर्जरोख्यांन्याये किंवा कर्जरोख्यांसंबंधात हयात व्यक्तींच्या किंवा व्यक्तींच्या विरुद्ध केलेल्या कोणत्याही मागणीला बाधा पोचणार नाही.

(३) या कलमाच्या प्रयोजनार्थ, कंपनी अधिनियम, १९५६ खाली किंवा त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या १९५६ अन्य कोणत्याही कायद्याखाली विधिसंस्थापित केलेला किंवा विधिसंस्थापित केल्याचे मानण्यात येणारा कोणताही, निकाय मग तो भारतात असो किंवा भारताबाहेर असो, जेव्हा विसर्जित होईल तेव्हा त्याचे कार्य बंद झाले असल्याचे मानण्यात येईल.

दोन किंवा ५७. जेथे दोन किंवा अधिक व्यक्ती एखाद्या मंडळ कर्जरोख्याच्या संयुक्त धारक असतात तेथे त्या अधिक व्यक्तींपैकी कोणत्याही एका व्यक्तीला अन्य कोणत्याही धारकाने मंडळाला तद्विरुद्ध सूचना दिलेली धारकांचा नसल्यास, अशा कर्जरोख्याच्या संबंधात देय होणाऱ्या कोणत्याही व्याजाबाबत प्रभागी पावती देता येईल.
पावती
देण्याचा
अधिकार.

खुद ५८. परक्राम्य संलेख अधिनियम, १८८१ याच्या कलम १५ मध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, १८८१ कर्जरोख्यावरच पृष्ठांकनाद्वारे हस्तांतरणीय असलेल्या मंडळ कर्जरोख्याच्या बाबतीत याच कर्जरोख्याच्या मागील बाजूस चा २६. पृष्ठांकन करणे, धारकाने स्वाक्षरी करून पृष्ठांकित केलेले असल्याशिवाय कोणतेही पृष्ठांकन वैध ठरणार नाही.

कर्जरोख्यावरील ५९. परक्राम्य संलेख अधिनियम, १८८१ यात काहीही अंतर्भूत असले तरी, कोणतीही व्यक्ती, केवळ १८८१ पृष्ठांकनामुळे त्याच्या तिने एखाद्या कर्जरोख्यावर पृष्ठांकन केले आहे याच कारणावरून त्या कर्जरोख्यासंबंधातील, मुद्दालाची किंवा रक्कमेबाबत व्याजाची देय रक्कम चुकती करण्यास पात्र ठरणार नाही.
दायित्व न घेणे.

कर्जरोख्यावर ६०. (१) मंडळाच्या कर्जरोख्यावर, मंडळाच्या वतीने स्वाक्षरी करण्याचा प्राधिकार असलेल्या व्यक्तींची रक्कमाशीचा रक्कमाशी ही, मंडळ निदेश देईल त्याप्रमाणे, छापण्यात, कोरण्यात, शिलामुद्रित करण्यात किंवा अन्य कोणत्याही दरमा, यांत्रिक प्रक्रियेने उमटवण्यात येईल.

(२) अशा रीतीने छापलेली, कोरलेली, शिलामुद्रित केलेली किंवा उमटवलेली किंवा अन्य प्रकारची स्वाक्षरी ही, जणू काही ती, अशा प्राधिकृत व्यक्तीने आपल्या स्वतःच्या हस्ताक्षरात केल्याप्रमाणे वैध असेल.

६१. (१) जेव्हा मंडळाचा एखादा कर्जरोखा हरवल्याचे, चोरीला गेल्याचे अथवा पूर्णपणे किंवा अंशतः कर्जरोख्याची नष्ट झाल्याचे सांगण्यात येईल आणि एखादी व्यक्ती तो कर्जरोखा हरवला, चोरीला गेला अथवा नष्ट झाला दुसरी प्रत देणे. नसता तर जिला तो देय झाला असता अशी व्यक्ती आपणच असल्याचा दावा करीत असेल तेव्हा त्या व्यक्तीला, मंडळाकडे अर्ज केल्यावर आणि कर्जरोखा हरवल्याबाबत, चोरीला गेल्याबाबत अथवा नष्ट झाल्याबाबत व दाव्याच्या न्यायेबाबत मंडळाचे समाधान होईल अशा प्रकारे पुरावा सादर केल्यावर, आणि विनियमाद्वारे काही फी विहित केली असल्यास ती भरल्यावर मंडळाकडून पुढील बाबतीत आदेश मिळविता येईल :—

(क) अर्जदाराला देय असणाऱ्या कर्जरोख्याची दुसरी प्रत देणे ; आणि

(ख) हरवलेल्या, चोरीस गेलेल्या किंवा नष्ट झालेल्या कर्जरोख्याच्या बाबतीत, त्या कर्जरोख्याची दुसरी प्रत मिळेपर्यंत व्याज प्रदान करणे.

(२) मंडळाने, कर्जरोखा हरवल्याबाबत किंवा चोरीला गेल्याबाबत किंवा नष्ट झाल्याबाबत विनियमाद्वारे विहित केलेल्या रीतीने अधिसूचना काढल्याखेरीज पोट-कलम (१) अन्वये आदेश काढला जाणार नाही.

(३) ज्या कर्जरोख्यांच्या बाबतीत पोट-कलम (१) अन्वये आदेश काढण्यात आला असेल त्यांची यादी मंडळ विनियमाद्वारे विहित करील अशा रीतीने प्रसिद्ध करण्यात येईल.

(४) पूर्णतः हरवल्याचे, चोरीला गेल्याचे किंवा नष्ट झाल्याचे सांगण्यात आलेल्या कोणत्याही कर्जरोख्याच्या बाबतीतील मंडळाच्या दायित्वापासून त्याला या अध्यादेशाच्या तरतुदीअन्वये मुक्त करण्यापूर्वी जर, एखादे वेळी, तो कर्जरोखा सापडला तर या कलमान्वये त्या संदर्भात दिलेला कोणताही आदेश रद्द करण्यात येईल.

६२. (१) मंडळ, ते विनियमाद्वारे विहित करील अशा शर्तीच्या अधीन राहून त्याने काढलेला एक किंवा कर्जरोख्याचे अनेक कर्जरोखे मिळण्याचा हक्क सांगण्याचा व्यक्तीचा अर्ज आल्यावर व ती हक्कमागणी न्याय असल्याची रूपांतरण. खात्री करून घेतल्यानंतर आणि ते विनियमाद्वारे विहित करील अशा रीतीने व कोणतीही फी असल्यास अशी फी भरल्यानंतर पोचपावती दिलेले एक किंवा अनेक कर्जरोखे सुपूर्व करण्यात आल्यावर असा एक किंवा अनेक कर्जरोखे रूपांतरित, एकत्रीकृत किंवा उपविभाजित करील आणि तदनुसार कर्जदाराला एक किंवा अनेक नवीन कर्जरोखे देईल.

(२) पोट-कलम (१) मध्ये निर्देशिलेले रूपांतरण, एकत्रीकरण किंवा पोटविभाजन त्याच किंवा वेगवेगळ्या वर्गांच्या एका किंवा अनेक कर्जरोख्यांमध्ये किंवा एकाच वेगवेगळ्या कर्जामध्ये होईल.

६३. मुदत-मर्यादा अधिनियम, १९६३ यांमध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी मंडळ,—

विशिष्ट प्रकरणामध्ये
मुक्त होण्याबाबत.

१९६३ चा ३६. ते केल्यानंतर, किंवा

(दोन) कलम ६१ अन्वये कर्जरोख्याची दुसरी प्रत देण्यात आल्यानंतर, किंवा

(तीन) कलम ६२ अन्वये रूपांतरण, एकत्रीकरण किंवा पोटविभाजन करून, एक किंवा अनेक नवीन कर्जरोखे दिल्यावर,

मंडळ, त्या कर्जरोख्यांच्या बाबतीतील दायित्वांमधून पुढील प्रकारे मुक्त होईल :—

(क) प्रदानाच्या बाबतीत, ज्या दिनांकाला प्रदान देय होते त्या दिनांकापासून सहा महिन्यांचा कालावधी व्यपगत झाल्यानंतर ;

(ख) कर्जरोख्याच्या दुसर्चा प्रतीच्या बाबतीत, जीमध्ये कर्जरोखा प्रथम नमूद करण्यात आलेला आहे ती सूची कलम ६१ च्या पोट-कलम ३ अन्वये प्रसिद्ध झाल्याचा दिनांक किंवा मूळ कर्जरोख्यावरील व्याज प्रदानाचा शेवटचा दिनांक यांपैकी जो नंतरचा असेल त्या दिनांकापासून सहा महिन्यांचा कालावधी व्यपगत झाल्यानंतर ;

(ग) रुपांतरण, एकत्रीकरण किंवा पोटविभाजन यानंतर देण्यात आलेल्या कर्जरोख्याच्या बाबतीत, असा कर्जरोखा देण्यात आल्याच्या दिनांकापासून सहा वर्षाचा कालावधी व्यपगत झाल्यानंतर.

६४. या अधिनियमान्वये मंडळाने घेतलेली सर्व कर्ज पुढील बाबीवर प्रथम भार असतील :-

मंडळाने घेतलेल्या कर्जाच्या बाबतीतील प्रतिमूळी

(क) पुढील गोष्टी वगळता मंडळाची निहित मालमत्ता किंवा यात यापुढे कर्ज चालू असण्याच्या कालावधीत मंडळाकडे निहित होणारी मालमत्ता :—

(एक) मंडळाकडे पुढीलप्रमाणे बाजूला ठेवलेली कोणतीही रक्कम,—

(१) कोणतेही कर्ज फेडण्यासाठी ठेवलेला कर्जनिवारण निधी ; किंवा

(२) कर्मचाऱ्यांना द्यावयाचे निवृत्तिवेतन ; किंवा

(दोन) मंडळाने स्थापन केलेला भविष्यनिर्वाह किंवा निवृत्तिवेतन निधी ; आणि

(ख) या अधिनियमान्वये मंडळाकडून आकारले जाणारे दर.

६५. शासनाने मंडळाला दिलेल्या कर्जाच्या संबंधात शासनाला, मंडळाने काढलेल्या मंडळ रोख्यांच्या धारकांप्रमाणेच उपाययोजना करता येतील ; आणि अशा कर्जाच्या संबंधात शासनाला अशा मंडळाच्या संबंधातील रोखेधारकांपेक्षा अग्रक्रमाचे मानण्यात येणार नाही :

परंतु, नियत दिनांकापूर्वी घेतलेल्या अशा कोणत्याही कर्जाच्या अटीमध्ये जर अशी स्पष्ट रात्रुद असेल की, कर्जाची परतफेड करताना मंडळाने या कर्जाला इतर सर्व कर्जहून अग्रक्रम द्यावा तर, अशा कर्जाला अग्रक्रम असेल.

६६. मंडळ, शासनाच्या पूर्वमंजूरीने या अधिनियमाच्या तरतुदीनुसार त्याच्याकडे येतील अशा पैशांमधून, दिनांकापूर्वी मंडळाच्या अन्य रोखे धारकांच्या रोख्यांना बाध न येऊ देता वापरात आणता येईल अशी कोणतीही रक्कम, परतफेड करण्यासाठी निश्चित करण्यात आलेला कालावधी पूर्ण झालेला नसला तरी, अशा एखाद्या कर्जाच्या करण्याचे मुहुलापोटी देय राहिलेली कोणतीही रक्कम शासनाला परत करण्यासाठी वापरु शकेल.

अधिकार. परंतु, अशी कोणतीही परतफेड दहा हजार रुपयांहून कमी रकमेची असणार नाही ; आणि अशी परतफेड करण्यात आली असेल तर नंतरच्या प्रत्येक हप्त्यातील व्याजाची रक्कम उर्वरित मुहुलाच्या रकमेवर देय असालेले नेमके व्याज दर्शवू शकेल अशा प्रकारे समायोजित करण्यात आलेली असेल.

६७. (१) कर्जाच्या दिनांकापासून एक वर्ष संपण्याच्या आत ज्या कर्जाची परतफेड करता येत नाही निधी स्थापन अशा, या अधिनियमाखाली मंडळाने उभारलेल्या कर्जाच्या संबंधात जर शासन लेखी आदेशाद्वारे तसे निदेश करणे, देत असले तर मंडळ, शासनाची पूर्वसंमती मिळवली असल्यास ते खेरीजकरून कोणत्याही परिस्थितीत पंचवीस वर्षांहून अधिक नसलेल्या कालावधीत परिसमाप्ती करण्यास पुरेशी रक्कम आपल्या उत्पत्तातून दर सहा महिन्यांनी कर्जनिवारण निधी म्हणून बाजूला ठेवील ; मात्र कोणत्याही परिस्थितीत असा कमाल कालावधी चाळीस वर्षांहून अधिक असणार नाही :

परंतु, कर्जनिवारण निधी स्थापन करण्यासंबंधीच्या अर्थाचा कोणताही करार करण्यात आलेला नसेल तर मंडळाने केंद्र शासन किंवा कोणतेही राज्य शासन यांच्याकडून घेतलेल्या कर्जाच्या संबंधात असा कर्जनिवारण निधी स्थापन करणे आवश्यक असणार नाही.

(२) मंडळ या अधिनियमानुसार ज्या कर्जासाठी जबाबदार आहे अशा कोणत्याही कर्जाच्या बाबतीत एखाद्या प्राधिकरणाने नियत दिनांकापूर्वी जर कोणताही कर्जनिवारण निधी रथापन केला असेल तर, त्या प्राधिकरणाने अशा प्रकारे स्थापन केलेला निधी मंडळाने या कलमान्वये केलेला असल्याचे मानण्यात येईल.

६८. (१) कलम ६७ च्या पोट-कलम (१) अन्वये मंडळाने अशा प्रकारे बाजूला ठेवलेल्या रकमा आणि कर्ज निवारण त्या कलमाच्या पोट-कलम (२) मध्ये निर्देशिलेल्या कोणत्याही कर्जनिवारण निधीचा भाग असलेल्या रकमा गुंतवणूक व सार्वजनिक रोख्यांमध्ये किंवा शासन यासंबंधात मान्य करील अशा अन्य रोख्यांमध्ये गुंतविण्यात येतील आणि वापर. या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ दिशवरत या नात्याने मंडळाकडून त्या धारण केल्या जातील.

(२) मंडळ कर्जनिवारण निधीतील संपूर्ण किंवा काही अंशी रक्कम, ज्या पैशांच्या परतफेडीसाठी निधी स्थापन करण्यात आलेला आहे ते पैसे चुकते करण्यासाठी वापरील :

परंतु, मंडळ संपूर्ण कर्जातून मुक्त होईपर्यंत अशा रीतीने संपूर्णत: किंवा अंशतः वापरलेल्या कर्जनिवारण निधीमुळे अन्यथा जे व्याज मिळाले असते त्या व्याजाएवढी रक्कम दरवर्षी निधीमध्ये जमा करीत राहील.

६९. (१) कोणत्याही कर्जाच्या परिसमापनासाठी स्थापन करण्यात आलेल्या कर्जनिवारण निधी शासन कर्जनिवारण यासंबंधात नियुक्त करील अशा व्यक्तीकडून वार्षिक तपासणी केली जाण्याच्या अधीन असेल आणि अशा निधीची वार्षिक प्रकारे नियुक्त करण्यात आलेली व्यक्ती निधीची रोख रक्कम आणि जमाखाती असलेल्या रोख्यांचे चालू तपासणी बाजारमूल्य, गुंतवणूक नियमित केली गेली असती आणि त्यावर प्रारंभी अंदाज केलेल्या दराने व्याज मिळाले असते तर ते व्याज याप्रमाणे जेवढी रक्कम जमा झाली असती तेवढ्या रकमेएवढे आहे किंवा कसे याबद्दल सुनिश्चिती करील.

(२) पोट-कलम (१) अन्वये कर्जनिवारण निधीची वार्षिक तपासणी करण्यासाठी नियुक्त करण्यात आलेली व्यक्ती जेवढी रक्कम कमी असल्याचे प्रमाणित करील तेवढी तुटीची कोणतीही रक्कम मंडळ, शासनाने क्रमशः पुनर्विनियोजन करण्यासाठी विशेष मंजुरी दिली असल्यास ते खेरीज करून, ताबडतोब कर्जनिवारण निधीमध्ये जमा करील.

(३) कर्जनिवारण निधीच्या जमाखाती असलेली रोख रक्कम आणि रोख्यांचे चालू बाजारमूल्य त्याच्या जमाखाती असणे आवश्यक असलेल्या रकमेहून अधिक असेल तर, पोट-कलम (१) अन्वये नियुक्त करण्यात आलेली व्यक्ती ही जादा रक्कम प्रमाणित करील आणि मंडळ शासनाच्या पूर्वमंजुरीने कलम ६७ अन्यवे आवश्यक असलेली कर्जनिवारण निधीमधील सहामाही वर्गणी कमी करील किंवा बंद करील.

७०. या अधिनियमात अंतर्भूत असलेल्या कोणत्याही गोष्टीमुळे स्थानिक प्राधिकरण कर्जे अधिनियम, अल्पमुदती देयकावर कर्जे उभारण्याचे मंडळाचे अधिकार. अन्यवे कर्ज उभारण्याच्या मंडळाच्या अधिकारावर परिणाम होत असल्याचे मानण्यात येणार नाही.

७१. या अधिनियमात काहीही अंतर्भूत असले तरी मंडळाला,—

(१) तात्पुरत्या अधिकर्षद्वारे किंवा अन्यथा त्याने धारण केलेले रोखे त्याच्या राखीव निधीत ठेवून किंवा मंडळाच्या बँकांमध्ये असलेल्या नियत ठेवीच्या तारणावर पैसे कर्जाऊ घेता येतील ;

(२) शासनाची पूर्वमंजुरी न घेता त्याच्या चालू मत्तांच्या तारणावर किंवा तारणगहाणावर अशा बँकांकडून कर्जाऊ रकमा घेता येतील :

परंतु, असे तात्पुरते अधिकर्ष किंवा इतर कर्जे,—

(क) यांची मुदत कोणत्याही वेळी सहा महिन्यांपेक्षा अधिक असणार नाही ; आणि

(ख) कोणत्याही वर्षात कोणत्याही वेळी अशा अधिकर्षाची किंवा इतर कर्जाची रक्कम शासन या संबंधात निश्चित करील त्याप्रमाणे दहा लाख रुपयांहून कमी नसेल अशा रकमेहून अधिक होत असेल तर, शासनाच्या पूर्व परवानगीशिवाय घेतली जाणार नाहीत :

परंतु, आणखी असे की, अधिकर्षद्वारे किंवा अन्य प्रकारे कर्जाऊ घेतलेल्या सर्व रकमा या अधिनियमाच्या प्रयोजनार्थ खर्च केल्या जातील.

तात्पुरती कर्जे
किंवा अधिकर्ष
काढण्यासंबंधीचे
मंडळाचे
अधिकार.

तात्पुरती कर्जे
किंवा अधिकर्ष
काढण्यासंबंधीचे
मंडळाचे
अधिकार.

इंटरनेशनल
बँक फॉर
रिकॅस्ट्रक्शन
ऑफ़
डेव्हलपमेंट
यांच्याकडून
किंवा इतर
विदेशी
चरित्रांस्थाकडून
येसे कर्जाऊ
घेण्याचा
मंडळाचा
अधिकार.

७२. या अधिनियमात काहीही अंतर्भूत असले तरीकी परंतु त्या त्या वेळी अमलात असणाऱ्या अन्य कोणत्याही कायद्यास अधीन राहून व शासनाच्या पूर्वमंजुरीने व त्या शासनाकडून मान्य करण्यात येतील अशा अटी व शर्तीवर, मंडळास, या अधिनियमाच्या प्रयोजनांसाठी इंटरनेशनल बँक फॉर रिकॅस्ट्रक्शन ऑफ़ डेव्हलपमेंट यांच्याकडून किंवा भारताबाबैरील कोणत्याही देशातील अन्य कोणत्याही बँकेकडून किंवा परिसंस्थेकडून एका किंवा अनेक चलनांच्या स्वरूपात कर्जे घेता येतील आणि कर्जाच्या अटी व शर्तीमध्ये किंवा त्यासाठी शासनाकडून देण्यात आलेल्या मान्यता पत्रांमध्ये अन्यथा तरतूद करण्यात आली असल्या खेरीज, अशा कोणत्याही कर्जाला किंवा अशा कोणत्याही कर्जाच्या संबंधात या प्रकरणातील अन्य कोणतीही तरतूद लागू होणार नाही.

प्रकरण आठ

महसूल व खर्च

मंडळाचा
सर्वसाधारण
निधी.
७३. मंडळाकडे त्याचा स्वतःचा “मंडळाचा सर्वसाधारण निधी” या नावाचा निधी असेल आणि मंडळ तो ठेवील, आणि या अधिनियमाच्या तरतुदींअन्वये मंडळाला किंवा त्याच्या वरीने मिळविण्यात आलेला सर्व पैसा, अनुदान, अर्थसहाय्य, कर्जे आणि आगाऊ रकमा या भागानी तसेच बंदराचा व त्याच्या पोचमार्गाचा संरक्षक म्हणून किंवा भारतीय बंदरे अधिनियम, याच्या कलम २३ अन्वये नियुक्त करण्यात आलेली संस्था म्हणून शासनाकडून मंडळाला मिळालेला सर्व पैसा मंडळाच्या या सर्वसाधारण निधीमध्ये जमा करण्यात येईल.

सर्वसाधारण
निधीमधील
देशाचा वापर.
७४. (१) कलम ७३ अन्वये सर्वसाधारण निधीमध्ये जमा करण्यात आलेल्या पैशाचा वापर मंडळाकडून पुढील खर्च भागविण्यासाठी करण्यात येईल :—

(क) मंडळाकडून घेण्यात किंवा मिळविण्यात आलेल्या किंवा ज्याच्या परतफेडीकी जबाबदारी मंडळावर असेल अशा कोणत्याही कर्जाच्या संबंधातील व्याज व मुद्दाचे हप्ते व अशा कर्जासाठी स्थापन करण्यात आलेल्या कर्जनिवारण निधीला रक्कम प्रदान करणे;

(ख) (एक) मंडळाचा अध्यक्ष व इतर सदस्य ;

(दोन) मंडळाचे कर्मचारी ; व

(तीन) अंशा कर्मचार्यांचे हयात नातेवाईक, कोणतेही असल्यास ;

यांना देय असलेले वेतन, फी, पारिश्रमिक, भत्ते, निवृत्तिवेतन, उपदाने, अनुकंपा भत्ते किंवा इतर रक्कम ;

(ग) केंद्र किंवा राज्य शासन यांच्या कोणत्याही अधिकाऱ्याच्या सेवा मंडळास उसन्या देण्यात आल्या असल्यास, अशा अधिकाऱ्याचे निवृत्तिवेतन किंवा रजा भत्ता यापोटी केंद्र शासन किंवा असे राज्य शासन यांना देय असलेली, कोणतीही असल्यास, अंशदाने ;

(घ) मंडळाकडून स्थापन करण्यात आलेला कोणताही भविष्य निर्वाह निधी किंवा कल्याण निधी किंवा कर्ज किंवा विशेष निधी चालविण्याकरिता व त्याची व्यवस्था पाहण्याकरिता मंडळाने केलेला, कोणताही असल्यास, परिव्यय व खर्च ;

(ङ) या अधिनियमान्वये करण्यात आलेल्या विनियमांद्वारे, खंड (ङ) मध्ये विनिर्दिष्ट करण्यात आलेल्या निधीमध्ये जी अंशदाने देण्याचे यथोचितरीत्या प्राधिकृत करण्यात आले असेल, अशी अंशदाने, कोणतीही असल्यास ;

(च) बंदराच्या, तसेच मंडळाच्या गोद्या, वखारी व इतर मालमत्ता यांच्या संरक्षणासाठी यथारिति राज्य शासन किंवा केंद्र शासन किंवा कोणतेही प्राधिकरण रथ्यापन करील व ठेवील अशा पोलीस दलाच्या किंवा केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा दलाच्या किंवा अन्य कोणत्याही दलाच्या राखण व पहाचाच्या कामासंबंधातील खर्चापोटी मंडळाकडून देय असलेले वाजवी अंशदान म्हणून मंडळ व शासन किंवा केंद्र शासन किंवा अन्य कोणतेही प्राधिकरण, वेळोवेळी मान्य करतील अशा रकमा;

(छ) मंडळाच्या मालकीच्या किंवा मंडळाकडे निहित असलेल्या मालमत्तेच्या दुरुस्तीचा व परिरक्षणाचा खर्च;

(ज) महसुलातून ज्याचा खर्च केला जावा असे मंडळ ठरवील असे, कलम २५ मध्ये विनिर्दिष्ट केलेले कोणतेही नवीन काम किंवा उपकरण यांची अंमलबजावणी व तरतूद यांवरील खर्च;

(झ) कलम २६ अन्वये करण्यात आलेला कोणताही खर्च;

(ञ) सर्वसाधारणत : या अधिनियमाच्या प्रयोजनांसाठी मंडळाकडून करण्यात येईल असा अन्य कोणताही खर्च;

(ट) मंडळाने अर्ज केल्यावरुन किंवा अन्यथा शासनाकडून विशेषकरून मंजूर करण्यात येईल किंवा ज्यासाठी मंडळ, कायदेशीरदृष्ट्या जबाबदार असेल असा अन्य कोणताही खर्च,

(२) पोट-कलम (१) मध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या रीतीने किंवा प्रयोजनासाठी ज्याचा तातडीने वापर करता येत नसेल असा मंडळाच्या खात्यावर जमा असलेला सर्व पैसा, —

११४०
चा ५.
(क) मंडळ ठरवील त्यानुसार भारताच्या स्टेट बँकेमध्ये किंवा बँकिंग कंपन्या (उपक्रमांचे संपादन व हस्तांतरण) अधिनियम, १९७० याच्या कलम २, खंड (ड) मध्ये व्याख्या करण्यात आलेल्या कोणत्याही तत्सम नवीन बँकेमध्ये किंवा राज्य शासनाकडून नियंत्रण व व्यवस्थापन केल्या जाणाऱ्या कोणत्याही महामंडळामध्ये किंवा वित्तीय संस्थेमध्ये जमा करण्यात येईल, किंवा

(ख) मंडळ ठरवील त्यानुसार अशा सार्वजनिक रोख्यांमध्ये गुंतविष्ण्यात येईल व उक्त रोखे या अधिनियमाच्या प्रयोजनांसाठी, मंडळाकडून न्यास म्हणून धारण करण्यात येतील.

७५. शासनाच्या पूर्वमंजुरीने मंडळास, बंदराच्या सर्वसाधारण निधीमध्ये जमा केलेल्या पैशांमधील कोणतीही रक्कम, बंदरवाटाड्याचे वेतन लेखा या नावाचा कोणताही निधी ठेवला असल्यास, अशा विशिष्ट किंवा विनिर्दिष्ट लेख्यामधील कोणतीही तूट भरून काढण्यासाठी उपयोगात आणता येईल किंवा अशा विशिष्ट लेख्यामधील कोणतीही जादा रक्कम संयुर्णपणे किंवा तिचा भाग बंदराच्या सर्वसाधारण निधीमध्ये हस्तांतरित करता येईल.

सर्वसाधारण
निधीमधील
पैसा
विनिर्दिष्ट
लेख्यामध्ये
हस्तांतरित
करणे आणि
त्या उलट
करण्याचा
अधिकार.

७६. मंडळाला वेळोवेळी, त्याच्या अतिरिक्त उत्पन्नामधील त्यास योग्य वाटेल अशी रक्कम, बंदरामधील महसूल निधी विद्यमान सोयी व्यापक करण्याकरिता किंवा नवीन सोयी निर्माण करण्याकरिता किंवा महसुलातील कोणतीही स्थापन करणे, तात्पुरती तूट भरून काढण्याकरिता किंवा तात्कालिक (Transient) कारणामुळे उदभवणारी खर्चातील बाढ भरून काढण्याकरिता किंवा पुनःस्थापनेच्या प्रयोजनाकरिता किंवा आग, वक्रीवादळे, जहाज बुडणे किंवा इतर अपघात यांपासून होणारे नुकसान किंवा हानी भरून काढण्याकरिता किंवा या अधिनियमाखालील मंडळाची नेहमीची कामे करताना उदभवणारी अन्य कोणतीही आकस्मिक निकड दूर करण्याकरिता, एका किंवा अनेक राखीव निधींच्या स्वरूपात बाजूला काढून ठेवता येईल ;

परंतु, अशा एका किंवा अनेक राखीव निधींच्या संबंधात दरवर्षी बाजूला काढून ठेवलेली आणि कोणत्याही वेळी अशा राखीव निधींची जी रक्कम असेल अशी रक्कम, राज्य शासनाने याबाबतीत वेळोवेळी निश्चित केलेल्या रकमेपेक्षा अधिक असणार नाही.

सागरी ७७. (१) या अधिनियमान्वये, मंडळास ज्या गुंतवणुका करण्यास प्राधिकृत करण्यात आले आहे अशा मंडळाचे रोखे कोणत्याही गुंतवणुकीच्या प्रयोजनार्थ मंडळाने, ज्यास, शासनाने संमती दिली आहे अशा कोणत्याही कर्जासाठी त्याच्याकडून काढण्यात यावाचे कोणतेही रोखे राखून ठेवणे व बाजूला काढून ठेवणे, हे कायदेशीर असेल, स्वतःच्या मात्र असे रोखे राखून ठेवण्याचा व ते बाजूला काढून ठेवण्याचा उद्देश हा कर्ज देण्याची शर्त म्हणून गुंतवणुकीसाठी राखून अधिसूचित करण्यात आली असेल.

ठेवण्याचा अधिकार. (२) मंडळाने असे रोखे थेट मंडळाला देणे व त्याच्या नावाने देणे यामुळे असे राखे नष्ट किंवा रद्द होणार नाहीत तर अशा प्रकारे देण्यात आलेला प्रत्येक रोखा हा, जणू काही तो अन्य कोणत्याही व्यक्तीला व तिच्या नावे देण्यात आलेला रोखा असल्याप्रमाणे सर्वथा वैध असेल.

(३) मंडळाने काढलेल्या कोणत्याही रोखाची मंडळाकडून करण्यात आलेली खरेदी किंवा मंडळाकडे करण्यात आलेले हस्तांतरण, अभिहस्तांकन किंवा पृष्ठांकन यांमुळे असा कोणताही रोखा नष्ट किंवा रद्द होणार नाही तर अन्य कोणत्याही व्यक्तीने तो घेतला असल्यास किंवा तिच्याकडे हस्तांतरित, अभिहस्तांकित होणार नाही तर अन्य कोणत्याही व्यक्तीने तो घेतला असल्यास, तो ज्या रीतीने व ज्या मर्यादेपर्यंत वैध व परक्राम्य असतो त्या रीतीने व त्या मर्यादेपर्यंत तो वैध व परक्राम्य असेल.

भांडवलातून ७८. (१) राज्य शासनाच्या पूर्वमंजुरीखेरीज, मंडळ कोणताही खर्च भांडवलातून करणार नाही : खर्च परंतु मंडळास, शासनाकडून विनिर्दिष्ट करण्यात येईल एवढ्या मर्यादेहून अधिक असणार नाही एवढी शासनाची पूर्व रक्कम शासनाकडून लादण्यात येतील अशा शर्तीस अधीन राहून, अशी मंजुरी नसतानाही भांडवलातून खर्च मंजुरी घेणे करता येईल.

(२) भांडवलातून करण्यात यावाचा खर्च म्हणून करण्यात आलेल्या प्रत्यक्ष खर्चाची रक्कम ही याबाबतीत राज्य शासनाने मंजूर केलेल्या खर्चाहून अधिक होत असेल अशा कोणत्याही प्रकरणी, अशी अधिक रक्कम ही अशा प्रकारे मंजूर केलेल्या रकमेच्या दहा टक्क्यांपेक्षा अधिक होत असल्याखेरीज, पोट-कलम (१) मधील कोणत्याही गोष्टीमुळे राज्य शासनाची पुन्हा मंजुरी मिळविणे आवश्यक आहे असे मानले जाणार नाही.

मंडळाची ७९. (१) ज्याचे अंदाजित मूल्य, याबाबतीत शासनाने निश्चित केलेल्या रकमेपेक्षा अधिक होत असेल किंवा असे कोणतेही नवीन काम मंडळ सुरु करणार नाही किंवा किंवा असे कोणतेही उपकरण पुरविणार नाही शासनाची मंजुरी किंवा असे काम किंवा उपकरण यांच्या संबंधातील अंदाजित खर्चाचा आराखडा मंडळाकडे सादर करण्यात येईतोपर्यंत व त्यास मंडळाची मान्यता मिळतोपर्यंत असे कोणतेही नवीन काम किंवा उपकरण यांच्या संबंधात आवश्यक आहे मंडळाकडून कोणताही करार केला जाणार नाही, आणि अशा कोणत्याही नवीन कामावरील किंवा उपकरणावरील अशी कामे. अंदाजित खर्च, याबाबतीत शासनाकडून वेळोवेळी निश्चित करण्यात येईल अशा रकमेहून अधिक होईल पुन्हा मंजुरी घेणे आवश्यक आहे असे मानले जाणार नाही.

(२) प्रत्यक्षात करण्यात आलेला खर्च हा, अशा प्रकारे मंजूर करण्यात आलेल्या अंदाजित खर्चांच्या दहा टक्क्यांपेक्षा अधिक नसेल अशा कोणत्याही प्रकरणी, पोट-कलम (१) मधील कोणत्याही गोष्टीमुळे शासनाची पुन्हा मंजुरी घेणे आवश्यक आहे असे मानले जाणार नाही.

कामाच्या ८०. कलम ७९ मध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरीही, ज्या कामावरील खर्च, त्याबाबतीत शासनाने अंमलबजावणी संबंधातील निश्चित केलेल्या, खर्चांच्या कमाल मर्यादेपेक्षा अधिक होत नसेल तर अशा कामाच्या अंमलबजावणीचा निदेश मुख्य कार्यकारी अधिकारी देऊ शकेल व अशा कामांच्या अंमलबजावणीचा करार करू शकेल परंतु, अशा प्रत्येक प्रकरणी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, शक्य तितक्या लवकर अशा प्रकारे त्याने दिलेल्या निदेशासंबंधात किंवा त्याने केलेल्या करारसंबंधात मंडळास कळवील.

८१. मंडळास, त्याने किंवा त्याच्याविरुद्ध करण्यात आलेला कोणतीही दावा किंवा मागणी किंवा दावे आपसात दाखल करण्यात आलेली कोणतीही कारवाई किंवा वाद, त्यास योग्य वाटेल एवढ्या रकमेच्या किंवा अन्य मिटविण्याचा नुकसानभरपाईच्या मोबदल्यात आपसात मिटवू शकेल किंवा त्यात तडजोड घडवून आणू शकेल.

परंतु, अशा समझोत्यामुळे या बाबतीत शासनाकडून विनिर्दिष्ट करण्यात येईल अशा रकमेहून अधिक रक्कम मंडळाने देणे अपेक्षित असेल तर, त्या बाबतील, शासनाच्या पूर्वमंजुरीखेरीज या कलमान्याये, कोणत्याही समझोता केला जाणार नाही.

८२. (१) मंडळास देय असलेली रक्कम किंवा मंडळाकडून झालेली हानी— मग ती पैशाची असो वा हानीची रक्कम मालमतेची असो— वसूल होण्याजोगी किंवा भरून येण्याजोगी नाही असे मंडळाचे मत असेल त्याबाबतीत, शासनाकडून विनिर्दिष्ट करण्यात येतील अशा शर्तीस अधीन राहून मंडळास, शासनाच्या पूर्वमान्यतेने उक्त रक्कम किंवा हानी अंतिमत: निर्लेखित करण्यास मंजुरी देता येईल.

परंतु, अशी वसूल न होण्याजोगी रक्कम किंवा भरून येण्याजोगी नसलेली हानी ही कोणत्याही व्यक्तिगत प्रकरणी पंचवीस हजार रुपयांपेक्षा अधिक नसेल किंवा कोणत्याही वर्षात एकंदरीत पाच लाख रुपयांपेक्षा अधिक होत नसेल त्याबाबतीत, राज्य शासनाची अशी मान्यता आवश्यक असणार नाही.

(२) पोट-कलम (१) मध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरीही, मंडळास देय असलेली कोणतीही रक्कम किंवा मंडळाकडून झालेली कोणतीही हानी, मग ती पैशाची असो वा मालमतेची असो, वसूल होण्याजोगी किंवा भरून येण्याजोगी नाही असे मुख्य कार्यकारी अधिकाऱ्यांचे मत असेल त्याबाबतीत, तो मुख्य कार्यकारी अधिकारी अशी रक्कम किंवा हानी ही वैयक्तिक प्रकरणामध्ये पाच हजार रुपयांपेक्षा अधिक नसेल तर, किंवा कोणत्याही एका वर्षात एकंदरीत एक लाख रुपयांपेक्षा अधिक होत नसेल तर, अशी रक्कम किंवा हानी निर्लेखित करण्यास मंजुरी देऊ शकेल आणि अशा प्रत्येक प्रकरणी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, अशी मंजुरी देण्याची कारणे देऊन ती बाब मंडळास कळवील.

८३. या अधिनियमाद्वारे प्राधिकृत केलेल्या कामाच्या संबंधातील, असलेले सर्व अधिकार, प्राधिकार व संरक्षक म्हणून निर्बंध हे बंदराचे संरक्षक म्हणून किंवा, भारतीय बंदरे अधिनियम, याचे कलम ३६, पोट-कलम (१) अन्याये मंडळाचे नियुक्त केलेली संस्था म्हणून मंडळाकडून केल्या जाणाऱ्या कामांना लागू होतील आणि तरेच अशी कामे, अधिकार, त्यासाठी लागणारे अंदाज आणि त्याखाली होणारा खर्च यांना द्यावयाच्या मंजुरीबाबतही लागू होतील.

८४. (१) मंडळ, दरवर्षी जानेवारीच्या ३१ तारखेला किंवा तत्पूर्वी एक विशेष बैठक आयोजित करील अर्थसंकल्पीय आणि त्यात मंडळाचा अध्यक्ष, मंडळाच्या उत्पन्नाचे व खर्चाचे पुढील वर्षाचे अंदाजपत्रक, शासन विनिर्दिष्ट अंदाज करील अशा नमुन्यात सादर करील.

(२) अशा अंदाजपत्रकाची एक प्रत, मंडळाच्या प्रत्येक सदस्याला, पोट-कलम (१) मध्ये उल्लेखिलेल्या विशेष बैठकीच्या नियत तारखेपूर्वी किमान पूर्ण दहा दिवस अगोदर मिळेल अशा रीतीने टपालाने किंवा अन्य प्रकारे पाठविण्यात येईल.

(३) मंडळ अशा बैठकीत त्या अंदाजपत्रकावर विचारविनिमय करील आणि त्यास काही फेरफारांसह किंवा फेरफाराविना तात्पुरती मान्यता देईल.

(४) मंडळ, फेब्रुवारी महिन्याच्या दहा तारखेला किंवा तत्पूर्वी, त्याने तात्पुरती मान्यता दिलेल्या अशा अंदाजपत्रकाची एक प्रत शासनाकडे पाठविण्याची व्यवस्था करील.

(५) शासन त्या अंदाजपत्रकाला मंजुरी देईल किंवा त्यावर शेरा लिहून ते परत पाठवील आणि त्यास आवश्यक वाटेल अशी आणखी माहिती मागवील.

(६) पोट-कलम (५) अनुसार अंदाजपत्रक परत पाठविण्यात आल्यास मंडळ त्यावरील शेज्याच्या संदर्भात अंदाजपत्रकावर पुनर्विचार करील आणि शासन मागवील अशी जादा माहिती पुरवील आणि आवश्यकता वाटल्यास त्या अंदाजपत्रकात फेरफार किंवा बदल करील व ते शासनाकडे पुन्हा सादर करील.

(७) शासन, त्या अंदाजपत्रकाला फेरफारासह किंवा फेरफाराविना मंजुरी देईल.

(८) जेव्हा अशा अंदाजपत्रकाला शासनाकडून, ते ज्या वितीय वर्षाचे असेल त्याच्या प्रारंभापूर्वी मंजुरी मिळालेली नसेल तेव्हा, शासन, त्या मंडळाला राज्य शासनाकडून अंदाजपत्रकाची मान्यता कळवण्यात येईपर्यंतच्या काळात, शासनाच्या मते आवश्यक असेल असा खर्च करण्यासाठी मंडळाला प्राधिकृत करील.

८५. शासनाने, ज्या वर्षाकरिता अंदाजपत्रकाला मंजुरी दिली असेल त्या वर्षभराच्या काळात मंडळ अशा वर्षातील पुरवणी उर्वरित काळाकरिता एक किंवा अनेक पुरवणी अंदाजपत्रके तयार करण्याची व्यवस्था करील आणि कलम ८४ च्या तरतुदी, अंदाजपत्रक शक्य असलील तेथेवर, अशा अंदाजपत्रकाला, जणू काही ते मूळ वार्षिक अंदाजपत्रक असल्याप्रमाणे लागू होतील.

८६. शासन या संदर्भात देईल अशा कोणत्याही निवेशाना अधीन राहून, त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या, शासनाने, मान्यता दिलेल्या अंदाजपत्रकात जिचा खर्च प्राधिकृत केलेला आहे आणि जी अशा अपवाद असलेल्या असलेल्या अंमलात असलेल्या मंडळाची कोणत्याही अंदाजपत्रकात समाविष्ट पुनर्विनियोजन, प्रकारे खर्च करण्यात आलेली नाही अशी कोणतीही रक्कम किंवा तिचा भाग याचे, उक्त अंदाजपत्रकात प्राधिकृत केलेल्या कोणत्याही अन्य खर्चातील, कोणतीही जादा रक्कम भागविण्यासाठी मंडळाला कोणत्याही वेळी पुनर्विनियोजन करता येईल.

८७. (१) कलम ८६ च्या तरतुदीना अधीन राहून, शासन त्या संदर्भात निश्चित करील अशा रकमेपेक्षा आणीबाणीच्या परिस्थितीचा अधिक होणारी कोणतीही रक्कम, आणीबाणीची परिस्थिती वगळता एरही ती रक्कम राज्य शासनाकडून अंतिम मंजुरी देण्यात आलेल्या व त्यावेळी अंमलात असलेल्या मंडळाची कोणत्याही अंदाजपत्रकात समाविष्ट केलेली असल्याशिंवाय मंडळाकडून किंवा मंडळाच्यावातीने खर्च केली जाणार नाही.

(२) पोट-कलम (१) अन्यथे त्या संदर्भात निश्चित करण्यात येईल अशा मर्यादेपेक्षा अधिक होणारी रक्कम, मंडळाकडून आणीबाणीच्या परिस्थितीमुळे अशाप्रकारे खर्च करण्यात आली तर, मुख्य कार्यकारी अधिकारी शासनाला ती परिस्थिती ताबडतोब कळवील आणि त्यावरोबरच, असा जादा खर्च भागविण्यासाठी मंडळाने कोणता मार्ग योजलेला आहे त्याचे स्पष्टीकरणही देईल.

८८. (१) मंडळ योग्य लेखे व इतर संबंधित अभिलेख ठेवील व शासन मान्यता देईल अशा नमुन्यात लेखापरीक्षा लेख्यांचे वार्षिक विवरणपत्र व ताळेबंदही तयार करील.

(२) मंडळाच्या लेख्यांची दरवर्षी एकदा लेखापरीक्षा केली जाईल आणि शासनाने आवश्यक केल्यास भारताचे नियंत्रक व महालेखापाल यांच्याशी सल्लामसलत करून शासनाने नियुक्त केलेल्या लेखापरीक्षकाकडून (यात यापुढे ज्याचा उल्लेख “लेखापरीक्षक” असा करण्यात आला आहे) अशा लेख्यांचे संकलन करते वेळीच ही लेखापरीक्षा केली जाईल आणि अशा लेखा परीक्षकाला अशा लेखापरीक्षेसंबंधात मंडळाकडून देय असणारी कोणतीही रक्कम मंडळाच्या सर्वसाधारण निधी लेख्यात खर्च खाती टाकण्यात येईल.

(३) या लेखापरीक्षकाला मंडळाच्या लेखापरीक्षेसंदर्भात, जसे भारताचे नियंत्रक व महालेखापरीक्षक यांना शासकीय लेख्यांच्या लेखापरीक्षेसंबंधात हक्क, विशेषाधिकार व प्राधिकार असतात तसेच हक्क, विशेषाधिकार व प्राधिकार असलील आणि विशेषकरून मंडळाची लेखापुस्तके, संबंधित प्रमाणके व इतर दरतारेवज सादर करण्याची मागणी करण्याचा हक्क असेल.

८९. (१) मंडळाच्या लेख्यांची लेखापरीक्षा आणि तपासणी संपत्त्यानंतर चौदा दिवसांच्या आत, लेखापरीक्षक अहवाल लेखापरीक्षांच्या अहवालाच्या प्रती शासनाला व मंडळाला पाठवील.

(२) शासन, प्रत्येक लेखापरीक्षा अहवाल, ती शासनाला मिळाल्यानंतर शक्य तेवढ्या लवकर राज्य विधानमंडळासमोर किमान तीस दिवसांच्या मुदतीकरिता मांडण्याची व्यवस्था करील.

१०. लेखापरीक्षक, लेखापरीक्षा अहवालामध्ये मंडळाच्या उत्पन्न व खर्चाबाबत निर्दर्शनास आणून देईल लेखापरीक्षा असे दोष व नियमबाब्हा गोष्टी यांवर मंडळ तात्काळ विचार करील, आणि त्यावर मंडळास योग्य वाटेल अशी अहवालात दाखवून दिलेले दोष व नियमबाब्हा बाब्ही मंडळाने दुरुस्त करणे.

११. लेखापरीक्षा अहवालात अंतर्भूत असलेल्या एखाद्या मुद्याबाबत मंडळ व लेखा परीक्षक यांच्यात मंडळ व मतभेद असल्यास आणि लेखापरीक्षकाने अशा मुद्याबाबत काही शिफारशी केल्या असल्यास व त्या स्वीकारणे लेखापरीक्षक व अंगलात आणणे मंडळाला शक्य नसल्यास, ती बाब त्वरित शासनाकडे विचारार्थ पाठविण्यात येईल आणि यांच्यातील मतभेदाबाबत शासन त्यावर अंतिम आदेश काढील व अशा आदेशांची अंमलबजावणी करणे मंडळावर बंधनकारक असेल. शासनाने निर्णय देणे.

प्रकरण नं०

राज्य शासनाचे पर्यवेक्षण व नियंत्रण

१२. (१) दरवर्षी एप्रिलच्या एक तारखेनंतर शक्य तितक्या लवकर आणि शासन यांसंबंधात निश्चित प्रशासनिक करील अशा तारखेच्या आत मंडळ, ३१ मार्च रोजी संपलेल्या आधीच्या वर्षातील बंदरांच्या प्रशासनाचा अहवाल. तपशीलवार अहवाल राज्य शासन निर्देश देईल अशा नमुन्यात शासनाकडे सादर करील.

(२) शासन, प्रत्येक वार्षिक अहवाल, तो शासनाला मिळाल्यानंतर शक्य होईल तितक्या लवकर, कमीत कमी तीस दिवसांच्या मुदतीसाठी राज्य विधानमंडळापुढे ठेवण्याची व्यवस्था करील.

१३. (१) मंडळ दरवर्षी, अनेक वेळा किंवा शासनाने तसे करण्याचा निर्देश दिल्यास आपल्या उत्पन्न य उत्पन्नाची व खर्चाची विवरणपत्रे, शासन निर्देश देईल अशा नमुन्यात व अशा वेळी सादर करील. खर्चाची विवरणपत्रे

(२) अशा सर्व विवरणपत्रांची प्रत जनतेला मंडळाच्या कार्यालयात, कार्यालयीन वेळेत, मंडळ वेळोवेळी राज्य ठरवील अशा प्रत्येक निरीक्षणाकरिता शुल्क भरल्यावर पाहण्यासाठी उपलब्ध होईल. शासनाला सादर करणे.

१४. (१) जर कोणत्याही वेळी, शासनाचे अंसे मत झाले की, —

(क) गंभीर आणीबाणीच्या परिस्थितीमुळे मंडळाला, या अधिनियमाच्या किंवा कोणत्याही अन्य कायद्याच्या तरतुदीद्वारे किंवा अन्यये त्याच्यावर लादलेली कर्तव्ये पार पाडणे शक्य नाही, किंवा

(ख) मंडळाने, या अधिनियमाच्या किंवा अन्य कोणत्याही कायद्याच्या तरतुदीद्वारे किंवा अन्यये त्याच्यावर लादलेली कर्तव्ये पार पाडण्यात सतत कसूर केलेली आहे आणि त्या कसुरीमुळे, मंडळाची आर्थिक स्थिती किंवा बंदरांचे प्रशासन याची मोठी हानी झालेली आहे, तर, शासन, राजपत्रातील अधिसूचनेद्वारे, त्या अधिसूचनेत विनिर्दिष्ट करण्यात येईल अशा, एकावेळी सहा महिन्याहून अधिक नसेल इतक्या कालावधीकरिता, मंडळ निष्प्रभावित करील :

परंतु, खंड (ब) मध्ये नमूद केलेल्या कारणांकरिता या पोट-कलमांच्ये अधिसूचना काढण्यापूर्वी शासन मंडळाला, ते निष्प्रभावित का करण्यात येऊ नये याची कारणे दाखविण्यासाठी वाजवी संधी देईल आणि मंडळाचे काही स्पष्टीकरण व आक्षेप असल्यास, त्यांचा विचार करील.

(२) पोट-कलम (१) अन्यये मंडळाला निष्प्रभावित करणारी अधिसूचना प्रसिद्ध करण्यात आल्यावर,—

(क) मंडळाचे सर्व सदस्य, निष्प्रभावनांच्या तारखेपासून त्या मंडळाचे सदस्य म्हणून धारण केलेली आपली पदे रिक्त करतील ;

(ख) या अधिनियमाच्या किंवा अन्य कोणत्याही कायद्याच्या तरतुदीद्वारे किंवा अन्यथे मंडळाकडून किंवा मंडळाच्या वतीने वापरण्यात येणारे सर्व अधिकार आणि पार पाडली जाणारी सर्व कर्तव्य ही, पोट-कलम (३), खंड (ब) किंवा खंड (क) अन्यथे मंडळाची पुनर्रचना करण्यात येईपर्यंत शासन निदेश देईल अशा (३), खंड (ब) किंवा खंड (क) अन्यथे व्यक्तीकडून किंवा व्यक्तींकडून वापरले जातील किंवा पार पाडली जातील ;

(ग) मंडळाकडे निहित असलेली सर्व मालमत्ता, पोट-कलम (३), खंड (ब) किंवा खंड (क) अन्यथे मंडळाची पुनर्रचना होईपर्यंत शासनाकडे निहित असेल.

(३) पोट-कलम (१) अन्यथे काढलेल्या अधिसूचनेत विनिर्दिष्ट केलेल्या निष्प्रभवनाचा कालावधी समाप्त झाल्यानंतर राज्य शासन,—

(क) निष्प्रभवनाचा कालावधी त्यास आवश्यक वाटेल इतक्या आणखी मुदतीकरिता परंतु, सहा महिन्यापेक्षा अधिक होणार नाही इतक्या मुदतीकरिता वाढवू शकेल, किंवा

(ख) नवीन नेमणुकीद्वारे मंडळाची पुनर्रचना करू शकेल आणि अशा बाबतीत, पोट-कलम (२), खंड (क) अन्यथे आपले पद रिक्त केलेली कोणतीही व्यक्ती नेमणुकीसाठी अनर्ह मानण्यात येणार नाही, किंवा

(क) मंडळाची, त्यास आवश्यक वाटेल इतक्या कालावधीकरिता, नेमणुकीद्वारे पुनर्रचना करू शकेल आणि अशा बाबतीत पोट-कलम (२) खंड (क) अन्यथे आपले पद रिक्त केलेल्या व्यक्ती, वा केवळ त्या मंडळ निष्प्रभावित झाल्याच्या वेळी त्या मंडळाच्या सदस्य होत्या या कारणावरून अशा नेमणुकीसाठी अनर्ह मानण्यात येणार नाहीत :

परंतु, शासन निष्प्रभावनाचा कालावधी समाप्त होण्यापूर्वी कोणत्याही वेळी,— मग तो पोट-कलम (१) अन्यथे विनिर्दिष्ट केलेला मूळचा कालावधी असो किंवा या पोट-कलमान्यथे वाढीव कालावधी असो— या पोट-कलमाच्या खंड (ख) किंवा खंड (ग) अन्यथे कारवाई करू शकेल.

(४) शासन, पोट-कलम (१) अन्यथे काढलेली अधिसूचना व या कलमान्यथे केलेली कार्यवाही आणि अशी कार्यवाही करण्यास भाग पाडणारी परिस्थिती यांच्या संपूर्ण अहवाल शक्य होईल तेवढ्या लवकर राज्य विधानमंडळासमोर मांडण्याची व्यवस्था करील.

मंडळाला
निदेश देण्याचा
राज्य
शासनाचा
अधिकार
संघी दिली जाईल.

१५. (१) या प्रकारणाच्या पूर्ववर्ती तरतुदीना बाधा न येता मंडळ, या अधिनियमाखालील आपली कामे पार पाडताना शासन वेळोवेळी त्याला लेखी देईल अशा धोरणात्मक निदेशाना बांधील राहील :

परंतु, या पोट-कलमान्यथे कोणताही निदेश दिला जाण्यापूर्वी, मंडळाला आपले मत व्यक्त करण्याची संघी दिली जाईल.

(२) एखादा प्रश्न धोरणासंबंधीचा आहे किंवा नाही याबाबतचा शासनाचा निर्णय अंतिम असेल.

प्रकरण दहा

शास्त्री

या १६. या अधिनियमान्यथे मंडळाकडून नियुक्त करण्यात आलेली प्रत्येक व्यक्ती, भारतीय दंड संहितेची १८६० वा ४५, अधिनियमाखालीली नियुक्त कलमे १६१ ते १७१ (दोन्ही धरून), १८४, १८५ आणि ४०९ यांच्या प्रयोजनार्थ आणि लाचलुचपत प्रतिबंध १९८८ करण्यात अधिनियम, १९८८ च्या प्रयोजनार्थ उक्त संहितेच्या कलम २१ च्या अर्थात्तर्गत लोकसेवक असल्याचे चा ४९. आलेल्या व्यक्ती विशिष्ट प्रयोजनार्थ लोकसेवक असणे.

९७. जो कोणी कलम २७, २८ किंवा २९ अन्वये काढलेल्या कोणत्याही आदेशाच्या तरतुदीचे उल्लंघन करील किंवा कलम ३० अन्वये लादण्यास आलेल्या कोणत्याही शर्तीचे अनुपालन करण्यात कसूर करील तो अपराधसिद्धीनंतर पाच हजार रुपयांपर्यंत असू शकेल एवढ्या दंडाच्या शिक्षेस आणि असे उल्लंघन किंवा अशी कसूर करण्याचे चालू राहिल्यास असे उल्लंघन किंवा अशी कसूर ज्या कालावधीत चालू राहिली त्या कालावधीच्या पहिल्या दिवसानंतरच्या प्रत्येक दिवसात पाचशे रुपयांपर्यंत असू शकेल एवढ्या आणखी दंडाची शिक्षेस पात्र ठरेल.

९८. जी कोणतीही व्यक्ती कलम ३५ च्या तरतुदीचे उल्लंघन करील ती व्यक्ती अपराधसिद्धीनंतर पहिल्या उल्लंघनाबदल पाच हजार रुपयांपर्यंत असू शकेल एवढ्या दंडाच्या आणि ज्या कालावधीत उल्लंघन करण्याचे चालू राहिले असेल त्या कालावधीच्या पहिल्या दिवसानंतरच्या प्रत्येक दिवसात पाचशे रुपयांपर्यंत असू शकेल एवढ्या आणखी दंडाच्या शिक्षेस पात्र ठरेल.

परयानगी न
धेता
मालधकका,
बंदरधकका
इत्यादी
उभारण्याबदल
शास्ती.

९९. जी कोणतीही व्यक्ती, कोणत्याही मालाच्या किंवा कोणताही माल वाहून नेणाऱ्या जहाजाच्या संबंधात कायद्याने मंडळास देय असलेल्या पट्टीच्या रकमेचे प्रदान चुकविण्याच्या हेतुने,—

(क) मंडळाच्या कोणत्याही कर्मचाऱ्याला अशी पट्टी ठरविण्यासाठी देण्यात येणाऱ्या कोणत्याही दरस्ताऐवजात अशा मालाचे वजन, परिमाण, किंमत किंवा अशा मालाबाबतचा तपशील किंवा जहाजातील टनभार कमी असल्याचे दर्शवील किंवा त्याबदल चुकीची माहिती देईल, किंवा ;

(ख) असा माल किंवा असे जहाज तेथून हलवील किंवा तेथून हलविण्याचा प्रयत्न करील किंवा तसे करण्यास अप्रेरणा देईल ;

ती व्यक्ती अपराधसिद्धीनंतर पाचशे रुपयांच्या किमान मर्यादेच्या अधीनतेने असा देय पट्टीच्या रकमेच्या दुप्पट असू शकेल इतक्या दंडाच्या शिक्षेस पात्र असेल.

पट्टी,
इत्यादी,
चुकवल्याबदल
शास्ती.

१००. कोणत्याही जहाजांचे मार्गदर्शन व समादेशन करण्याच्या व्यक्तीच्या किंवा अशा जहाजांवर नियुक्त केलेल्या कोणत्याही नाविकांच्या किंवा कोणत्याही व्यक्तीच्या हयगयीमुळे जर कोणतीही गोदी, मालधकका, बंदरधकका, खुंटवाडा, स्टेज, लहान धकका, पूलधकका किंवा मंडळाच्या ताब्यात असलेले कोणतेही बांधकाम किंवा मंडळाच्या मालकीची कोणतीही जंगम मालमत्ता यांना कोणतेही नुकसान पोहोचले असेल तर मंडळाने अर्ज केल्यानंतर अशा नुकसानीबदलची रक्कम वसुलीच्या खर्चासह दंडाधिकाऱ्याच्या अधिपत्रानुसार सक्तीने आणि होड्या, शिडाच्या काळ्या, सुटे भाग, दोन्या, केबल्स, नांगर किंवा अशा जहाजाच्या मालकीच्या वस्तु यांची विक्री करून वसूल करण्यात येईल.

मंडळाच्या
मालमत्तेच्या
नुकसानी
मूल्याची
वसूली.

परंतु, जहाजाच्या अधिपतीवर दंडाधिकाऱ्यापुढे हजर राहण्याबदल रीतसर समन्स बजावण्यात येईपर्यंत आणि जर तो हजर रहात असेल तर त्याची सुनावणी होईपर्यंत कोणताही दंडाधिकारी असे अधिपत्र काढणार नाही ; परंतु आणखी असे की, त्यावेळी ते जहाज मंडळाच्या रीतसर प्राधिकृत केलेल्या कर्मचाऱ्याच्या आदेशाखाली असेल आणि कर्मचाऱ्याच्या आदेशामुळे, कृतीमुळे किंवा त्याच्याकडून अयोग्य प्रकारे एखादी कृती करण्याचे राहून गेल्यामुळे जर नुकसान झाले असेल तर असे कोणतेही अधिपत्र काढले जाणार नाही.

१०१. जी कोणतीही व्यक्ती, ज्यांचे उल्लंघन करण्याबदल स्पष्टपणे कोणतीही तरतुद त्यांमध्ये इतर अपराध करण्यास आलेली नसेल अशा या अधिनियमाखाली कोणत्याही तरतुदीचे किंवा त्याखाली करण्यात आलेल्या कोणत्याही नियमाचे, विनियमाचे किंवा काढण्यास आलेल्या उल्लंघन करील ती अपराधसिद्धीनंतर एक हजार रुपयांपर्यंत असू शकेल एवढ्या दंडाच्या शिक्षेस पात्र असेल.

अपराधाची
दखल.

१०२. महानगर दंडाधिकारी किंवा न्याय दंडाधिकारी प्रथम वर्ग यांच्या दर्जापेक्षा कमी दर्जा असलेले कोणतेही न्यायालय या अधिनियमाखाली किंवा त्याखाली करण्यात आलेल्या कोणत्याही नियम किंवा विनियमाखाली शिक्षापात्र असलेल्या कोणत्याही अपराधाची न्यायचौकशी करणार नाही.

कंपन्यांनी केलेला अपराध १०३. (१) या अधिनियमाखाली अपराध करणारी व्यक्ती जर एखादी कंपनी असेल तर, अपराध ज्यावेळी घडला त्यावेळी कंपनीची प्रभार असणारी आणि कंपनीचे कामकाज चालविण्यास जबाबदार असलेली प्रत्येक व्यक्ती आणि ती कंपनी, अपराधाबदल दोषी असल्याचे मानण्यात येईल आणि तरतुदीनुसार तिच्यावर कार्यवाही केली जाण्यास आणि शिक्षा केली जाण्यास पात्र असेल :

परंतु, अशा व्यक्तीने जर असे सिद्ध केली की, तिला माहीत नसताना असा अपराध घडला आहे किंवा असा अपराध घडू नये म्हणून तिने सर्वप्रकारे योग्य ती खबरदारी घेतली होती तर ती या पोट-कलमात अंतर्भूत असलेल्या कोणत्याही गोष्टीमुळे या अधिनियमात तरतुद करण्यात आलेल्या शिक्षेस पात्र असणार नाही.

(२) पोट-कलम (१) मध्ये काहीही अंतर्भूत असले तरी, ज्याबाबतीत या अधिनियमान्याये, अपराध कंपनीकडून केला गेला असेल आणि असे सिद्ध झाले की, कंपनीचा संचालक, व्यवस्थापक, सचिव, अन्य अधिकारी याच्या संमतीने किंवा त्याने कानाडोळा करण्याने किंवा त्याने हयगय केल्यामुळे असा अपराध घडला असल्याचे सिद्ध झाले असेल त्याबाबतीत, कंपनी त्या अपराधाबदल दोषी असल्याचे समजण्यात येईल आणि तदनुसार ती तिच्याविरुद्ध कार्यवाही व शिक्षा केली जाण्यास पात्र असेल.

स्पष्टीकरण.— या कलमाच्या प्रयोजनार्थ,—

- (क) “कंपनी” याचा अर्थ, निगम निकाय असा असून त्यात व्यवसाय संरक्षा किंवा इतर व्यक्ती संस्थेचा समावेश होतो ;
- (ख) “संचालक” याचा व्यवसाय संस्थेच्या संबंधातील अर्थ, व्यवसाय संस्थेचा भागीदार असा आहे.

प्रकरण अकरा

संकीर्ण

स्थानिक सल्लागार समिती. १०४. (१) शासन, ते वेळोवेळी निश्चित करील त्याप्रमाणे, अशा बंदरांसाठी प्रत्येक प्रकरणी त्यास योग्य वाटेल एवढ्या व्यक्तीचा समावेश असलेली व विहित करण्यात येतील अशा अटी व शर्तीवर एक स्थानिक सल्लागार समिती स्थापन करील.

(२) मंडळ, त्यास योग्य वाटल्यास मंडळापुढे येणाऱ्या कोणत्याही कामकाजाच्या संबंधात आणि शासन सर्वसाधारण किंवा विशेष आदेशाद्वारे यासंबंधात विनिर्दिष्ट करील अशा कामकाजाच्या संबंधात देखील किंवा विनियमांनुसार चर्चा करणे आवश्यक असेल तेहा संबंधित स्थानिक सल्लागार समितीशी अशी चर्चा करील.

(३) भारतीय बंदर अधिनियमान्याये नियुक्त केलेला प्रादेशिक बंदर अधिकारी स्थानिक सल्लागार समितीचा पदसिद्ध अध्यक्ष असेल.

(४) स्थानिक सल्लागार समित्या नियमाद्वारे विहित करण्यात येईल अशा कालांतराने आणि मंडळाचा अध्यक्ष फर्मावील अशा अन्य प्रसंगी तातडीचे कामकाज करण्यासाठी बैठकी घेतील.

(५) स्थानिक सल्लागार समितीच्या बैठकीच्या मणपूर्तीसाठी आवश्यक असलेली सदस्य संस्था, शासन समिती स्थापन करताना विनिर्दिष्ट करील, त्याप्रमाणे असेल.

या १०५. मंडळ किंवा मंडळाचा कोणताही सदस्य किंवा कर्मचारी यांना, त्यांच्यावर कार्यवाही केली अधिनियमाखाली जाण्यासंबंधीची कारणे नमूद करणारी लेखी नोटीस दिल्यानंतर एक महिन्याचा किंवा कार्यवाही केली करण्यात जाण्यासंबंधीचे कारण घडले त्यानंतर सहा महिन्यांचा कालावधी संपेपर्यंत मंडळ किंवा मंडळाचा कोणताही आलेल्या गोष्टीच्या सदस्य किंवा कर्मचारी यांच्याविरुद्ध या अधिनियमाखाली करण्यात आलेल्या गोष्टीच्या किंवा करण्यात आलेली संबंधातील असल्याचे अभिप्रेत असलेल्या कोणत्याही गोष्टीबदल मंडळ किंवा मंडळाचा सदस्य किंवा कोणताही कर्मचारी कार्यवाहीची यांच्याविरुद्ध कोणताही दावा किंवा कार्यवाही सुरु केली जाणार नाही. मुदत गर्यादा.

१०६. हा अधिनियम किंवा त्याखाली करण्यात आलेला कोणताही नियम किंवा विनियम याखाली सदभावनेने सदभावनेने करण्यात आलेल्या किंवा करण्याचा उद्देश असलेल्या कोणत्याही गोष्टींच्या संबंधात किंवा केलेल्या मंडळाच्या मालकीचा असलेला किंवा त्याच्या नियंत्रणाखाली असलेला कोणताही खुंटवडा, पोलादी दोरखंड किंवा कृतीना संरक्षण. किंवा अन्य वरतू यांच्यामधील दोषामुळे झालेल्या कोणत्याही जहाजाच्या नुकसानाच्या संबंधात मंडळ किंवा मंडळाच्या कोणताही सदस्य अथवा कर्मचारी यांच्याविरुद्ध कोणताही दावा किंवा अन्य कार्यवाही दाखल केली जाणार नाही.

१०७. (१) शासनास, राजपत्रातील अधिसूचनेद्वारे, या अधिनियमाची प्रयोजने पार पाडण्यासाठी नियम करता येतील.

(२) विशेषकरून आणि पूर्वगामी अधिकारांच्या सर्वसाधारणेस बाध न येऊ देता पुढीलपैकी सर्व किंवा कोणत्याही बाबीसाठी असे नियम करण्यात येतील :—

(क) मंडळाच्या किंवा त्याच्या समित्यांच्या बैठकीना उपस्थित राहण्यासाठी किंवा कलम १२ अन्यये मंडळाचे कोणतेही काम करण्यासाठी मंडळाच्या किंवा त्याच्या समित्यांच्या सदस्यांना देय असलेली फी आणि भत्ते ;

(ख) कलम १७, पोट-कलम (२) खालील मुख्य कार्यकारी अधिकाऱ्याच्या सेवेच्या अटी व शर्ती ;

(ग) कलम २४ खाली संविदा करण्याची नमुना व रीत ;

(घ) कलम ५४ च्या पोट-कलम (१) अन्यये शासनाच्या पूर्व परवानगीने, मंडळाला ज्या अटी व शर्तीवर कर्जे उभारता येतील अशा अटी व शर्ती ;

(ङ) कलम १०४ च्या पोट-कलम (१) अन्यये स्थानिक सल्लागार समितीचा सदस्य म्हणून व्यक्तींची नेमणूक करण्यासंबंधातील अटी व शर्ती ; आणि

(च) नियमान्यये विहित करावयाची किंवा करता येईल अशी अन्य कोणतीही बाब.

(३) या अधिनियमान्यये केलेले सर्व नियम पूर्वप्रसिद्धीच्या शर्तींच्या अधीन असतील :

परंतु, त्वरित कार्यवाही करणे जीमुळे आवश्यक क्हावे अशी परिस्थिती अस्थित्वात असल्याबद्दल शासनाची खात्री पटली तर, या कलमान्यये करण्यात आलेल्या कोणत्याही नियमाची पूर्वप्रसिद्धी आवश्यक नाही असे मानता येईल.

(४) या अधिनियमान्यये केलेला प्रत्येक नियम तो करण्यात आल्यानंतर शक्य तितक्या लवकर राज्य विधानमंडळाचे अधिवेशन चालू असताना, एकाच अधिवेशनात किंवा लागोपाठव्या दोन अधिवेशनात मिळून, एकूण तीस दिवसांची होईल इतक्या मुदतीकरिता, राज्य विधानमंडळाच्या प्रत्येक सभागृहासमोर ठेवण्यात येईल, आणि ज्या अधिवेशनात तो अशा रीतीने ठेवण्यात आला असेल ते अधिवेशन किंवा त्याच्या लगतनंतरचे अधिवेशन समाप्त होण्यापूर्वी, त्यात कोणताही फेरफार करण्यास दोन्ही सभागृहे सहमत होतील, तर असा निर्णय राजपत्रात अधिसूचित करण्यात येईल आणि अशी अधिसूचना प्रसिद्ध करण्यात आल्याच्या दिनांकापासून, तो नियम केवळ अशा सुधारित स्वरूपातच अंमलात येईल किंवा यथास्थिति, अंमलात येणार नाही. तथापि, अशी कोणतीही सुधारणा किंवा विलोपन यामुळे त्या नियमान्यये त्यापूर्वी करण्यात आलेल्या किंवा करण्याचे वगळण्यात आलेल्या कोणत्याही गोष्टींच्या विधिग्रहतेस बाध येणार नाही.

१०८. मंडळाला शासनाच्या पूर्व परवानगीने या अधिनियमाची प्रयोजने पार पाडण्यासाठी या अधिनियमाशी विनियम करण्याचा अधिकार.

(१) मंडळ किंवा त्याच्या समित्या यांच्या बैठकीच्या वेळा व ठिकाण, अशा बैठकींचे कामकाज चालविताना अनुसारावयाची कार्यपद्धती आणि अशा बैठकीच्या गणपूर्तीसाठी आवश्यक असणारी सदस्य संस्था ;

- (२) त्याच्या अधिकाऱ्यांची व कर्मचाऱ्यांची नेमणूक, बढती, निलंबन, त्यांना सेवेतून काढून टाकणे व बडतर्फ करणे ;
- (३) अधिकाऱ्यांच्या व कर्मचाऱ्यांच्या रजा, रजा भते, निवृत्तीवेतने, उपदाने, अनुकंपा भत्ते आणि प्रवास भत्ते आणि त्यांच्या कल्याणासाठी भविष्यनिर्वाह निधी किंवा अन्य कोणताही निधी स्थापन करणे व तो ठेवणे;
- (४) कलम १९ च्या पोट-कलम (२) अन्वये कोणत्या मुदतीत व कोणत्या पद्धतीने अपिले दाखल करता येतील ती मुदत व पद्धत आणि अशा अपिलासंबंधात निर्णय देण्यासंबंधातील कार्यपद्धती ;
- (५) कलम २०, खंड (च) अन्वये मंडळाचे कर्मचारी होणाऱ्या व्यक्तींच्या सेवेच्या अटी व शर्ती ;
- (६) त्याच्या कर्मचाऱ्यांची नियुक्ती व सेवाशर्ती विनियमित करण्याच्या प्रयोजनासाठी आवश्यक किंवा त्याला आनुषंगिक असणारी व त्या प्रयोजनार्थ आवश्यक असणारी अन्य कोणतीही बाब ;
- (७) कलम ३२ च्या पोट-कलम (२) अन्वये द्यावयाच्या पावतीचा नमुना ;
- (८) कलम ३३ च्या पोट-कलम (२) अन्वये ज्या मुदतीत नोटीस देता येईल ती मुदत ;
- (९) मंडळाने या अधिनियमान्वये नियुक्त केलेल्या व्यक्तींना करावयाचे मार्गदर्शन ;
- (१०) मंडळाने या अधिनियमान्वये बांधलेले किंवा संपादित केलेले किंवा त्याच्याकडे निहित असलेले गोदी धक्के, माल धक्के, बंदर धक्के, लहान धक्के, इमारती व इतर बांधकामे अथवा मंडळाने संपादित केलेली किंवा त्याच्याकडे निहित असलेली कोणतीही जमीन किंवा किनाऱ्यालगतचा प्रदेश याचा सुरक्षित, कार्यक्षम व सोयीस्कर वापर, व्यवस्थापन व नियंत्रण ;
- (११) मंडळ किंवा मंडळाने नियुक्त केलेल्या व्यक्ती यांनीच केवळ करावयाची कामे म्हणजे मंडळाच्या आवासात आणलेल्या मालाची रसीकृती, हमाली, साठवण व तो हलविणे आणि माल उत्तरविण्यात घेण्यापूर्वीच हानी पोचलेल्या किंवा अशी कथित हानी पोचलेल्या मालाचा प्रभार घेण्यासाठी अनुसरावयाची कार्यपद्धती ;
- (१२) बंदर, नदी किंवा नदीचे पात्र किंवा नदीचा किनारा व मंडळाची बांधकामे स्वच्छ ठेवणे आणि त्यात किंवा त्यांवर घाण किंवा कवरा टाकण्यास प्रतिबंध करणे ;
- (१३) या अधिनियमान्वये मंडळाकडून बसविण्यात यावयाची पट्टी प्रदान करण्याची पद्धत ;
- (१४) जेथे जहाजांवरून माल किनाऱ्यांवर आणण्यात येईल व जहाजांवरून पाठविण्यात येईल अशा मंडळाकडे निहित असलेल्या गोद्या, माल धक्के, बंदर धक्के, लहान धक्के, स्टेजेस व पूल धक्के यांचे विनियमन करणे, ते घोषित करणे व त्यांची व्याख्या करणे ;
- (१५) बंदरातील किंवा बंदराच्या पोचमार्गावरील सर्व जहाजांवर ज्या रीतीने व ज्या शर्तीखाली माल चढविण्यात किंवा उत्तरविण्यात घेईल ती रीत व त्या शर्ती यांचे विनियमन करणे ;
- (१६) दोन जहाजांच्या दरम्यान किंवा जहाजांवरून किनाऱ्याकडे किंवा किनाऱ्यावरून जहाजाकडे माल नेता-आणतानाच्या उत्तरणावळीचे विनियमन करणे ;
- (१७) बेशिस्त किंवा अन्य अनिष्ट व्यक्तींना व बेकायदा प्रवेश करणाऱ्या व्यक्तींना मंडळाच्या वास्तूमधून बाहेर घालवणे ;
- (१८) बंदराच्या सुरक्षिततेची सुनिश्चिती करणे ;
- (१९) सर्वसाधारणतः बंदराचे कार्यक्षम व योगरीत्या प्रशासन करणे ;

(२०) मंडळाने काढलेल्या किंवा मंडळाकडून काढण्यात यावयाच्या रोख्यांच्या संबंधातील दस्तऐवजांवर सही करण्यास कोणत्याही व्यक्तीस प्राधिकृत करण्यात आले असल्यास, अशी व्यक्ती व अशा दस्तऐवजांवर निर्गम मुद्रा उमटविण्याची व असे दस्तऐवज अनुप्रमाणित करण्याची पद्धती ;

(२१) मंडळाच्या अशा रोख्यांसंबंधातील व्याज प्रदान करण्याची त्यांची नोंद ठेवण्याची व त्याची पोच देण्याची रीत ;

(२२) ज्या परिस्थितीत व ज्या रीतीने मंडळाच्या रोख्यांचे नूतनीकरण करण्यात येईल ती परिस्थिती व ती रीत ;

(२३) अशा रोख्यांवरील पुढील व्याजाची मागणी होण्यापूर्वी ज्या परिस्थितीत अशा रोख्यांचे नूतनीकरण करणे आवश्यक असेल, ती परिस्थिती ;

(२४) नूतनीकरण, रूपांतरण, एकत्रीकरण किंवा उप-विभाजन करण्यासाठी देण्यात आलेले असे रोखे स्वीकारण्याचा नमुना ;

(२५) रोख्यांच्या दुसऱ्या प्रतीसाठी अर्ज करणाऱ्या व्यक्तीने सादर करावयाचा पुरावा ;

(२६) कलम ६१ च्या पोट-कलम (२) मध्ये उल्लेखिलेली अधिसूचना प्रसिद्ध करण्याची नमूना व रीत, आणि त्या कलमाच्या पोट-कलम (३) मध्ये उल्लेखिलेली सूची प्रसिद्ध करण्याची रीत ;

(२७) पूर्णतः किंवा अंशतः हरवले असल्याचे, चोरीला गेले असल्याचे किंवा नष्ट झाले असल्याचे कथित करण्यात आलेल्या मंडळाच्या ज्या रोख्यांसंबंधीच्या व्याजासाठी किंवा मंडळाच्या रोख्यांच्या दुसऱ्या प्रतीसाठी अर्ज करणाऱ्या व्यक्तीने घावयाच्या क्षतिपूर्तीचे खरुप व रक्कम ;

(२८) ज्यास अधीन राहून मंडळाच्या रोख्यांचे रूपांतर करता येईल, ते एकत्रित करता येतील किंवा त्यांचे उप-विभाजन करता येईल, अशा शर्ती ;

(२९) ज्या रकमांसाठी रोख प्रमाणपत्र देण्यात येईल त्या रकमा ;

(३०) रोख्यांची दुसरी प्रत, नूतनीकरण केलेले रोखे, रूपांतरण केलेले रोखे, एकत्रीकरण व उपविभाजन केलेले रोखे देण्याच्या संबंधातील सर्वसाधारणतः सर्व बाबी ;

(३१) रोख्यांची दुसरी प्रत देण्यासाठी व मंडळाच्या रोख्यांचे नूतनीकरण, रूपांतरण, एकत्रीकरण व उप-विभाजन करण्यासाठी घावयाची फी ;

(३२) रोखा प्रमाणपत्र देण्यासंबंधात आकारण्यात यावयाची फी ;

(३३) विनियमाद्वारे विहित करण्यात येणारी किंवा करता येणारी अन्य कोणतीही बाब :

१०९. (१) या अधिनियमांच्ये मंडळाकडून करण्यात आलेला कोणताही विनियम मंडळाने तो राजपत्रात विनियमांच्या संबंधातील तरतुदी.

(२) या अधिनियमांच्ये करण्यात आलेल्या कोणत्याही विनियमामध्ये, त्याचा भंग झाल्यास अपराधसिद्धीनंतर दोनशे रुपयांपर्यंत असू शकेल एवढ्या रकमेच्या द्रव्यदंडाची शिक्षा होऊ शकेल व असा भंग करण्याचे चालू राहिल्यास, ज्या कालावधीमध्ये असा भंग करण्याचे चालू राहील त्या कालावधीतील, प्रत्येक दिवसाकरिता, पन्नास रुपयांपर्यंत असू शकेल एवढ्या द्रव्यदंडाची शिक्षा होऊ शकेल अशी तरतूद असू शकेल.

१०१. (१) लोकहिताच्या दृष्टीने, कोणतेही विनियम करणे किंवा त्यात सुधारणा करणे आवश्यक आहे असे शासनास वाटल्यास, राज्य शासनास, लेखी आदेशाद्वारे कलम १०८ मध्ये विनिर्दिष्ट करण्यात आलेल्या सर्व किंवा कोणतेही विनियम करण्याचा किंवा राज्य शासन, याबाबतीत विनिर्दिष्ट करील अशा मुदतीच्या आत, कोणत्याही विनियमांमध्ये सुधारणा करण्याचा निदेश मंडळास देता येईल ;

परंतु, शासनास, त्याने विनिर्दिष्ट केलेल्या कालावधीमध्ये, त्यास आवश्यक वाटेल एवढ्या एका किंवा अनेक कालावधीसाठी वाढ करता येईल.

विनियमांच्या
संबंधातील
तरतुदी.

विनियम
करण्याचा,
निवेश
देण्याचा किंवा
विनियम
करण्याचा
राज्य
शासनाचा
अधिकार.

(२) मंडळाने, पोट-कलम (१) मध्ये मुभा दिलेल्या मुदतीमध्ये, अशा निर्देशांचे अनुपालन करण्यात कसूर केल्यास किंवा त्यात हयगय केल्यास शासनास एकत्र निर्देशांमध्ये विनिर्दिष्ट केलेल्या नमून्यात किंवा शासनास योग्य वाटेल अशा सुधारणा त्यामध्ये करून, यथास्थिति, विनियम करता येतील किंवा विनियमांमध्ये सुधारणा करता येतील :

परंतु, विनियम करण्यापूर्वी किंवा त्यामध्ये सुधारणा करण्यापूर्वी, शासन, मंडळाने उक्त मुदतीमध्ये घेतलेली कोणतीही हरकत किंवा केलेली कोणतीही सूचना यांचा विचार करील.

(३) पोट-कलम (२) अनुसार, कोणतेही विनियम करण्यात आले असतील किंवा त्यांमध्ये सुधारणा करण्यात आल्या असतील त्याबाबतीत अशा प्रकारे करण्यात आलेले किंवा सुधारणा करण्यात आलेले विनियम, शासनाकडून, राजपत्रात प्रसिद्ध करण्यात येतील व त्यानंतर ते तदनुसार अंमलात येतील.

पहिले विनियम १११. या अधिनियमामध्ये काहीही अंतर्भूत केलेले असले तरी, या अधिनियमाखालील पहिले विनियम करण्याचा शासनाकडून करण्यात येतील आणि ते राजपत्रात प्रसिद्ध झाल्यानंतर अंमलात येतील.
शासनाचा अधिकार.

विवक्षित ११२. कलम १०८ च्या खंड (१०) ते (११) अन्वये करण्यात आलेल्या विनियमांचा मजकूर व दराचे प्रमाण तसेच मंडळाने प्रकरण राहा खाली तयार केलेले शर्तीचे निवेदन मंडळाकडून मराठी व इंग्रजीमध्ये माल विक्रीविषेण, धक्के, गोदा, पूल धक्के येथे त्या प्रयोजनासाठी ठेवण्यात आलेल्या विशेष फल्ब्यांवर तसेच मंडळाच्या वास्तुमधील इतर सोयीस्कर ठिकाणी ठळकपणे विक्रीविषयात येतील.

शुल्क गोदा करण्यासाठी ११३. अधिनियमातील कोणत्याही गोष्टीमुळे पुढील गोष्टीस बाधा येणार नाही :—
माल धक्के इत्यादी (१) सीमाशुल्क वसूल करण्याचा राज्य शासनाचा अधिकार किंवा मंडळांच्या कब्जातील कोणतीही वापर गोदी, धक्का, माल धक्का, बंदर धक्का, रटेज, लहान धक्का किंवा पूल धक्का या ठिकाणी नगर शुल्क करण्याच्या (टाऊन ड्युटीज) वसूल करण्याचा कोणत्याही नगरपालिकेचा अधिकार ; किंवा शासनाच्या व नगर पालिकांच्या अधिकारांची व्यापृती व सीमाशुल्क अधिकारांची अधिकार किंवा प्राधिकार.
अधिकार.

या ११४. पाण्यावर असताना कोणत्याही बंदराचा वापर करणाऱ्या सर्व विमानांना या अधिनियमांच्या अधिनियमाच्या तरतुदी ज्या रीतीने त्या जहाजांना लागू होतात त्याच रीतीने लागू होतील.
विमानांना लागू होणे.

अडचणी दूर करण्याचा ११५. या अधिनियमाच्या कोणत्याही तरतुदी अंमलात आणताना कोणत्याही अडचणी उद्भवल्यास अधिकार. राज्य शासनास अशी अडचण दूर करण्याच्या प्रयोजनासाठी त्यास आवश्यक किंवा इष्ट वाटेल अशी व या तरतुदीशी विसंगत नसेल अशी कोणतीही गोष्ट सर्वसाधारण किंवा विशेष आदेशाद्वारे करता येईल :

परंतु, अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या तारखेपासून दोन वर्षांचा कालावधी समाप्त झाल्यानंतर असा कोणताही आदेश काढण्यात येणार नाही.

१९०८ चा १९६. भारतीय बंदर अधिनियम, १९०८ हा महाराष्ट्र राज्याला लागू करताना, त्यामध्ये समाविष्ट सन १९०८ चा करण्यात आलेले कलम ५अ वगळण्यात आल्याचे मानण्यात येईल.

अधिनियम
क्रमांक १५
याचे कलम
५ अ वगळणे.

निरसन या व्याकृती १९७. हा अधिनियम कोणत्याही लहान बंदराला लागू केल्यानंतर मुंबई लॉर्डींग व व्हार्फेज फी अधिनियम, १८८२ चा १८८२ हा त्या बंदराच्या संबंधात निरसित होईल :

परंतु, पुढील गोष्टीवर अशा निरसनाचा परिणाम होणार नाही—

(क) अशा रीतीने निरसित केलेल्या अधिनियमाची पूर्वी झालेली अंमलबजावणी किंवा त्याअन्वये यथोचितरीत्या केलेली किंवा चालवून घेतलेली कोणतीही गोष्ट ;

(ख) अशा रीतीने निरसित केलेल्या अधिनियमान्वये संपादन केलेला, उपार्जित केलेला व पत्करलेला कोणताही हक्क, विशेषाधिकार, बंधन किंवा दायित्व ;

(ग) अशा रीतीने निरसित केलेल्या अधिनियमाखालील कोणत्याही अपराधाच्या संबंधात केलेली कोणतीही शास्ती, जप्ती किंवा शिक्षा ; किंवा

(घ) पूर्वक्त असा कोणताही हक्क, विशेषाधिकार, बंधन, दायित्व, शास्ती, जप्ती किंवा शिक्षा यांच्या संदर्भातील कोणतेही अन्वेषण, कायदेशीर कार्यवाही किंवा उपाययोजना ; आणि जणू काही हा अधिनियमित करण्यात आलेला नव्हता अशा प्रकारे असे कोणतेही अन्वेषण, कायदेशीर कार्यवाही किंवा उपाययोजना सुरु करता येईल, चालू ठेवता येईल किंवा अंमलात आणता येईल आणि अशी कोणतीही शास्ती, जप्ती आणि शिक्षा लावता येईल :

परंतु आणखी असे की, पूर्ववर्ती परंतुकाच्या अधीन राहून, निरसित अधिनियमान्वये करण्यात आलेली कोणतीही कृती किंवा कोणतीही कार्यवाही ही जेथवर या अधिनियमाच्या तरतुदीशी विसंगत नसेल तेथवर ती या अधिनियमाच्या तत्सम तरतुदीअन्वये करण्यात आलेली असल्याचे मानण्यात येईल आणि त्यानुसार, या अधिनियमान्वये करण्यात आलेल्या कोणत्याही कृतीद्वारे किंवा कार्यवाहीद्वारे निष्प्रभावित करण्यात येईपर्यंत ती अंमलात असल्याचे चालू राहील.

१९९८. (१) महाराष्ट्र सागरी मंडळ अध्यादेश, १९९६ हा याद्वारे निरसित करण्यात येत आहे.

पंज १९९६ चा
महाराष्ट्र
अध्यादेश

महाराष्ट्र अध्यादेश
अध्यादेश
क्र. १६. कार्यवाही ही या अधिनियमाच्या तत्सम तरतुदीअन्वये यथास्थिति, करण्यात आलेली गोष्ट किंवा छारण्याही यादे निराग
असल्याचे मानण्यात येईल.

क्रमांक १६
यादे निराग
व व्याकृती.